इण्डियन

थिऑसफिस्ट

नवम्बर 2023 | खण्ड 121 | अंक 11

विषय वस्तु

आगे का एक कदम — 5–9
प्रदीप एच. गोहिल

उद्घाटन भाषण — 10–12
राधा बर्नियर

राधा– एक व्यक्ति जिसका जीवन, विचार और कार्य पूरी तरह टी.एस. को समर्पित थे — 13–15
टिम बॉयड

राधा बर्नियर की अमिट स्मृतियां — 16–19
दीपा पाधी

राधा बर्नियर की स्मृतियां — 20–22
पी. कृष्णा

राधा बर्नियर – एक असामान्य जीवन — 23–25
लिंडा ओलीवियेरा

राधा बर्नियर – मानवीय पुनर्जागरण के लिये सेवा का जीवन काल — 26–28
नरेन्द्र एम शाह

राधा बर्नियर के 100वें जन्म वार्षिकी पर कुछ संस्मरण — 29–30
बार्बरा हर्बर्ट

संकल्प, प्रज्ञान और प्रेमः राधाजी में क्रियाशील — 31–36
पेड्रो ओलीवेयरा

राधाजी का स्मरण — 37–41
सोनल मुरली

राधाजी के साथ मेरे अनुभव और टी.एस. के लिये उनके योगदान — 42–46
केशवार दस्तूर

श्रीमती राधा बर्नियर 47—48
आर. रेवती
सीखने के क्षण – आनन्द लेने के क्षण 49—52
मंजू सुन्दरम
उत्तरदायित्व के साथ जीना 53—55
एस. सुन्दरम
समाचार और टिप्पणियां 56—66

सम्पादक प्रदीप एच गोहिल
अनुवादक श्याम सिंह गौतम

प्रदीप एच. गोहिल

आगे का एक कदम

डा0 राधा बर्नियर या राधा जी, जैसा कि लोग उनको स्नेह से कहते थे, को अधिकांश थिऑसफिस्ट जानते थे। फिर जब दि0 15 नवम्बर 2023 को उनका 100वां जन्म दिन मनानें के लिये, भारतीय सेक्शन विशेष रूप से इण्डियन थिऑसफिस्ट के नवम्बर 2023 के अंक को एक विशेशांक के रूप में प्रकाशित कर रहा है तो संक्षेप में उनका परिचय प्रस्तुत करना आवश्यक है। यह लगभग असम्भव है कि इस प्रकार के विशाल व्यक्तित्व को एक संपादकीय से परिचित कराया जा सके। फिर भी कार्य तो किया ही जाना है और एक भरसक प्रयास किया गया है कि इसे ठीक से किया जाये।

उन्होंनें एक थिऑसफिकल परिवार में अडयार, चेन्नै, थिऑसफिकल सोसाइटी के अंतर्राष्ट्रीय परिसर में जन्म लिया था। वे श्री नीलकण्ठ श्रीराम जो टी.एस. के पांचवें अंतर्राष्ट्रीय अध्यक्ष थे, और श्रीमती भागीरथी जो सोसाइटी की एक क्रियाशील सदस्य थीं, की पुत्री थीं। यद्यपि उनका जन्म एक ब्राह्मण का था, फिर भी उनका परिवार एकान्तवादी परम्पराओं पर नही चलता था, जैसा कि उस वर्ण में होता है किन्तु थिऑसफिकल आदर्श – ''सत्य से बड़ा कोई धर्म नहीं है।'' और ''विश्वबन्धुत्व'' पर चलता था।

राधा जी तीसरी पीढ़ी की थिऑसफिस्ट थीं। उनके पितामह, बन्धु ए. नीलकण्ठ शास्त्री थिऑसफिकल सोसाइटी के प्रारम्भिक सदस्य थे। वे जब पहली बार मद्रास आये थे तब से संगठन के संस्थापकों से, बहुत प्रभावित थे। बच्चे के रूप में उन्हें उस काल की अध्यक्ष डा0 ऐनी बेसैन्ट के साथ जान पहचान करने का अवसर प्राप्त हुआ, जिसकी स्मृति उनको बाद के वर्षों में भी थी। उनकी शिक्षा नेशनल गर्ल्स हाई स्कूल, जिसकी स्थापना ऐनी बेसैंट और अन्य थिऑसफिस्टों ने की थी, में हुई। डा0 जी.एस. अरण्डेल द्वारा बेसैन्ट मेमोरियल स्कूल के प्रारम्भ करने के बाद वे उस स्कूल में आयीं और वहां से सेकण्डरी स्कूल शिक्षा प्राप्त की। इसके पश्चात उन्होंनें बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय वाराणसी से संस्कृत में डिस्टिंक्शन के साथ परास्नातक की उपाधि प्राप्त की और विश्वविद्यालय में प्रथम स्थान प्राप्त किया। बाद में नागार्जुन विश्वविद्यालय नें 1984 में उनको डी लिट की मानद उपाधि से सम्मानित किया।

उन्होंनें क्लासिकल भारतीय नृत्य अपनी बुआ श्रीमती रुक्मिणी देवी अरण्डेल से फाइन आर्ट अकैडेमी कलाक्षेत्र में सीखा जो टी.एस. के अडयार परिसर के पास ही है। वे पहली विद्यार्थी थीं जिन्होंने कलाक्षेत्र से भरतनाट्यम् में स्नातक की उपाधि प्राप्त की और भारत के अनेक नगरों और विदेशों में नृत्य का प्रदर्शन किया। दि0 10 जुलाई 1948 में लॉर्ड माउंटबेटन, उनकी पत्नी और पंडित

नेहरू आदि की उपस्थिति में उन्होंनें भरतनाट्यम् का प्रदर्शन किया। उनके प्रदर्शन की मनोहर गतियों और तकनीकी पूर्णता से प्रत्येक दर्शक प्रभावित हुआ था। अनेक लोगों के द्वारा ऐसा प्रतीत किया गया कि यह आंतरिक शक्ति और सामर्थ्य की अभिव्यक्ति से ही सम्भव है।

1951 के प्रारम्भ में राधाजी नें रेमंड बर्नियर से विवाह कर लिया, जो एक स्विस फोटोग्राफर थे, जिन्होंनें उन्हें एक छोटी सी फिल्म में कैरियर बनाने में सहायता की थी। वे मंदिरों की कला के चित्र लेने के लिये 1942 में भारत आये थे राधा जी से युवावस्था में ही बीएचयू वाराणसी में मिले थे। उन्होंनें निर्देशक जीन रिनॉयर की एक क्लासिकल फिल्म, 'द रिवर' में मुख्य भूमिका निभायी थी, जो रयूमर गोल्डेन के उपन्यास पर आधारित थी। फिल्म का निर्माण पांच महीनों में पूरा हुआ था। फिल्म के प्रोड्यूसर केनेथ मैक एल्डॉनी फिल्म में राधा जी के होने के कारण कुछ टिप्पणियां कर रहे थे किन्तु उनका नृत्य देखने के बाद वे परिवर्तित हो गये थे। वे उनके लिये एक देवी की तरह थीं किन्तु उनकी पत्नी का मानना था कि देवी में ऐसा सुन्दर विनोद–भाव, इतनी निष्ठापूर्ण मेधा, और लोगों की इतनी अच्छी समझ, इतनी कम आयु में नहीं हो सकती है। उनके परिवार का संस्कृति के बारे में इतना विस्त्रित दृष्टिकोण था कि उनको फिल्म में अभिनय करनें की स्वीकृति दे दी थी। उनके विवाह के कुछ ही समय बाद बर्नियर युगुल नें रिनॉयर्स के साथ बेवेली हिल्स और न्यूयार्क की यात्रा की। उनकी फिल्म पब्लिक और अनेक भारतीय और विदेशी फिल्म निर्माताओं के द्वारा सराही गयी। उसके कुछ ही समय बाद उनका अलगाव हो गया। इस अवधि में वे अनेक प्रसिद्ध लोगों से मिलीं जैसे चार्लिस चैप्लिन, जिनके साथ उन्होंनें भोजन भी किया था। उन्हें हालीवुड की फिल्मों में कार्य करने के प्रस्ताव भी मिले थे किन्तु उन्होंने मना कर दिया था।

राधा जी नें 1935 में टीएस में सदस्यता ली थी। तब वे 12 वर्ष की थीं। वर्ष 1945 से 1951 के बीच जब वे बीएचयू में अध्ययन कर रहीं थीं, तब सोसाइटी की गतिविधियों में अधिक रुचि लेने लगीं थीं। उन्होंनें टीएस के राष्ट्रीय मुख्यालय में लाइब्रेरियन के पद पर सेवायें दीं। उन्होंनें यूथ लॉज और अडयार लॉज के अध्यक्ष के रूप में अनेक वर्षों तक कार्य किया है। और वे 1949 से 1953 तक मद्रास थिऑसफिकल फेडरेशन की अध्यक्ष रहीं। वर्ष 1954 से 1959 तक वे अडयार लाइब्रेरी ऐण्ड रिसर्च सेन्टर, जिसकी स्थापना कर्नल ऑल्काट नें की थी, की सहायक निर्देशक रहीं। वर्ष 1959 से 1980 तक वे उसकी निर्देशक रहीं। वे लाइब्रेरी की रिसर्च पत्रिका 'ब्रह्मविद्या' का संम्पादन करती थीं और उसके प्रकाशन की व्यवस्था करती थीं। उन्होंनें अनेक संस्कृत ग्रन्थों का का अंग्रेजी में अनुवाद किया, जैसे कि 'हठ योग प्रदीपिका'। 1960 में राधा जी का भारतीय सेक्शन टीएस की जनरल सचिव के रूप में चयन किया गया और उस पद पर 18 वर्षों तक रहीं। उस अवधि में उन्होंनें पूरे भारत में और विदेशों में थिऑसफिकल, दर्शनशास्त्र और अन्य सांस्कृतिक विषयों पर बहुत विस्तृत भाषण दिये।

उनके भारतीय सेक्शन की जनरल सचिव और बाद में अंतर्राष्ट्रीय सोसाइटी की अध्यक्ष के रूप में कार्य के अतिरिक्त, वे 1960 से सोसाइटी की जनरल काउंसिल की सदस्य रहीं, 1957 से एक्जीक्यूटिव कमेटी की सदस्य रहीं। वे अनेक थिऑसफिकल केन्द्रों, जैसे क्रोटोना इन्स्टीट्यूट ऑफ थिऑसफी, ओजाई, कैलीफोर्निया, यूएसए, सिडनी, आस्ट्रेलिया और थिऑसफिकल सेन्टर, नार्डेन, नीदरलैंड्स की प्रभारी थीं।

राधा जी का 4.7.1980 को टीएस के अंतर्राष्ट्रीय अध्यक्ष पद पर चुनाव हुआ। उन्होंने अपना पद भार दि0 17.7.1980 को ग्रहण किया। उनका इसी पद पर चार बार चुनाव हुआ। और 7वें अध्यक्ष के रूप में सबसे लम्बे समय 33 वर्षों तक अध्यक्ष रहने वाली व्यक्ति थीं। उन्होंने टीएस की विश्वकांग्रेस के अधिवेशनों की वर्ष 1982 में नैरोबी में, 1993 में ब्राजील में, 2001 में सिडनी में, और 2010 में रोम में अध्यक्षता की थी। वे पूरे संसार में प्रायः व्याख्यान देती थीं। उन्हें इंग्लैंड की थिऑसफिकल सोसाइटी द्वारा अतिसम्मानित ब्लैवैत्सकी व्याख्यान 1979 में 'थिऑसफी के प्रकाश में आत्म ज्ञान' विषय पर, 1988 में 'वैश्विक योग परम्परा' पर और 2005 में 'जीवन्त सत्य– टीएस का भविष्य' विषय पर व्याख्यान प्रस्तुत करनें का सम्मान दिया गया। थिऑसफी के बारे में उनका दृष्टिकोण यह था कि इसे केवल सैद्धांतिक आध्यात्मिक संस्था के रूप में नहीं लिया जाना चाहिये वरन मानवीय पुनर्जागरण के लिये एक साधन माना जाना चाहिये। थिऑसफी जो जीवन और मानव जीवन के बारे में विस्तृत और गहन परिप्रेक्ष्य प्रस्तुत करती है, उसका लक्ष्य लोगों को एक उचित परिवेश देना है ताकि लोगों के कार्य प्रज्ञायुक्त और परिवर्तनकारी प्रभाव ला सकें। यद्यपि वे मनुष्यों, जन्तुओं और पर्यावरण के दुखों को कम करने के लक्ष्य से, ऐसे आन्दोलनों में प्रायः व्यस्त रहती थीं जो बाहरी स्तर पर होते थे, फिर भी वे मानती थीं कि टीएस की भूमिका मुख्य रूप से आन्तरिक चुनौतियों की है न कि बाहरी। उन्होंने कहा है, ''मैं समझती हूं कि टीएस का कार्य आन्तरिक चुनौतियों की ओर है, क्योंकि बाहरी चुनौतियों में व्यस्त रहने की अपेक्षा उन्हें देखने और उनका समाधान निकालने का कहीं अधिक महत्व है। जब तक हम बाहरी प्रभावों में उलझे रहेंगे और समस्याओं के स्रोत की ओर नहीं देखेंगे, तब तक केवल अस्थाई, आंशिक, सतही समाधान मिल सकते हैं।'' वे प्रायः मनुष्यों में मूलभूत और आधारभूत परिवर्तन की आवश्यकता के बारे में व्याख्यान देती थीं। उन्होंनें कहा है, ''इसलिये मूलभूत परिवर्तन स्वार्थपरता, आत्म केन्द्रितता, आत्म चिन्तन, आदि से एक सहानुभूति, समरसता और एकत्व की ओर जिसमें लोगों के सुखदुख भी प्रतीत किये जायें और उन्हें भी यदि अधिक नहीं तो उतना ही महत्व दिया जाये, जितना अपने रखरखाव को देते हैं। मानव समाज तब तक नहीं बदल सकता है, जब तक कि प्रत्येक व्यक्ति न बदले और यह बदलाव वैश्विक दृष्टिकोण से होना चाहिये।''

राधा जी अनेक अन्य सांस्कृतिक, शैक्षिक और आध्यात्मिक गतिविधियों और संगठनों में रुचि

लेती थीं। वे वाराणसी के सांस्कृतिक संघ की सचिव थीं और ब्यूटी विदाउट क्रूएलिटी के कार्यों में सहयोग करती थीं, पशुओं के अधिकार, भारत आन्दोलन को सहायता देती थीं। उनकी अध्यक्षता और दिशानिर्देशों के आधार पर अडयार में सोशल वेलफयर सेंटर और एनीमल डिस्पेंसरी की गतिविधियां जीवन्त होती हैं। ऑल्काट हाई स्कूल जिसका अवसान हो रहा था, अब एक सुविधा–वंचित बच्चों के सर्वश्रेष्ठ विद्यालयों में से एक है। जब वे वाराणसी में थीं तब वे बेसैन्ट थिऑसफिकल स्कूल, ऐनी बेसैंट प्राइमरी स्कूल, वसन्त कन्या इंटर कालेज, वसन्त कन्या महाविद्यालय और लड़कियों के लिये होस्टेल आदि की व्यवस्था करती थीं। वे थिऑसफिकल आर्डर ऑफ सर्विस की हेड भी थीं जो थिऑसफी के विशेष आयामों को कार्यरूप देनें के लिये टीएस की सेवा शाखा है। सेवा सदा ही राधा जी के जीवन का एक महत्वपूर्ण भाग रहा है, वे विद्याालयों में पढ़ रहे सुविधाओं से वंचित विद्यार्थियों को सहायता करती रहती थीं, गरीबों को अवसर देती थीं, और पर्यावरणीय जागरूकता लाने और पशुओं के वेलफेयर के लिये कार्य करती रहती थीं, अपने ही धन से अनेक लोगों को सहायता करती थीं। एम 3 ब्रदर राधा बर्नियर, 330, ईस्टर्न सेक्शन ऑफ द ऑर्डर लि डॉय ह्यूमेन की एक सर्वाधिक शक्तिशाली ग्राउण्ड कमान्डर (एमपीजीसी) थीं। वर्श 2001 में ऑर्डर और उसके भविष्य की प्रोसीडिंग्स में डिसेग्रीमेंट के कारण उन्होंनें ईस्टर्न ऑर्डर ऑफ द इंटरनेशनल कोफ्रीमैसनरी की स्थापना की। वे ऑर्डर की मोस्ट इलस्टियस ग्राउण्ड मास्टर (एमआईजीएम) तथा 2001 से 2003 तक सुप्रीम काउन्सिल की अध्यक्ष थीं।

यह ध्यान में रखते हुये कि डा0 ऐनी बेसैंट का भारत के लिये कार्य भारत के नैतिक और आध्यात्मिक आधार बढ़ते हुये भौतिकता की धुन्ध और झंझावतों से बचा कर इसे पुनर्जीवित करनें के लक्ष्य की ओर था, राधाजी नें भारतीय युवा में उचित नागरिकता, जीविका के उचित साधन के मूल्यों की जागरूकता उत्पन्न करने के लिये न्यू लाइट फॉर इंडिया मूवमेंट 1968 में अपने नेतृत्व में प्रारम्भ किया। अपने जीवन पर्यंत भारत और विदेशों के अनेक धार्मिक और राजनैतिक नायकों से मिलती रहीं। शिकागो में हुये पार्लियामेंट ऑफ वर्ल्ड रिलीजन्स में वे 'सेल्फ ट्रान्सफार्मेशन और फ्यूचर ऑफ रिलीजन्स' पर बोलीं। वे अपनी अध्यक्षता के काल में तेन्जिन ग्यात्सो, 14वें दलाई लामा से अनेक बार मिलीं। वे जे. कृष्णमूर्ति की भी निकट सहयोगी रहीं। वे एक दूसरे को तब से जानते थे जब वे अडयार में अपनी किशोरावस्था में रहते थे। उस समय वे छोटी बच्ची थीं। एक बार कृष्ण जी नें उन्हें जन्म दिन पर एक तीन पहिये की साइकिल भेंट की थी और उनको उसे चलानें का प्रयास करते देख कर आनन्दित हुये थे। राधा जी कृष्णमूर्ति फाउण्डेशन इंडिया की ट्रस्टी थीं। उन्होंनें इंदिरा गांधी और पुपुल जयकर से अच्छे सम्बन्ध बना कर रखे थे। वे प्रायः मिलते थे और नवंबर 1, 1984 को राधा जी श्रीमती गांधी के साथ लंच लेने के लिये दिल्ली को प्रस्थान करने ही वाली थीं कि 31 अक्टूबर 1984 को उनकी हत्या हो गयी।

राधा जी 'द थियॉसफिस्ट' का सम्पादन करती थीं और सम्पादकीय और अन्य अनेक लेख लिखती थीं। उनके लगभग 960 लेखों का प्रकाशन हुआ। इनके अतिरिक्त उन्होंनें अनेक पुस्तकें, लेख और पत्रक लिखे। पुस्तकों के शीर्शकों में से कुछ हैं 'द वे ऑफ सेल्फ नॉलेज', 'नो अदर पाथ टू गो', 'ट्रुथ, ब्यूटी और अच्छाई', 'ह्यूमन रिजनरेशन', 'मास्टर्स और गुरु – स्टेजेज़ ऑन द पाथ', 'द वर्ल्ड एराउण्ड अस', 'ऑन द वाच टॉवर एबाउट द वर्क ऑफ द टीएस', 'थिऑसफी फॉर एवरी वन' और अनेक अन्य। वे 31 अक्टूबर को उच्च लोकों को चली गयीं। उनकी अस्थियों के एक भाग को थिऑसफिकल अध्यक्षों के बारे में परम्परा के अनुसार 'गार्डेन ऑफ रिमेंबरेंस' को भेज दिया गया, और दूसरे भाग को 1 नवम्बर की संध्या को बंगाल की खाड़ी में प्रवाहित कर दिया गया।

जब वे 28 वर्ष की थीं, तब राधा जी के एक मित्र नें उनसे पूछा था कि ''तुम जीवन से क्या चाहती हो? क्या तुम विवाह करके परिवार बनाना चाहती हो, तुम एक नर्तकी के रूप में कैरियर चाहती हो या तुम एक शिक्षक बनना चाहती हो? मैं समझता हूं कि जो कुछ भी चाहो बन सकती हो। वास्तव में तुम्हारी अभिलाषा क्या है?'' उन्होंनें सीधे तौर पर उत्तर दिया था और सीधेसाधे शब्दों में उन्होंने कहा, 'मेरी अभिलाषा है कि मैं आत्म–अनुशासन की कला को पूर्णता दूं।' यदि हम यह करने का निष्ठापूर्ण प्रयास करें तो यह हमारे जीवन का एक आगे का कदम होगा।

> जब विश्वबन्धुत्व और सभी प्राणियों के लिये करुणा हमारे जीवन का नियम बन जायेगा, जब आत्म अनुशासन शरीर, मन और पूरी प्रकृति को शुद्ध करनें लगता है, और हमारा दैनिक जीवन से अहिंसा के सर्वोच्च सिद्धांत की अभिव्यक्ति होनें लगेगी, तब कृपा अवतरित होगी। किसी को कृपा मांगने की आवश्यकता नहीं होगी, यह उचित प्रकार के जीवनों के ऊपर बरसती है।
>
> राधा बर्नियर
> 'ऑन द वाच टावर'
> द थिऑसफिस्ट अक्टूबर 2004

राधा बर्नियर

उद्घाटन भाषण

सब से पहले मैं कहना चाहूंगी कि यह मेरे लिये बहुत प्रसन्नता की बात है कि मैं अनेक वर्षों तक भारतीय सेक्शन के कार्यों का अनुभव प्राप्त करनें के बाद यहां फिर से आयी हूं। बिना प्रसन्नता की इस अभिव्यक्ति के मैं ठीक नहीं करूंगी। हम लोग यहां एक ऐसे विषय पर विचार करने के लिये मिल रहे हैं जो हम में से प्रत्येक के सामने है। हम इसे किसी ऐसे विषय की भांति नहीं लेते हैं जो सामान्य रूप से धुंधला हो, क्योंकि यह एक स्वयं को छोड़ कर सभी पर लागू होता है, क्योंकि हम व्यक्तिगत रूप से संघर्ष करने के लिये स्वतंत्र हैं, जब कि बाकी संसार का उद्देश्य समस्या खड़ी करता है। यह अधिकांश लोगों की प्रवृत्ति है।

सब से पहले, संघर्ष की उत्पत्ति कहां होती है? ऐसा लगता है कि लोग अनेक कारणों से संघर्ष करते हैं। किन्तु क्या वास्तव में अनेक कारण हैं? या कारण केवल एक है जिसे हम 'अविद्या' या 'स्वार्थपरता' कहते हैं। वास्तव में दोनो एक ही हैं। या फिर लोगों के बीच, प्रकृति और मनुष्य के बीच और प्रत्येक वस्तु के बीच जो हम संसार में पाते हैं संघर्ष के विभिन्न कारण हैं।

क्या मनुष्य में ऐसी कामना है कि उसकी अपनी ही इच्छायें पूर्ण हों। और क्या मनुष्य में ऐसी कामना नहीं है कि उसके आस पास का क्षेत्र लगभग वही करे जिसे वह उचित समझता है। लगभग सभी लोगों का यही विचार है। संघर्ष उत्पन्न होते हैं क्योकि उसके बारे में धारणायें भिन्न भिन्न हैं। पहले हम उस संघर्ष की बात लेते हैं जो प्रत्येक व्यक्ति को प्रभावित करता है। संघर्ष जो तब भी होता रहता है जब व्यक्ति जागरूक भी नहीं है कि संघर्ष है। यह सच्चाई ही उसे उसके लिये कठिन बनाती है कि जब संघर्ष प्रकट हो तो वह अपने को संघर्ष से बचा सके। इसलिये क्या हम में से प्रत्येक अपने अन्तर में जा कर देख सकता है कि क्या वे सोचते हैं कि संघर्षमय स्थितियां संघर्षों का अन्त कर सकती हैं? जिसे हम सोचते हैं कि वह संघर्ष के लिये तत्पर है, तब उसका विरोध करके क्या संघर्ष को समाप्त किया जा सकता है, इत्यादि। इस सम्बन्ध में किसी निर्णय पर आने के पहले हमें अपने अन्दर बहुत सावधानी से देखना होगा।

हम देखते हैं कि इस समय संसार में क्या हो रहा है। प्रत्येक व्यक्ति विश्वास करता है या यह चाहता है कि अन्य लोग यह विश्वास करें कि वह शांति की ओर है। शांति के लिये ही दूसरे राज्यों पर आक्रमण होता है क्योंकि दूसरा व्यक्ति, दूसरे लोग, दूसरी सरकार वस्तुओं को ठीक से व्यवस्थित नहीं

1. भारतीय सेक्शन, थिऑसफिकल सोसाइटी द्वारा वाराणसी में 5 से 7 मार्च 2010 की अवधि में आयोजित 'शांति और संघर्श ' पर अधिवेशन में प्रदत्त व्याख्यान।

कर पा रही है। किन्तु यदि यह मेरे अधीन होता तो बात अलग होती। इसलिये यह एक कारण है कि हम कल्पना करते हैं कि हम यदि हम इसके विरोध में खड़े हो जायें तो हम समस्याओं को समाप्त कर सकते हैं। हम किसी विशेश व्यक्ति या समूह की बात नहीं करना चाहते हैं, किन्तु हम एक स्पष्ट प्रकरण ले सकते हैं, जिसमें लगता है कि एक घटक के द्वारा संघर्ष का सृजन किया गया और उसे संचालित किया गया जो संघर्ष चाहता था। संघर्ष यूनाइटेड स्टेट्स के द्वारा बनाया गया जो उनकी कल्पना से अधिक विस्त्रित समस्या बन गयी।

युद्ध क्यों निर्मित किया गया? अधिकांश लोग समझते हैं कि वह स्वार्थपूर्ण कारणों से था। वे किसी परिमाण में गैस या पेट्रोल अपने नियंत्रण में लेना चाहते थे, किन्तु ऐसा कहना नहीं चाहते थे, किन्तु ऐसा कहना चाहते थे जो अधिक नैतिक और उचित लगे। और वास्तव में पूरा प्रकरण ही एक असफलता को प्राप्त हुआ। इस प्रकार हम में से अनेक छोटी या बड़ी समस्या में प्रवेश करते हैं जैसा ईराक और मध्य एशिया में हुआ और ऐसे चिह्न छोड़ गये जिन्हें आसानी से मिटाया नहीं जा सकता है।

संघर्ष का कारण वही नहीं होता है जो बताया जाता है। अन्य लोगों को जो कारण दिया जाता है वह वास्तविकता जिसे वे स्वयं जानते हैं, से कुछ अलग होता है। वह कुछ भी हो वही संघर्ष है। इसलिये हमें जो करना है, हमारे मन में जो संघर्ष है उसके बारे में सावधानी से विचार करना है, क्योंकि वही बाहरी संघर्ष को जन्म देता है।

मैं समझती हूं कि यह विषय बहुत अंतरंगता से शांति से सम्बन्धित है। शांति के बारे में बहुत बातें की जाती हैं, और लोग कहते हैं कि वे शांति चाहते हैं। पर क्या वास्तव में शांति चाहते हैं? वे परिस्थितियां जो उनके लिये उपयुक्त हैं उन्हें वे, उन्हीं को वे शांति कहते हैं। शांति ऐसा विषय है जिसके बारे में बातें करना आसान है किन्तु उसे अपने लिये प्राप्त करना कठिन है। यह सतही रूप से शांति ला सके, किन्तु ऐसी शांति है जो संघर्षों को असंभव कर सके।

मुझे भगवान बुद्ध की कहानी याद आ रही है जब वे अंगुलीमाल से मिले थे। अंगुलीमाल एक उग्र प्रकार का व्यक्ति था। वह जानता था कि समस्याओं को लोगों के सिर काट कर कैसे हल करना, जो विरोधी का महत्वपूर्ण अंग होता है। और वह उसकी एक अंगुली काट कर अपनी माला में जोड़ लेता था जो यह संकेत करता था कि उसने कितने लोगों को अब तक मारा है। जब उसने सुना कि बुद्ध किसी जंगल में जा रहे थे, तो उसने सोचा कि यह एक आश्चर्य जनक अवसर है और वह उनके निकट गया। बुद्ध अकेले बचे थे, क्योंकि दूसरे भिक्षु भाग गये थे। अंगुलीमाल वहां पहुंच गया और देखा कि उनकी वापसी बहुत शांतिपूर्ण और प्रसन्न मुद्रा में थी जो उनके अन्तर से आ रही थी। तब उसनें बुद्ध से बात करनी प्रारम्भ की और वे अधिकाधिक प्रभावित हुये कि जीवन के बारे में उसके दृष्टिकोण गलत थे और बुद्ध जानते थे कि उचित क्या था। उसे विश्वास हो गया कि उनके आन्तरिक

ज्ञान नें उन्हें अन्य लोगों से भिन्न बना दिया है। यह एक ऐसी कहानी है जो हम सब के लिये रुचिकर है। और वह बुद्ध का शिष्य बन गया।

क्या हम वास्तव में उन गहन दुखों का हल जानते हैं जो विभिन्न प्रकार के संघर्ष उत्पन्न करते हैं? मैं विस्तार में नहीं जाऊंगी, किन्तु संघर्ष एक दूसरे से अलग लगते हैं किन्तु सब के पीछे स्रोत एक ही है। यदि हम उस स्रोत को खोज लें, केवल सैद्धान्तिक बातें न करें, उसे वास्तव में खोज लें तो हम प्रत्येक प्रकार के संघर्षों का अंत कर चुके होंगे। सच्चे आध्यात्मिक व्यक्तियों में कोई संघर्ष नहीं होता है। ऐसे अन्य लोग हो सकते हैं जिनका उनके आदर्शो के साथ संघर्ष हो सकता है, और जो चाहते हों कि उनको परिवर्तित करना है, किन्तु उनको परिवर्तित होने की आवश्यकता नहीं है।

इस प्रकार की शांति कौन सी है जिसे कोई बाधित नहीं कर सकता है? हम सब सतही शांति जानते हैं। संघर्ष या आभासित संघर्ष से इसका अंत हो सकता है, जिसके माध्यम से हम सोचते हैं कि कोई संघर्ष नहीं रहेगा। किन्तु जो शान्ति हम प्रतीत करते हैं वह ऊपरी होती है, संघर्ष की संभावना को आने की अनुमति देती है, जब कि वह शांति जो सांसारिक उद्देश्यों से मुक्त होती है वह स्वतंत्र होती है। हमारे पास ऑर्डर ऑफ सर्विस है और ऐसे लोग हैं जो सोचते हैं कि यदि केवल यह सब स्थानों में फैल जाय तो संसार में कोई समस्या नहीं बचेगी। यह अनेक रूपों में संसार के अनेक भागों में रही है और वहां समस्यायें अभी भी हैं। किन्तु जब बुद्ध विचरण करते हैं और भिन्न भिन्न प्रकार के लोगों से मिलते हैं तो जो भी संघर्ष होता है वह शांत हो जाता है।

संघर्षों से वास्तविक मुक्ति क्या है? कब यह लोगों पर निर्भर नहीं करती है? एक अकेला व्यक्ति इतना शांति से इतना पूर्ण हो सकता है कि वह प्रत्येक परिस्थिति में शांत रहता है, उसके लिये सारी समस्याओं का अंत हो जाता है। उस प्रकार की शांति पाना कठिन है, किन्तु समय समय पर यह अस्तित्व में थी। जीसस क्राइस्ट के कुछ शब्द ऐसा संकेत करते थे। अनेक वस्तुओं का श्रेय उनको दिया जाता है जैसे कि उन लोगों का प्रकरण जो अनेक शताब्दियों के पहले रहे थे, किन्तु उनके कुछ शब्दों का वैश्विक मूल्य है। वह जो उन लोगों के लिये दयालु था, वे जो शांति का अर्थ भी नहीं जानते, उन्होंनें सारे संसार के लोगों को प्रभावित किया है। बुद्ध, क्राइस्ट ऐसे लोगों के उदाहरण हैं जिन्होंनें संसार को यह दिखाया है कि जीवन का ऐसा मार्ग भी है जो अलग प्रकार का है, जो इतना शांति, प्रेम और अच्छाइयों से पूर्ण है कि अन्य कुछ महत्व नहीं रखता है। इसीलिये वेदान्तियों नें संसार की विविधिताओं को असत्य कहा है क्योंकि वे एक दिन समाप्त होती हैं। वह जो समाप्त नहीं होता है वह स्थायी और सत्य है। इस प्रकार हमें विचार करना है कि संघर्ष क्या है, शांति क्या है, और वह क्या है जो अन्त तक बना रहता है जब अन्य सब समाप्त हो जाता है।

(इण्डियन थिऑसफिस्ट, जुलाई 2011)

टिम बॉयड

राधा– एक व्यक्ति जिसका जीवन, विचार और कार्य पूरी तरह टी.एस. को समर्पित थे

राधा बर्नियर पर मेरी पहली दृष्टि न्यूयार्क में 1975 में पड़ी थी जहां वे सेन्टेनियल वर्ल्ड कान्फरेंस में आयी थीं। वे मंच पर पूरे विश्व से आये अनेक विशिष्ट थिऑसफिकल नायकों के साथ बैठी हुयी थीं। उनके बारे में मेरी स्मृति एक सुडौल, इकहरी बदन की गम्भीर महिला के रूप में है। उस समय वे पिछले 15 वर्षों से भारतीय टी.एस. की महासचिव थीं। यद्यपि उन्होंनें एकत्रित सदस्यों को सम्बोधित अपना भाषण प्रस्तुत किया था, मुझे याद नहीं है कि उन्होंनें क्या कहा था। यह एक बहुत व्यस्त कार्यक्रम था फिर भी मुझे उनसे हुयी मुलाकात की याद है।

शिकागो से युवा थिआसफिस्टों का एक समूह बिल लारेंस, जो लम्बे समय से टीएस के सदस्य थे और हम सब के दिशा निर्देशक थे, के साथ कांग्रेस में भाग लेने के लिये आया था। बिल लारेंस उनके आस पास बनी थिऑसफिकल कम्युनिटी के केन्द्र थे। बैंक्वेट के बाद बिल नें अपने और हम सब को राधा से परिचित कराया। हम सब उनके आस पास एकत्रित हो गये और कुछ कार्यों के बारे में जो हम लोग शिकागो में कर रहे थे बताया। उस भेंट बारे में मुझे याद है कि वे कितनी फोकस्ड और जागरूक रहती थीं। यह एक भीड़ वाला सभागार था। और अनेक लोग राधा का ध्यान आकर्षित करके उनसे कुछ कहने का प्रयास कर रहे थे, किन्तु उनकी सुनने की गुणवत्ता ऐसी थी जैसे कि कमरे में वह अकेला ही था। अनेक वर्षों बाद मैनें इसी प्रकार की जागरूकता दलाई लामा से पहली भेंट पर पायी – एक शब्दहीन वार्तालाप जिसमें आप को पूरी तरह उत्तर मिलता है। हमनें उनको अपने यहां शिकागो आनें का आमंत्रण दिया। यद्यपि वह कभी नहीं हुआ। यद्यपि मैंने इसके लिये कुछ किया नहीं किन्तु मैं जानता था कि आगे के वर्षों में हमारे मार्ग आपस में गुंथे हुये हैं।

चार वर्ष बाद, टीएस के अंतर्राष्ट्रीय अध्यक्ष जॉन कोट्स की असमय मृत्यु के बाद, राधा का उस पद पर चुनाव हुआ। अध्यक्ष के रूप में उन्होंने पूरे संसार में यात्रा की और टीएस अमेरिका मे प्रायः आती रहीं। हमारा समूह प्रत्येक बार शिकागो से ह्वीटन, इलिनॉयस के सबर्ब में टीएसए मुख्यालय की एक घण्टे की ड्राइव पर उनका वक्तव्य सुनने और उन्हें शुभकामनायें देने जाता था। ज्यों ज्यों समय बीतता रहा और टीएस में मेरी जिम्मेदारियां बढ़ती रहीं, हमारे साथ उनसे मिलने जाने वाले लोगों की संख्या घटती रही। फिर भी हमारा उनसे व्यक्तिगत वार्तालाप कभी नहीं हुआ। एक टीएस की हेड के रूप में ही नहीं, वरन टीएस से प्रत्येक सम्बन्धित और सेरमोनियल समूह की हेड के रूप में वे मेरे लिये एक आदर्श रहीं और उनसे आमने सामने बातचीत का विचार मेरे मन में कभी नहीं आया। इसके

अतिरिक्त, अपने पब्लिक व्यक्तित्व वे किसी सीमा तक अलगत्व पसन्द करती थीं, मुझको ऐसा लगा कि यह जानबूझ कर नहीं था और न यह ऐसी शीतलता थी जो कुछ लोगों के अलगत्व का कारण होती है। ऐसा भाव नहीं था कि वह इस 'सब से ऊपर' हैं या 'सबसे अधिक अच्छी' है। यह केवल उनके व्यक्तित्व की प्रकृति थी।

मैं ऐसा व्यक्ति नहीं था कि खड़े होकर पब्लिक व्याख्यानों में प्रश्न पूछूं। कभी कभी केवल इतना कह देता था कि 'क्या आप इसे और अधिक विस्तार से बता सकते हैं?' जब कुछ विशेष महत्वपूर्ण लगता था और उसके बारे में पूरी जानकारी लेने की इच्छा होती थी। किन्तु एक ऐसा समय आया जब मेरे पास उनके लिये एक प्रश्न था। मैं कुछ संवेदनशील और व्यक्तिगत था, अपने ही मार्ग से सम्बन्धित रहता था। एक बार और वे यूएसए की यात्रा पर थीं और कुछ दिनों के लिये ऑल्काट मुख्यालय में ठहरी थीं। मै उनके पास यह पूछने के लिये गया कि क्या उनके पास मेरी और उनकी मुलाकात के लिये कुछ समय है? वे मान गयीं और मुझसे उनके कमरे में आकर मिलने के लिये आमंत्रित किया।

मैं निर्धारित समय पर पहुंच गया और मुझे ग्राउंड फ्लोर पर उनके कमरे की ओर भेजा गया। मैने खटखटाया और मुझे अन्दर आमंत्रित किया गया। उस समय वे लम्बे समय से यात्रा कर रही थीं। वे कैलीफोर्निया के क्रोटोना इंस्टीट्यूट का दौरा कर चुकीं थीं और टीएसए के वार्षिक अधिवेशन में भाग लेने के बाद वहां एक रिट्रीट संचालित कर चुकीं थीं। जब मैं वहां पहुंचा तब वे विश्राम कर के उठी ही थीं, जो बहुत आवश्यक था। राधा की यह आदत थी कि वे बालों को पीछे की ओर जूड़े के रूप में बांधती थीं। मैनें उनको सदा इसी रूप में देखा था। जब मैं अन्दर गया तो पाया कि उनका जूड़ा नहीं था और उनके बाल लम्बी चोटी के रूप में गुंथे हुये थे तो मुझे आश्चर्य हुआ। हमारे प्रारम्भिक वार्तालाप, जो हाल ही में समाप्त हुये अधिवेशन और एक दो और प्रकरणों के बारे में थे, मैने अपनी उनसे बैठक के बारे में बात उठाई। मैने परिस्थिति की व्याख्या की और उन्होंने एक दो प्रश्न पूंछे। 10 मिनट से भी कम समय में, उन्होंने मेरी चिन्ता समाप्त कर दी अैर बताया कि वह समस्या आध्यात्मिक मार्ग में कोई महत्व नहीं रखती है। तब उन्होंने अपने जीवन और टीएस के परिवेश के बारे में बताना प्रारम्भ किया। उन्होंने अपने जीवन मार्ग की अनियोजित प्रकृति के बारे में बताया, और टीएस में आनें के पीछे ऐसी परिस्थितियों के बारे में बताया जिनका पहले से कोई अनुमान नहीं था। वे कैसे हाई स्कूल से शीघ्र ग्रैजुएशन में जाने के कारण एक वर्ष विश्वविद्यालय की परीक्षा में नहीं बैठ पायीं। और किसी अन्य निर्देश की कमी के कारण उन्होंनें अपनी आंट (बुआ) रुक्मिणी देवी के आमंत्रण पर भरतनाट्यम् नृत्य सीखा, और पाया कि वे उसमें में भी उत्कृष्ट सिद्ध हुयीं, जब कि उनका नृत्य की ओर जाने की कोई मंशा नहीं थी। और यह कि फ्रेन्च निर्देशक जीन रिनॉयड ने उनको 'द रिवर' में प्रदर्शित किया। उनका

ऐसे समय में टीएस का महासचिव बनना जब सेक्शन को शक्तिशाली फाइनेंसियल विधा की आवश्यकता थी, और यह कि बिना किसी पहले के बजटिंग और वित्त व्यवसाय के अनुभव के उन्होंनें पाया कि इस कार्य में भी वे उत्कृष्ट सिद्ध हुयीं। मेरी सबसे अच्छी स्मृति के अनुसार उनसे मेरा वार्तालाप मध्य 1990 के दशक में हुआ था, किन्तु तब भी वे टीएस में अपने उत्तराधिकारी के बारे में विचार करती थीं। उन्होंनें कहा कि यदि उन्होंनें किसी की अपनें उत्तराधिकारी के रूप में पहचान कर ली तो वे खुशी खुशी अध्यक्ष की भूमिका त्याग देंगी। यद्यपि हमारा वार्तालाप अपनी उंचाइयों पर था, मेरे आने के लगभग डेढ़ घण्टे बाद मुझे उनका इतना अधिक समय लेने के बारे में खेद होने लगा। हम लोगों नें भविष्य में पुनः मिलने का वादा करके विदा ली। वर्षों बाद वह समय आना था जब मैं अंतर्राष्टीय सोसाइटी के कार्यो में क्रियाशील होता, और अडयार की ओर यात्रा करता। इस प्रकार हमारे सम्पर्क समय समय पर होते थे, जब उनकी यात्रा उन्हें यूएस लाती थी। पूरी तरह से देखा जाये तो हमारे अकेले में वार्तालाप संख्या में कुछ ही थे, किन्तु सरलता और गहराई जिससे वे घटित हुये मेरे लिये बहुत अर्थपूर्ण थे। एक बात स्पष्ट थी कि उनका जीवन, विचार और कार्य पूरी तरह टीएस को समर्पित थे। उन्होंनें सोसाइटी के अध्यक्ष के रूप में जितने लम्बे समय तक सेवा की वह अब तक के टीएस इतिहास में सबसे अधिक था। वे एक ऐसी व्यक्ति थीं जिन्होंनें सनातन धर्म की शिक्षाओं को गहनता और व्यक्तिगत रूप से आत्मसात किया था। यह स्पष्ट था कि उनका कृष्णमूर्ति के विचारों के साथ समायोजन और समझ थी, किन्तु वह विधि जिनसे वे अभिव्यक्त करती थीं वह भिन्न थी। कृष्णमूर्ति की तरह वे वह क्षोभ को स्वीकार कर लेती थीं जो श्रोताओं की समझ के बाहर होने के कारण क्षोभ उत्पन्न करती थीं। उनको पूरे संसार में प्रेम, सम्मान, और भक्ति की जाती है, फिर भी अनेक प्रकार से उनका जीवन अकेला था – वास्तव में ऐसे लोगों का रास्ता जो निष्ठा पूर्वक मार्ग पर चलते हैं।

> थिऑसफिस्टों के रूप में हमें एकीकृत हो कर रहना है और सब के हित के लिये कार्य करना है, और मैं आशा करती हूं कि हमें इस दिशा में सफलता मिलेगी। मुझे आशा है कि हम मानवता को निस्वार्थता का मार्ग दिखायेंगे, ताकि मानवता उस ओर जाने के लिये प्रेरित हो, वह मार्ग जो उन्हें बेड़ियों से मुक्त करवायेगा और एक महान जीवन की ओर ले जायेगा।
>
> राधा बर्नियर
> वाराणसी, 19.10.2008

दीपा पाधी

राधा बर्नियर की अमिट स्मृतियां

राधा बर्नियर, थिऑसफिकल सोसाइटी की 7वीं अंतर्राष्ट्रीय अध्यक्ष, जब की आयु 28 वर्ष थी तब उनसे उनके एक मित्र ने पूछा था कि वे जीवन में क्या बनना चाहती हैं? उनका त्वरित उत्तर था कि, ''मेरी अभिलाषा है कि मैं आत्म अनुशासन की कला में पूर्णता प्राप्त करूं'' वे अच्छी तरह जानती थीं कि यदि व्यक्ति में परिवर्तन नहीं आया तो समाज नहीं बदल सकता है। यह उनकी अभिलाषा और मिशन थे जिसे उन्होंने प्राप्त किया, और बाद में वही मानवता के लिये उनकी शिक्षा बन गयी। सच्ची सीख आंतरिक परिवर्तन, विकास और समझ ला सकता है।

उनका थिऑसफी के बारे में दृष्टिकोण बहुत व्यावहारिक था और वे विश्वास करती थीं कि थिऑसफी केवल विद्वानों और शिक्षित लोगों के लिये नहीं है। यह प्रत्येक व्यक्ति के लिये है। यह अनपढ़ महिलाओं के लिये उतनी ही महत्वपूर्ण है जितना कि यह उच्च पदों पर आसीन तर्कबुद्धि सम्पन्न व्यक्तियों के लिये। इसका सरल कारण है कि थिऑसफी एक समरसता पूर्ण जीवन जीने की कला है।

राधा जी अपने दैनिक जीवन में अपनी गतिविधियों पर मनन करनें पर जोर देती थीं न केवल अन्य लोगों के प्रति वरन आस पास के अन्य जीव–रूपों के साथ भी। उनके अनुसार यह समरसता, उचित और सम्यक जीवन यापन में सहायक होता है और दूसरे जीव–रूपों के प्रति ध्यान और करुणापूर्ण प्रवृत्ति विकसित करनें में सहायता करता है। उनके शब्द उद्धृत करें तो ''एक विनम्र संसार बनाने के लिये कोमल विचार भी होने चाहिये।'' यह मुझे एक घटना की याद दिलाता है जब राधा जी ने उत्कल फेडरेशन की वार्षिक अधिवेशन में भाग लेने के लिये 2003 में भुवनेश्वर आयी थीं। वे मंच पर बैठी हुयी थीं और बैठक प्रारम्भ होने ही वाली थी, एक सदस्य उनको फूलों का बुके देने के लिये उनके पास आया और उनको बुके भेंट किया। जिस प्रकार उसनें बुके को पकड़ कर रखा था वह राधाजी को अच्छा नहीं लगा। उसनें फूलों को दबा रखा था और वे क्षत विक्षत हो रहे थे। उन्होंने उसको कहा कि यदि बुके भेंट करना हो तो पहले यह सीखना चाहिये कि उनका हथलन (हैंडलिंग) कोमलता से किस प्रकार किया जाये। फूल प्रकृति की सबसे कोमल और सुन्दर कृति है।

क्योंकि मैं आगे की पंक्ति में बैठी थी इसलिये मैंने राधा जी के शब्द सुन लिये थे और मैं कुछ समय के लिये खो गयी और उनके एक लेख की पंक्ति याद आ गयी, ''सुन्दरता के प्रति जागरूकता, सत्य की मात्र पहचान कर लेने से कोई लेना देना नहीं है। हम प्रकृति के बारे में सारे सत्य जानते हों, किन्तु उसकी सुन्दरता के बारे में जागरूक होने के लिये हमें दूसरे स्तर पर जागरूक होना चाहिये।

यह भी सम्भव है कि एक बगीचे की ओर देखें और उसकी सुन्दरता के बारे में कुछ भी न देखें क्यों कि मन किसी संघर्ष या निवेश के बारे में व्यस्त है। जब विचारों और चित्रों का सम्मिश्रण मस्तिष्क से गुजर रहा होता है तो चेतना बहुत कम हो जाती है।''

यह मनुष्य की संवेदनशीलता, सौंदर्यबोध और सूक्ष्म विवरणों की प्रेक्षण शक्ति को परावर्तित करता है।

एक अन्य अवसर पर हम लोग साथ साथ चल रहे थे। वे अपने विचार साझा कर रही थीं और अधिकांश लोगों के जीवन में नियमितता की कमी के संबन्ध में अपनी चिन्ता व्यक्त कर रही थीं। उन्होंनें कहा, ''व्यक्ति को जानना चाहिये कि मैक्रोकाज्म – बृहद्संसार – जिसके पीछे नियमितता और समरसता का पैटर्न है और उसके पीछे एक चैतन्य डिजाइन और मंशा है। इसलिये हमें चाहिये कि इस नियमितता को माइक्रो स्तर अपनी सारी गतिविधियों में इस बनाये रखना चाहिये, चाहे वे बाहरी हों या आन्तरिक हों। ताकि कोई अस्तव्यस्तता और विषमता न होने पाये।''

उनके लेख 'इन ट्यून विद द यूनीवर्स' में उन्होंनें निम्नलिखित परिच्छेद लिखा है, जो सारे जीवन के एकत्व के बारे में उनके विचार दर्शाता है –

''लगाव का विषय मानवता के लिये जीवन्त महत्व का है। अन्य लोगों से, वातावरण से और अपने से विषम रहने से हम आपसी सम्बन्धों और अपनी प्रगति को रोकते हैं। जो क्षति हम अपने आप को पहुचाते हैं उसे हम दूसरों के प्रति होने वाली क्षति से अलग नहीं कर सकते हैं। हम सर्वस्व के लिये उत्तरदायी हैं। वे जो अन्दर से ठीक से समरस और निष्ठापूर्ण हैं वे जहां भी जाते हैं और जो भी करते हैं उसमें समरसता और खुशी बिखेरते हैं। दूसरी ओर जब अंतर में विषमता होती है तो यह बाहर भी विषमता फैलाती है। सारी विषमता दृष्टि को बंधन में डालती है और मानव प्रगति को रोकती है'' राधाजी के इसी भुवनेश्वर यात्रा के समय एक असाधारण घटना घटी। हमारे अपराह्न सत्र के तुरंत बाद एक गुड स्टैंडिंग वाला टी.एस. सदस्य अपने तीन वर्ष के बच्चे, जो किसी एक्यूट न्यूरो–फिजिकल बीमारी से पीड़ित था, को लेकर राधाजी के पास आशीर्वाद के लिये ले कर आया था। उसका सिर असाधारण रूप से बड़ा हो गया था और चेहरा सूझ गया था। वह बोल नहीं पा रहा था, केवल भारी सी आवाज निकाल पा रहा था। राधा जी नें उसकी ओर प्रेम और करुणा के भाव से देखा। जब वे बच्चे की ओर देख रही थीं उनका चेहरा दिव्य प्रकाश से चमक रहा था। मैं उनको देख रहा था। न उन्होंनें उसके सिर पर हाथ रखा और न कुछ कहा, केवल कुछ मिनटों तक आंख से आंख मिला कर घूरती रहीं। बाद में वह परिवार अपने घर चला गया और उसी शाम को बच्चे का देहान्त हो गया। स्पष्ट है कि उसको भौतिक कष्ट से मुक्ति मिली।

अधिकांश सदस्य एक घटना को नहीं जानते होंगें जो राधाजी के पशुओं के प्रति दया और करुणा के बारे में बताती है। वर्ष 1970 के दशक की बात है जब राधाजी और उनके एक अतिथि कन्वेन्शन की एक बैठक में भाग लेने के लिये जा रहे थे। अचानक एक अवारा कुत्ता रोड क्रॉस करते समय उनकी कार से टकरा गया। तुरंत राधाजी नें कार को रोक दिया, कार के बाहर कूद गयीं, और रोड में झुक गयीं और कुत्ते के ऊपर प्यार भरी कोमलता से हाथ फेरने लगीं। यद्यपि बैठक में श्रोताओं की भारी भीड़ उनकी प्रतीक्षा कर रही थी, किन्तु जब तक पशु चिकित्सा दल नहीं आ गया कुत्ते की सुश्रूसा करती रहीं। यह मुझे डायना डनिंघम चैपोटिन, उस समय टीओएस की अंतर्राष्टीय सचिव, ने बताया था जो इस घटना की प्रत्यक्षदर्शी थीं। श्राधाजी मेरे पिता लेट डा0 डा0 आर.सी. रथ, उत्कल थिऑसफिकल फेडरेशन के संस्थापक थे के प्रति बहुत रुचि थी। वर्श 1995 में वे एक कान्फरेंस में भाग लेने के लिये भुवनेश्वर आयीं थीं। मेरे पिता उस समय अंतिम स्टेज पर थे। उन्होंनें मेरे पिता की स्थिति के बारे में सुना तो उनसे मिलने की इच्छा प्रकट की। वह 86 वर्ष के थे और वे कैथेटर और नैजल फीडिंग टयूब पर थे। उस समय तक उनके बोलने की शक्ति समाप्त हो गयी थी, किन्तु वे पूरी तरह से चैतन्य थे। उन्हें देख कर उनका चेहरा खिला और वे कोई ज्योमेट्रिकल आकार हवा में बना कर कुछ कहने का प्रयास कर रहे थे। राधाजी उनको उस दशा में देख कर बहुत दुखी हो गयीं और अपनी भावनायें हमारे भाई से कहा जो एक डॉक्टर थे। वे एक डॉक्टर होने के नाते उनके जीवन को आगे बढ़ाने का अपना पूरा प्रयास कर रहे थे। वे हम सब को यह समझाने का प्रयास कर रही थीं कि यह अंधविश्वास है कि जीवन एक ही शरीर में किसी भी मूल्य पर बनाये रखना चाहिये। जीवन को कुछ दिनों या महीनों उस अपघटित होते शरीर में बनाये रखना अत्मा के विकास के दृष्टिकोण से कोई महत्व नहीं रखता है। पुनर्जन्म की प्रक्रिया को विविधि प्रकार के अनुभवों से गुजरना होता है जो व्यक्ति को उनके आन्तरिक अस्तित्व के अमृतत्व पर विश्वास दृढ़ करता है। किसी को किसी के कर्मो पर दखल नहीं देना चाहिये। बुद्धिमान लोग प्रकृति के नियमों का अनुपालन करते हैं क्योंकि वैश्विक नियम वही करते हैं जो सब के लिये अच्छा होता है। यहां मुझे कर्म पर राधा जी के एक लेख की स्मृति हो रही है, ''जब कोई खास सम्बन्ध विशेश लगता है और केवल रूप जो जीवन को अभिव्यक्त करते हैं वे अलग हो जाते हैं। जीवन को आकाश की तरह किसी भी प्रकार से अलग नहीं कर सकते हैं। हम एक बाक्स को यहां और एक फूलदान को दूसरे स्थान पर भले रख दें पर आकश जो उनके अंदर और बाहर समाया हुआ है उस पर कोई अंतर नहीं आता है, भले ही पात्र टूट जायें। जीवन का अलगावहीन होना एक आधारभूत सत्य है।'' (द वर्ल्ड एराउण्ड अस, पृष्ठ 230)

राधा जी बहुत सरल जीवन जीती थीं। वे अपनी भौतिक रूपरंग के बारे में चैतन्य नहीं रहती थीं। एक बार उन्होंनें कहा था कि अपने शरीर, उसके स्वास्थ्य और उसकी सुन्दरता के बारे में सनक

हो जाना भौतिकता का एक रूप है, जैसे नये युग की आध्यात्मिकता को 'आध्यात्मिक भौतिकता' कहा जाता है।

उनके जन्म वर्ष के शताब्दी उत्सव पर, हम सभी को उनकी अमिट स्मृति से संप्रेरित होना चाहिये और अपने में परिवर्तन लाने का प्रयास करना चाहिये जो परिणाम स्वरूप संसार के परिवर्तन में सहायक होगा।

> थिऑसफिकल सोसाइटी एक छोटी सी सोसाइटी है। किन्तु यद्यपि हम छोटे हैं, हम संसार को पुनर्जीवित करने में सहायता कर सकते हैं; हमें इसे लोगों के संज्ञान में लाने का प्रयास करना चाहिये; यदि आवश्यक लगे तो बार बार, ताकि गुणों को विकसित करनें के लिये एक क्रान्तिकारी प्रक्रिया प्रारम्भ हो सके और लोग अधिक मेधावी और कम स्वार्थी हो सकें। यदि हमारे मन में यह विचार है, और हम इसके बारे में साथ साथ और व्यक्तिगत रूप से भी विचार करते हैं तो हम थिऑसफिकल सोसाइटी में नया जीवन ला सकते हैं। पुराने विचारों को बार बार दोहराने के स्थान पर इन शाश्वत सिद्धांतों और उन विधियों जिनके माध्यम से हम इनको आज के लोगों तक ले जा सकते हैं, पर विचार करें।
>
> राधा बर्नियर
> 'ऑन द वाच टॉवर'
> द थिऑसफिस्ट, मई 2009

पी. कृष्णा

राधा बर्नियर की स्मृतियां

मुझसे अनुरोध किया गया है मैं अपनी चचेरी बहन के बारे में अपनी स्मृतियां लिखूं। वे मेरे पिता जी के बड़े भाई की बेटी थीं और मुझसे 14 वर्ष बड़ी थीं। इसलिये हम लोगों का बचपन में कोई अंतरंगता नहीं हुयी। वे अडयार में रहती थीं जब कि मेरे माता पिता इन्दौर में रहते थे। छुट्टियों में हम लोग उनसे अडयार में मिलते थे। वे रुक्मिणी देवी से भरत नाट्यम सीखती थीं, जो मेरे पिता की छोटी बहन थीं और जो मि0 अरण्डेल से विवाहित थीं। वे बहुत अच्छी नृत्यांगना के रूप में जानी जाती थीं और हम उनके नृत्य प्रदर्शन देखनें के इच्छुक रहते थे। हम उनके बारे में कुछ और तब जान पाये जब वे इन्दौर आयीं और हम लोगों के साथ रहीं, जब वे बीएचयू से एमए संस्कृत की परीक्षा के लिये तैयारी कर रही थीं। उन्होंने परीक्षा दे रहे अन्य विद्यार्थियों से अधिक अच्छा किया था।

मुझे बहुत आश्चर्य हुआ था जब मुझे पता लगा था कि उन्होंनें 'द रिवर' नाम की फिल्म में अभिनय किया था, और प्रसिद्ध पत्रिका 'फिल्म फेयर' के मुख पुष्ठ पर उनका फोटो देख कर बहुत हर्षित हुआ था। मैंने वह फिल्म देखी थी और उसमें उनका डांस देख कर मुझे लगा था कि वह बहुत उत्कृष्ट था, किन्तु उनकी एक्टिंग अपेक्षाकृत सामान्य थी। कुछ वर्षों बाद हम लोगों नें रेमंड बर्नियर के साथ उनके विवाह की बात सुनी, जो फ्रेंच मूल के स्विस नागरिक थे और एक व्यवसायिक फोटोग्राफर थे। वे भारत के नागरिक हो गये थे और भारत से प्रभावित होकर हिन्दू धर्म स्वीकार कर लिया था। किन्तु कुछ वर्षों के बाद वे यूरोप वापस चले गये थे और राधा अपना अडयार का कार्य छोड़ कर जाना नहीं चाह रहीं थीं। कुछ वर्षों तक वे एक दूसरे के पास आते जाते रहे और धीरे धीरे उनकी रुचियां अलग होने के कारण दूरियां बढ़ती रहीं और अंत में उनका अलगाव हो गया। वे मित्र के रूप में एक दूसरे से अलग हुयी थीं बिना एक दूसरे को कानूनन डाइवर्स किये। उस समय तक राधा नें स्विस नागरिकता ले ली थी।

वे अनेक वर्षों तक टीएस के इंडियन सेक्शन की जनरल सेक्रेटरी रहीं। वही वह समय था जब हम दोनो एक दूसरे के निकट आये। वे मुझे टीएस वाराणसी मे वक्तव्य देने के लिये आमंत्रित करती थीं। और हम समय समय पर उनको खानें पर अपने घर आमंत्रित करते थे। हम दोनों को ही कृष्णजी की शिक्षाओं के प्रति बहुत रुचि थी, और उनके वचनों पर हम लम्बी चर्चायें करते रहते थे। बाद में जब उन्होंने अडयार में पूरे समय का कार्य का भार लिया और टीएस की अध्यक्ष हों गयीं, वे मुझे दिसम्बर में टीएस कन्वेन्शन में और 'स्कूल ऑफ विज्डम' में बोलने के लिये बुलाती थीं। मैं 'द थिऑसफिस्ट' का एक रेगुलर कन्ट्रीब्यूटर बन गया। हम लोग कान्फरेंसों के लिये टी.एस. के केन्द्रों जैसे कैलीफोर्निया,

---

2. ट्रस्टी, कृष्णामूर्ति फाउण्डेशन इंडिया, राज घाट फोर्ट, वाराणसी 221001

नार्डेन, नैरोबी, स्विटजरलैंड, रोम और कोस्टारिका आदि स्थानों को साथ साथ जाया करते थे। इनमें से कुछ व्याख्यान रेकार्ड किये गये थे जिनको टीपीएच अडयार ने पुस्तक के रूप में प्रकाशित किया था। (1–2)

राधा नें कष्णमूर्ति को बचपन से ही जाना था, इसलिये मैनें उनसे जे. कृष्णमूर्ति के बारे में पूछताछ की। यह इंटरव्यू रेकार्ड किया गया जिसे बाद की कृश्णमूर्ति के बारे में प्रकाशित पुस्तक (3) में अध्याय 7 के रूप में सम्मिलित किया गया। वर्ष 2008 में टीएस वाराणसी में 'कृष्णमूर्ति और थिऑसफिकल सोसाइटी' पर हुये एक पब्लिक वार्ता में, मैने उनसे पूछा कि टीएस और कृष्णमूर्ति फाउण्डेशन एक क्यों नहीं हो जाते हैं जब कि दोनो का अन्तिम उद्देश्य सत्य है? उन्होंने बहुत गहन उत्तर दिया था, ''मैं समझती हूं कि हम यह नहीं समझते हैं कि थिऑसफी क्या है? और यह भी नहीं जानते हैं कि कष्णमूर्ति किस सम्बन्ध में बातें करते हैं? यहीं से कठिनाई प्रारम्भ होती है!'' (3 – पृष्ठ 240) यह वास्तव में वह सत्य है जो मानव जीवन के सारे विभाजन का कारण है। वे सभी अविद्या के परिणाम हैं। यह माया के रूप में मन नें बनाया है, जिसे बाद में अपनी भ्रांति/मत/निर्णय के रूप में जोड़ लेते हैं। एक सीखनें को तत्पर मन किसी मत/निर्णय से आसक्ति नहीं रखता है; वरन यह गहन ध्यान से उसे देखता है और उसके बारे में सत्य को अज्ञात के रूप में प्रस्तुत करते हुये चिंतन करता है।

समय समय पर राधाजी जे. कृष्णमूर्ति के साथ हुये वार्तालाप और अनुभवों के आधार पर हमें लघुकथायें या किस्से भेजा करती थीं। इन्हें मैनें अपनी पुस्तक (3) में सम्मिलित किया है। लोगों ने उनसे पूछा था कि वे कृष्णमूर्ति फाउण्डेशन की ट्रस्टी और टीएस के अध्यक्ष दोनो हो कर उनके बीच समझौता कैसे करती हैं। उन्होंनें उत्तर दिया कि ''मुझे ऐसा कुछ नहीं मिला है जिसमें समझौता की आवश्यकता हो''। एक अवसर पर उन्होंनें यह भी कहा था कि ऐसे लोग भी हैं जो थिऑसफिकल सोसाइटी के सदस्य नहीं हैं किन्तु थिऑसाफिस्ट हैं। और ऐसे लोग भी हैं जो सोसाइटी के सदस्य है और ऐसे भी लोग हैं जो सोसाइटी के सदस्य होते हैं किन्तु थिऑसफिस्ट नहीं होते हैं। उनके अनुसार एक थिऑसफिस्ट वह होता है जो अलगत्वरहित हो और अपने को पूरे संसार के साथ देखता है। उस दृष्टिकोण से कृष्णमूर्ति एक सच्चे थिऑसफिस्ट थे। थिऑसफी प्रज्ञा धर्म है और कृष्णमूर्ति जीवन पर्यन्त यही संकेत करते रहे कि व्यक्ति प्रज्ञा में कैसे विकसित हो सकता है। यदि कोई अलगाव देखता है तो यह उसी की संकुचित मानसिकता के कारण है। सारे जीवन वे थिऑसफी और कृष्णजी के प्रति समर्पित रहीं। उन्होंनें 1985 में कृष्णजी को चर्चा के लिये टीएस वाराणसी में आमंत्रित किया। और इसके पहले उन्होंनें टीएस अडयार के द्वार में प्रवेश करने के लिये आमंत्रित किया था जहां वे पिछले 48 वर्षों से नहीं गये थे। अपने भाषणों और लेखों में वे प्रायः कृष्णमूर्ति को उद्धरित करती थीं और कृष्णमूर्ति की शिक्षाओं के प्रति पूरे टीएस संसार में पुनः रुचि उत्पन्न की। मेरे 1986 में कृष्णमूर्ति फाउण्डेशन का ट्रस्टी बनने के बाद मैं उनसे अधिक बार मिलने लगा था और जब भी वसन्त विहार में

बैठकों और अधिवेशनों के लिये जाता था तब नियमित रूप से अडयार में उनके घर जाता था। राधा मुझे अपने साथ रहने के लिये आमंत्रित करती थीं और मैं उनके घर पर अनेक थिऑसफिस्टों और पब्लिक महानुभावों से मिलता था। मेरे लिये यह महान विशेषाधिकार था कि मैं ध्यान से उनके भाषणों को सुनता था और उनके साथ वार्तालाप और बातचीत से बहुत कुछ सीखता था।

संदर्भ–

1. पी. कृष्णा, *एजूकेशन, साइंस ऐण्ड स्पिरिचुअलिटी,* टी पी एच, अडयार 2000.
2. पी. कृष्णा, *राइट लिविंग इन माडर्न सोसाइटी,* टी पी एच, अडयार 1999.
3. पी. कृष्णा, *अ जेवेल ऑन अ सिलवर प्लैटर,* लूलू.कॉम 2015; पिलग्रिम्स वाराणसी 2015.

———————————————

हमें वास्तविक और अवास्तविक के बीच विवेक करने का अभ्यास करना चाहिये। इसके लिये बहुत ही स्पष्ट मेधायुक्त समझ की आवश्यकता है। एक मन जो सामान्य रूप से स्पष्ट और तार्किक नहीं है वह आध्यात्मिक प्रकरणों में अचानक ग्रहणशील नहीं हो सकता है। इसलिये सदा हमें विचारों में यथासम्भव तार्किक और ग्रहणशील होना चाहिये।

राधा बर्नियर
'काज़ ऑफ सारो'
द थिऑसफिस्ट, सितम्बर 2013

लिण्डा ओलीवियेरा

राधा बर्नियर – एक असामान्य जीवन

कुछ व्यक्ति जो टीएस के संपर्क में आते हैं, इसके साथ कुछ समय तक रहते हैं और उसके बाद अनेक कारणों से दूसरी खोज में लग जाते हैं। दूसरी ओर श्रीमती राधा बर्नियर या राधाजी, उन लोगों में से एक थीं जिनमें सोसाइटी के कार्यों की जड़ें बहुत गहराई तक गयीं थीं। प्रत्येक व्यक्ति जो थिऑसफिस्टों के परिवारों में जन्म लेता है, वह थिऑसफी के कार्य को अपने जीवन का केन्द्र नहीं बनाता है, किन्तु उन्होंने ऐसा ही किया। थिऑसफिकल सोसाइटी और उससे सम्बन्धित कार्यों के प्रति उनका समर्पण पूरे लम्बे जीवन में दृढ़ स्थित रहा। जब हम यूनाइटेड स्टेट के प्रवास में थी, मुझे राधा जी के साथ 1981 में एक संघ स्थापित करनें का विशेषाधिकार प्राप्त हुआ था। वर्ष 1998 में मेरे अडयार में पहले आगमन पर, अंतर्राष्ट्रीय मुख्यालय परिसर के विभिन्न स्थानों को दिखानें के लिये उन्होंनें हमे लगभग एक घण्टे का समय देने की कृपा की थी। इस स्थान के लिये गहरी आध्यात्मिक और भौतिक भावनायें स्पष्ट दिखाई पड़ती थीं।

उसके बाद हमारे मार्ग अनेक अवसरों पर आपस में टकराये जिनका परिणाम यह हुआ कि हमें उनके कार्यो में उन्हें सहायता करने के लिये अडयार में रहने का आमंत्रण मिला। इसका परिणाम यह हुआ कि सोसाइटी के अधिकारियों की सहायता करनें के लिये मुझे टीएस के पवित्र केन्द्र पर 2009 से 2011 तक निवास करनें का अवसर मिला।

अनेकों के लिये श्रीमती बर्नियर केवल उनकी अध्यक्ष नहीं थीं बल्कि एक आध्यात्मिक नायिका भी थीं। कोई उनकी शैक्षिक योग्यताओं, टीएस कार्य से सम्बन्धित अनेक गतिविधियों जिनसे वे संलग्न थीं और मानद निर्देशालय जो उनके संरक्षण में कर दिया गया था की सूची बना सकता है। उनकी प्रतिष्ठा जो उन्होंनें भारत के उच्च समूह और ऐसे लोगों में जिनको उन्होंने सहायता दी थी में बनाई थी, उसके बारे में भी कहा जा सकता है। फिर भी ये वस्तुयें किसी प्रकार सतही थीं अपेक्षाकृत इसके कि वे कौन थीं और जिस भी विधा में उन्होंने कदम रखा उसे साथ साथ विशेष रूप से प्रभावित करती जाती रहीं।

अंतर्राष्ट्रीय अध्यक्ष के कार्यालय में, राधा जी नें यह बहुत स्पष्ट कर दिया था कि वे चाहती हैं कि प्रत्येक कार्य ठीक से हो। उनको देख कर, यह गुणवत्ता स्पष्ट दिखाई देती थी। जब वे कोई कार्य करती थीं या किसी अभिलेख की जांच कर रही होती थीं तो जल्दबाजी नहीं करती थीं। इसके विपरीत वे उस क्षण बहुत सावधानी से उसी पर ध्यान केन्द्रित रखती थीं। इस प्रकार वे ध्यानमग्नता के गुण का जो ध्यान की प्रक्रिया को प्रारम्भ करने के लिये आवश्यक है, का उदाहरण प्रस्तुत करती थीं।

कभी कभी उनके व्यक्तित्व को समझ पाना आसान नहीं होता था, उन्होंने वर्षों से अपने

विरोधी बना लिये थे। फिर भी, श्रीमती बर्नियर के आस पास एक शक्तिशाली, गहरे संतोष और पवित्रता का आभामंडल रहता था। यह प्रतीत करने के लिये किसी को बहुत संवेदन शील होनें या उससे प्रभावित होनें की आवश्यकता नहीं थी। कभी कभी यह अपने आप यह कृपा की लहर के रूप में निकलती थी। यह उनके कार्यालय को भी समेट लेती थी। उनकी चमकदार आंखें और गहरी नजर, कोई भी जान जाता था कि वे दूसरों का हृदय पढ़ लेती थीं।

राधा जी की अध्यक्षता के काल का मुख्य विचार बिन्दु उनकी पुस्तक *'ह्यूमन रिजनरेशन'* में ध्वनित होता है, क्योंकि मनुष्य की सोच में आमूल परिवर्तन की आवश्यकता के बारे में उनकी धारणा बहुत गहन थी। मानवीय प्रकरणों के ज्वार पर उनकी गहन रुचि थी, साथ में जीवन के बारे में उनकी रुचि और अन्तर्दृष्टि बहुत विस्त्रित थी, जो उनके संकलन, *'द वर्ल्ड एराउण्ड अस'* में प्रचुर रूप से प्रदर्शित होती है। उसमें जो विषय प्रक्षेपित किये गये हैं वे हैं – विकास, सभ्यता, प्रगति, नैतिकता, धर्म, जीने की कला, अमानवीयता, हिंसा, प्रेम, स्वतंत्रता और बन्धुत्व। यह स्पष्ट होता है कि उन्होंने संसार के प्रकरणों को जो उचित और महत्वपूर्ण को बिना किसी हिचकाहट के एक विस्त्रित दृष्टिकोण से देखती थीं और उस पर प्रतिक्रिया करती थीं। मुझे उनके द्वारा संचालित अनेक रिट्रीट में भाग लेने का सौभाग्य प्राप्त हुआ था, जिनमें अनेक स्रोतों से प्रेरणा प्राप्त करनें की ही नहीं, जीवन पर अद्वितीय और विशेष अंतर्दृष्टि की क्षमता प्रदर्शित होती थी। इन अवधियों में वे संसार में शक्तिशाली प्रभाव को संचालित करनें की नलिका बन जाती थीं।

राधा जी नें अनेक बार अपने भाषणों और लेखों में हृदय और तर्कबुद्धि का ऐसा सम्मिश्रण प्रदर्शित किया है जो अपेक्षाकृत दुर्लभ है। जैसे एचपीबी के स्वर्ण सोपान में आये 'अनवील्ड आध्यात्मिक परसेप्शन' के बारे में उन्होंनें बताया कि उसमें मेधा अंतर्निहित है। अनेक अवसरों पर यह उच्च प्रकार के प्रज्ञान के रूप में प्रकट होता है, जो अपने आप को अनेक प्रकार से बताता है। अर्थपूर्ण जीवन जीने में क्या सम्मिलित होता है, इसके बारे में उनका विश्वास स्पष्ट था। खुली दृष्टि से खोज की दिशा में गम्भीर मनन की भावना को उन्होंनें टीएस में सदा जीवित रखा।

अनेक प्रकार की भौतिकताओं की बहुलता के इस कठिन युग में, उनका एक अनुकरणीय जीवन था, जहां तक उनके आत्म निग्रह का प्रश्न था, फिर भी, एक आध्यात्मिक पूर्णता के साथ जिसका आनन्द बहुत कम लोग ले पाते हैं, जो ऐसे प्रेम से अभिभूत था जो व्यक्तित्व से परे था।

उनके शब्दों में,

'' केवल तब जब सभी प्राणियों के लिये प्रेम के साथ स्पष्टता होगी तब आध्यात्म की खोज प्रारम्भ होगी। खोज कि आध्यात्मिक जीवन जीनें में क्या आध्यात्मिक है? क्यों कि जीवन के महान सत्य बाहरी सत्य नहीं हैं, वरन चेतना के आयाम हैं। समरसता, प्रेम, अच्छाई और शांति को वैसे नहीं जाना जा

सकता है जैसे कोई कार या पत्थर को जानता है, वस्तुयें जिनके आकार, बनावट, और अन्य गुणधर्म समझे और याद किये जा सकते हैं। प्रेम इस प्रकार का अपने से बाहर का कोई विषय नहीं है। यह अपने स्वयं की प्रकृति में होना चाहिये, क्यों कि प्रेम को जानने की एक ही विधि है – प्रेम की प्रतीति करना और प्रेम युक्त हो जाना। (*नो अदर पाथ टू गो*)

———————————————

तब, यह वह चुनौती है जिसे जीवन प्रस्तुत करता है – कि मनुष्य को चैतन्यता से उसके संदेशों को समझना और प्राप्त करना सीखना होगा। ऐसा कहा गया है कि वह विस्त्रित रेखाचित्र जो प्रकृति बना रही है, में अचैतन्य पूर्णता चैतन्य पूर्णता में परिवर्तित होती है और चैतन्य पूर्णता से उसे आगे की चैतन्य पूर्णता की ओर गति करना है। चैतन्य पूर्णता तब आती है जब हम उसकी स्वयं की डिजाइन के साथ समरसता से जीना सीख लेते हैं। जीवन की मांग है कि मनुष्य का मन अपनी इच्छाओं, प्रतिक्रियाओं, स्फुरणाओं और संवेगों को त्याग दे, ताकि वह शक्ति जो अधिक महान है अनावरित हो कर अपने को प्रदर्शित कर सके, मनुष्य के संकल्प के अनुसार नहीं किन्तु प्रकृति के दिव्य नियमों और संकल्प के अनुपालन से।

राधा बर्नियर
'द चैलेंज ऑफ लाइफ'

नरेन्द्र एम शाह

राधा बर्नियर – मानव पुनर्जागरण की सेवा में संपूर्ण जीवन

श्रीमती राधा बर्नियर जिनका जन्म 15 नबम्बर 1923 को हुआ था एक वास्तविक असामान्य व्यक्तित्व थीं। उनके असाधारण गुण और मानवीय अस्तित्व के अन्यान्य क्षेत्रों में प्रतिभायें, विशेष रूप से भौतिक की अपेक्षा सूक्ष्म क्षेत्रों में, नें उन्हें करुणा और दयायुक्त अत्यधिक मेधावी, सुसंस्कृत और आत्म सम्मान युक्त, व्यक्ति के रूप में अलग खड़ा कर दिया था। यदि कोई, उनके तर्कबुद्धीय, कलात्मक, पर्यावरणीय, वैज्ञानिक, आध्यात्मिक, दार्शनिक, सांस्कृतिक या ललित कला के कार्यक्रम में भाग लेता था तो उनमें दीर्घकालिक प्रभाव होते थे। वास्तव में उनका जन्म और लालन पालन अडयार में ही हुआ, वे 5वें अंतर्राष्ट्रीय अध्यक्ष एन. श्रीराम की पुत्री थीं, जिन्होंनें उस महान व्यक्तित्व के पुष्पित होनें में बहुत योगदान दिया होगा। कुछ ही लोगों को थिऑसफी और उसके मुख्यालय के समरस और प्रशांत वातावरण से राधा जी की तरह पूरे जीवन प्रभावित होनें के अवसर प्राप्त हुआ होगा – वे जन्म से लेकर 31 अक्टूबर 2013 तक जब उन्होंनें अंतिम सांस ली वहीं रही थीं।

राधा बर्नियर नें बनारस हिन्दू विश्व विद्यालय से संस्कृत में परास्नातक की उपाधि प्राप्त की थी। जिसके कारण वे अडयार लाइब्रेरी एवम् रिसर्च सेंटर की निर्देशक बनीं जहां पर उन्होंने 1959 से 1979 की अवधि में 20 वर्षों तक आश्चर्यजनक रिसर्च और प्रकाशन के कार्यों का पर्यवेक्षण किया। 1984 में नागार्जुन विश्वविद्यालय नें उन्हें उनके शिक्षा के उत्थान और मानवीय अधिकारों के उन्नयन के लिये 'डी लिट' की मानद उपाधि प्रदान की। तीस वर्षों तक अनेक पदों पर सोसाइटी की सेवा करने के बाद 57 वर्ष की आयु में वे थिऑसफिकल सोसाइटी की 7वीं अध्यक्ष चुनी गयीं।

वे एक गर्म हृदय की व्यक्ति थीं, और केवल सोसाइटी के सदस्यों को ही नहीं बल्कि उन सभी को जो उनके संपर्क में आते थे को अपना प्रिय बनाया। उनका थिऑसफी के प्रसार और उसके उत्थान के लिये किये गये कार्य चमत्कार पूर्ण थे और वे सबसे अधिक समय के लिये अंतर्राष्ट्रीय अध्यक्ष के रूप में कार्य करने वाली महिला बनीं।

वे पूर्व और मध्य अफ्रीकन सेक्शन पांच बार आयीं और 1982 में सातवीं वर्ल्ड कांग्रेस में भाग लेने के लिये नैरोबी आयीं, तब मैं उनसे पहली बार मिला और उसके बाद उनसे वार्तालाप करनें और उनके साथ यात्रा करने के हमें अनेक अवसर प्राप्त हुये। उसी पृष्ठभूमि के आधार पर मैं उनके जीवन और कार्य के बारे में कुछ शब्द लिख रहा हूं।

राधा जी के पूर्व और मध्य अफ्रीका के पांच दौरों के समय उनकी विचारों की स्पष्टता और दृष्टि की गहराई और एक चतुर्मुखी तर्कबुद्धि नें एक स्थायी छाप छोड़ी थी, न केवल सदस्यों में बल्कि

सभी अन्य लोगों – पत्रकार, वैज्ञानिक, दार्शनिक, प्रोफेसरों, धार्मिक नायकों, समाज–सुधारकों, पूछताछ करनें वालों –में और सभी को जिन्हें उनसे वार्तालाप या उनके विभिन्न विषयों पर भाशण सुनने का अवसर मिला था।

उनको अपनी धारणाओं या उनके कार्यों के समुचित होनें पर कभी संदेह नहीं रहता था। उनके एक केनिया दौरे पर उन्होंनें पूर्व और मध्य अफ्रीका सेक्शन के अधिवेशन का उद्घाटन कर के 'की नोट भाषण' दिया ही था कि उनको अडयार से एक संदेश प्राप्त हुआ कि प्रदेश प्राधिकारी अडयार भूमि सम्पत्ति के एक भाग से हाईवे निकालने के लिये कुछ भूमि अधिग्रहीत करना चाहते हैं। उन्होंनें अपने सारे आयोजित भाषण कार्यक्रमों को रद्द कर दिया और अगले दिन ही अडयार के लिये उड़ान पकड़ ली। उन्होंनें प्राधिकारियों से शक्तिशाली तर्क वितर्क किये और राज्य की उस विवादास्पद योजना को जो टीएस अडयार भूमि से गुजरने वाली थी को रोक लिया।

शक्तिशाली मन और दृढ़ संकल्प व्यक्ति, राधाजी का जीवन सच्ची और स्वार्थहीन सेवाओं का एक सुन्दर उदाहरण था। उन्होंने पूरा जीवन मानव कल्याण और मुक्ति के लक्ष्य की ओर लगा दिया। कभी अपने स्वयं के बारे में विचार नहीं किया। उनकी पुस्तक 'ह्यूमन रिजनरेशन' नैतिकता और चरित्र उत्थान के माध्यम से 'मानव कल्याण और परिवर्तन' पर उनके विशेष जोर को स्पष्टता से दर्शाता है। जो लोग मानवीय पुनरुत्थान और परिवर्तन के लक्ष्य के लिये गम्भीरता से कार्य करना चाहते हैं, उनके लिये यह बहुत सुन्दर निर्देशिका है। वे एक गम्भीर विचारक थीं, गहराई से विचार करती थीं और खुले हृदय से खोज को प्रोत्साहन देती थीं। उनके भाषण और लेखन प्रज्ञान और अंतर्दृश्टि से भरपूर रहते थे। वे खुले मन और शुद्ध हृदय के सुन्दर सम्मिश्रण प्रदर्शित करते थे – जिसका परिणाम लगभग एक इन्ट्यूसिव स्थिति होती थी। 30 वर्षों से अधिक तक उन्होंनें प्रत्येक महीनें 'द थिऑसफिस्ट' के 'ऑन द वाच टावर' स्तम्भ के अंतर्गत लेख लिखे थे। इन लेखों की सरलता और स्पश्टता इतनी थी कि यदि कोई औसत पाठक भी इसे पढ़ना प्रारम्भ कर दे तो वह उसे अंत तक पढ़े बिना नहीं रह सकता था। ये लेख, यद्यपि बहुत गहन हैं, इतनी रोचक शैली और समय से सम्बन्धित मुद्दों पर लिखे गये हैं कि हमारे सेक्शन के अधिकांश सदस्य 'द थिऑसफिस्ट' के अगले अंक की प्रतीक्षा करते रहते हैं। हमारी लॉज बैठकों में ये लेख प्रायः विवेचन का विषय होते थे।

वे जो भी कार्य करती थीं उसमें बहुत गहनता होती थीं, राधाजी समय और साधनों के उचित प्रयोग की महान समर्थक थीं। वे दूसरों के बारे में बहुत जागरूक रहती थीं, और कभी बेकार की बातचीत नहीं करती थीं। वे अपनी रुचियों और गतिविधियों में एक नृत्यांगना, संस्कृत विद, गहन विचारक, धारा प्रवाह वक्ता, बहुमुखी लेखक, परिवेश विद, स्पश्ट व्यवस्थापक, और समाज सुधारक के रूप में विलक्षण व्यक्तित्व थीं। अपनी वार्ताओं में वे गहनता से करुणा, पुनर्जागरण, जीवन की

एकात्मता, परिवेश आदि पर स्पष्ट उदाहरण और सांख्यिकी के साथ बोलती थीं।

उनमें वंचित वर्ग के लिये सहानुभूति थी। और वे बहुत पिछड़े प्राणियों, विशेष रूप से पशुओं के प्रति बहुत संवेदनशील थीं। वे 'जीवन की एकात्मता' के बारे में चैतन्यता से जागरूक रहती थीं। परिणाम स्वरूप वे प्रकृति की महान प्रशंसक और मित्र रही हैं। अपने एक लेख में उन्होंने लिखा है, ''जैसे ही कोई व्यक्ति गहराई से अपनी चेतना में प्रवेश करता है और समझता है कि प्रकृति कैसे कार्य करती है, तो अटूट पूर्णता का सत्य और सौन्दर्य मानव चेतना को प्रकाशित करता है''। यह उनकी पुस्तक, 'सत्य, सुन्दर और शिव' में बहुत स्पष्ट दिया है। वे श्रोताओं को आसानी से धनात्मक कार्यों के बारे में प्रभावित और उन्मुख कर देती थीं। अपने लेखों में वे पशुओं के प्रति कठोरता और क्रूरता का घोर विरोध करती थीं।

वे सदा बहुत शांत, सावधान और शांतिपूर्ण रहती थीं – अधिकतर ध्यान मग्न स्थिति में रहती थीं। उनकी आंतरिक शांति सदा उनके मुख से दिखाई पड़ती थी। संयोग से, उनकी मृत्यु पर एम.पी. सिंघल हमारे तत्कालीन उपाध्यक्ष नें लिखा था, ''हेडक्वार्टर्स हाल में पड़े हुये शरीर में उनका मुस्कराता हुआ मुख शांति परावर्तित कर रहा था, जैसे वे गहन निद्रा या ध्यान में हों''।

उनकी जन्म शताब्दी के अवसर पर हम उनके आश्चर्यजनक कार्यों जो उन्होंने अपने जीवन काल में थिऑसफी के लिये किया है, पर ध्यान देते हैं और उसकी प्रशंसा करते हैं। मास्टर्स की सेवा में उनका अनुकरणीय जीवन एक उदाहरण है कि एक थिऑसफिकल कार्यकर्ता कैसा होना चाहिये।

बार्बरा हर्बर्ट

राधा बर्नियर के 100वें जन्म वार्षिकी पर कुछ संस्मरण

हमारी पूर्व अध्यक्ष, श्रीमती राधा बर्नियर पूरे संसार के बहुत सारे थिऑसफिस्टों के द्वारा, व्यक्तिगत रूप से और उनकी विस्त्रित और गहन लेखन के माध्यम से जानी जाती थीं। वह एक प्रतिष्ठित आध्यात्मिक नायक थीं जिन्होंनें अपने जीवन को सनातन ज्ञान साझा करने के लिये समर्पित किया। एक गम्भीर विद्यार्थी और सशक्त विचारवान व्यक्ति, जिन्हें अगम्य व्यक्ति माना जा सकता है; फिर भी, यह उनकी पूरी वास्तविकता से बहुत दूर है। दो कहानियों के माध्यम से जो उनसे मेरे व्यक्तिगत स्तर पर वार्तालापों से सम्बन्धित हैं, इस आश्चर्यजनक महिला को समझनें में सहायक होगी।

एक बार जब राधा ओजाई, कैलीफोर्निया, यूएस के क्रोटोना इंस्टीट्यूट ऑफ थिऑसफी आयी थीं तब उन्होंनें अनेक वक्तव्य दिये। मेरे दो वर्श के (बच्चे) नें बड़ी जिद के साथ संध्या स्नान के लिये बाथरूम में आने से मना कर दिया। इस दृढ़ मस्तिष्क वाले बच्चे के साथ संघर्श करानें के स्थान पर मैनें बाथरूम के बाहर ही उसके कपड़े उतार दिये और एक ट्यूब की सहायता से बाहर ही नहला दिया। जब इस प्रकार हम दोनो खेल खेल कर सफाई कर रहे थे, मैनें राधा को गली में टहलते हुये देखा। मेरा पहला विचार था कि ''मैं एक समस्या में पड़ने वाली हूं क्योंकि मैं एक बच्चे को घर के सामनें मैदान में नग्न नहला रही हूं।'' फिर भी राधा मेरे घर के सामने रुक गयीं और मेरे बच्चे की पुरानी वस्तुओं को देख कर हंसने लगीं। उन्होंने सोचा कि बच्चा बहुत प्यारा है और नहलाने की सम्स्या को हल करने के लिये यह विधि बहुत अच्छी है। बचपन की अबोधता और एक युवा मां के संघर्श को देख कर उनकी हंसी और आनन्द, उनके प्रेम और सारी मानवता के प्रति उनकी समझ की एक सुन्दर स्मृति है।

राधा के क्रोटोना इंस्टीट्यूट ऑफ थिऑसफी के अगले आगमन पर मैं अपने दूसरे बच्चे की गर्भावस्था के अंतिम दौर पर थी। एक दिन वे बहुत सुन्दर ड्रेस के साथ मेरे दरवाजे पर आयीं, जो एक टेन्ट की तरह के आकार की थी। राधा नें कहा यह मेरे पास एक ड्रेस है और उनका विचार है कि गर्भावस्था के अतिम महीनों में यह बहुत उपयोगी रहेगी। वास्तव में यह ही ऐसी वस्तु थी जो मेरे लिये फिट थी। किन्तु, बाद में मैने सोचा कि राधा के पास ऐसी ड्रेस कभी नहीं रही होगी। जब भी यात्रा करती थीं, तब वे केवल साड़ियां ही पहनती थीं। वे शॉपिंग पर गयी होंगी और पाया होगा कि यह ड्रेस मेरे लिये उपयोगी रहेगी। उन्होंने मुझे इस प्रकार आफर किया होगा ताकि मुझे बुरा न लगे। एक बार फिर उनकी दयालुता और विचारशीलता उनके कार्यों से प्रदर्शित हो रही थी।

यद्यपि ये दोनो घटनायें हमारे संसार की समग्र वस्तुओं के सामनें बहुत छोटी लगती हैं, ये

स्पश्ट रूप से उनके प्रेमयुक्त, सौम्य स्वभाव, दया और दूसरों की आवश्यकताओं की समझ की ओर संकेत करती हैं। राधा बर्नियर ये सब कुछ और इससे भी अधिक बहुत कुछ थीं। उन्होंने थिऑसफिकल सोसाइटी का नेतृत्व तत्परता और समर्पण के साथ किया। उनका लेखन संकेत करता है कि वे अपने स्वयं को और पूरी मानवता की प्रकृति को गहराई से देखती थीं। उन्होंनें थिऑसफी को जिया है।

उनके 100वें जन्म वर्ष के अवसर पर, इस आशा के साथ कि जो जीवन उन्होंनें जिया है वह केवल हमें उनके जीवन के अनुसार जीनें की प्रेरणा ही नहीं देगा वरन जो कुछ उन्होंने व्यक्तिगत रूप से और टीएस के अंतर्राष्ट्रीय अध्यक्ष के रूप में जो पाया है, उसके लिये उनके प्रति एक कृतज्ञता का भाव रखें। धन्यवाद राधा।

———————————————————

यदि सत्य के प्रति प्रेम और करुणापूर्ण कार्य पूरे थिऑसफिकल संसार का अंग हैं, तब हम अत्यधिक ध्यान और शुभसंकल्प आकर्शित करेंगे।

राधा बर्नियर
'अध्यक्षीय भाशण'
थिऑसफिकल सोसाइटी के 130वें वार्शिक
अधिवेशन,
अडयार, 26 दिसम्बर 2005 में

पेड्रो ओलीवेयरा

संकल्प प्रज्ञान और प्रेम – राधाजी के साथ कार्य करना

वर्ष 1979 में 'द थिऑसफिस्ट' का आजीवन सब्सक्राइबर बनने के बाद मैं राधा जी के लेख इस पत्रिका में नियमित रूप से पढ़ता रहा। किन्तु यह 17 जुलाई 1980 को उनके द्वारा अडयार में दिया गया उद्घाटन भाशण था, जिसको सुननें के बाद मैं उनके लेख और संम्पादकीय गम्भीरता से पढ़ने लगा। अन्त में, मैने उनके प्रत्येक सम्पादकीय को पुर्तगीज में अनुवाद करके 1980 से 1985 तक उसी पत्रिका में प्रकाशित करता रहा। बाद में वे ब्राजील की थिऑसफिकल सोसाइटी के द्वारा 'थिऑसफिकल सोसाइटी टूडे' शीर्शक से एक पुस्तक के रूप में प्रकाशित किये गये जो पूरे ब्राजीलियन सेक्शन में वितरित की गयी।

उनके उद्घाटन भाषण के अंतिम अनुच्छेद को नीचे उद्घृत किया जाता है जो उनकी अध्यक्षता के मुख्य विचार बिन्दु का प्रतिनिधित्व करता है –

''जैसे जैसे समय बीतता है, पीढ़ियां परिवर्तित होती रहती हैं। प्रत्येक पीढ़ी के समक्ष मानव के परिवर्तन होते परिवेश की समस्या आती है। कोई शिक्षा, कोई दर्शन सभी पीढ़ियों के लिये समुचित सहायता नहीं हो सकती है यदि वह एक मुहाविरा या परम्परा के रूप में परिवर्तित हो गयी है। किन्तु सच्चे धार्मिक मन का प्रज्ञान किसी भी पीढ़ी की भाशा में बोल सकता है और उसकी खुद के गुणों का महत्व बता सकता है।

कोई भी प्रतीत करता है कि यह वही आवश्यक विचार बताता है जो एचपीबी का आधारभूत कथन जो 'की टू थिऑसफी' के अंतिम अध्याय में कहा गया है, जो 1889 में प्रकाशित हुयी थी।

''अभी तक थिऑसफिकल सोसाइटी जैसे प्रत्येक प्रयास का परिणाम असफलता ही हुई है, क्यों कि शीघ्र या देर से वह एक सेक्ट या पंथ में परिवर्तित हो गयी है, जिसनें अपने ही कठोर अंधविश्वास बना लिये, और इस प्रकार वह इस स्तर तक अगोचर हो गयी कि खो गयीं, क्योंकि जीवंत सत्य ही प्राणशक्ति की शिक्षा दे सकता है। आप को याद रखना चाहिये कि हमारे सारे सदस्यों नें किसी न किसी सम्प्रदाय और धर्म में जन्म लिया है और सभी भौतिक और मानसिक दृष्टिकोण से कम या अधिक अपनी पीढ़ी के हैं, और परिणामतः उनके निर्णय अचेतन रूप से इन घटकों में से किसी से प्रभावित हो कर एकांगी हो सकते हैं। तब यदि, इस अंतर्निहित एकांगीपन से उनको स्वतंत्र नहीं किया जाये या कम से कम उनकी तुरंत पहचान करना नहीं सिखाया जाय और उसके द्वारा अधिग्रहीत हो जायें तो परिणाम यह होगा कि सोसाइटी उन्हीं या अन्य विचारों के रेत के भण्डार की ओर खिसकती जायेगी और मृत शरीरों की भांति आकृति ले कर मर जायेगी।''

राधा जी जानती थीं कि यदि थिआसफी मात्र सिद्धांत में परिवर्तित हो जायेगी, कमजोर हो जायेगी, या अपना मार्ग बदल देगी तो यह मानवता को उसकी वर्तमान स्थिति से नहीं बचा पायेंगे, जो विभिन्न प्रकार की स्वार्थपरता के कारण निर्मित हो गयी है। अपनी अध्यक्षता की अवधि में, वे अपनी ऊर्जा से उन्होंने प्रतीति करवाई कि वास्तव में थिआफसफी एक जीवित प्रज्ञान है, एक मानवीय मन के पुनर्जागरण की शक्ति है जो मानव मन को बहुत गहन रूप से परिवर्तित कर सकती है और इसे 'प्रकृति में एक मंगलकारी शक्ति बन सकती है'।

जुलाई 1991 में, जब मैं रियो डि जैनीरिओ में इयूनिस और फेलिक्स लेटन, अमेरिकन सेक्शन के प्रसिद्ध वक्ता, के व्यक्तव्य सुन रहे थे, तभी मैं श्रीमती राधा बर्नियर के लेखों का पुर्तगीज में अनुवाद कर रहा था। उन्होंनें कहा, ''बहुत अच्छा, व्यक्ति के मन को जानने की यह अच्छी विधि है''। श्रीमती लेटन का और सीधा दृष्टिकोण था। जब टीएस के यूथ समूह के एक सदस्य द्वारा पूछा गया, ''क्या ऐसी कोई सलाह है जिसे तुम युवा थिऑसफिस्टों से साझा करना चाहोगे?'' श्रीमती लेटन नें उत्तर दिया, ''प्रत्येक वस्तु पर प्रश्न करो?'' स्वाभाविक है कि उसमे थिऑसफी के बारे में अपने स्वयं की धारणा भी सम्मिलित होगी।

जनवरी से मार्च 1983 तक, मैरा सौभाग्य था कि मैं क्रोटोना इंस्टीटयूट ऑफ थिऑसफी, ओजाई, कैलीफोर्निया का एक आवासीय विद्यार्थी रहा। स्कूल की निदेशक, जॉय मिल्स थीं और फैकल्टी में डा0 जॉन ऐल्जियो, मिस इआंथे हॉस्किन्स, डा0 रेनी वेबर, डा0 कैथरीन रॉबर्ट्स, और डायना डनिंघन (अब डायना चैपोटिन) थीं, जो विद्यार्थियों के समायोजन करती थीं। यह साथ के विद्याथियों के साथ थिऑसफी के गहन शिक्षा की अवधि थी।

मेरे ब्राजील लौटने के बाद, अप्रैल 1983 में राधाजी का पोर्टो एलेग्रे में आने का कार्यक्रम था जो मेरा होमटाउन था। यह छोटा दौरा था और गतिविधियां बहुत थीं, जिसमें एयर पोर्ट में एक प्रेस इंटरव्यू भी था। उन्होंनें नगर के एक शैक्षिक संस्था में एक पब्लिक भाशण भी दिया, जिसमें 500 लोग उपस्थित थे। मुझे उनका दुभाशिया के रूप में कार्य करने को कहा गया, एक ऐसा कार्य जो हमारे लिये बहुत आसान था क्यों कि मेरे पास उन्हें सुनने के लिये कुछ सेकेंड होते थे और उसके बाद पुर्तगाली में उनके विचारों को फार्मुलेट करना होता था। इसके पहले कि अगला वाक्य आये। उनके मेजवान के घर लंच के समय बातचीत के समय मैनें उनसे पूछा कि 'की टू थिऑसफी' में एचपीबी के कथन कि 'बीसवीं शताब्दी में एक सत्य की मशाल दिखानें वाला आयेगा' के बारे में उनका क्या मत है? उन्होंनें उत्तर दिया, ''मेरे व्यक्तिगत दृष्टिकोण से वह टार्च बेयरर कृश्णजी हैं। मैं जानती हूं कि अनेकों इससे सहमत नहीं होंगे, किन्तु यह मेरा मत है''।

इससे स्पष्ट हो गया कि वे बहुत फोकस्ड थीं, और उन गतिविधियों में, जिन्हें वे महत्वपूर्ण नहीं समझती थीं, में समय बरबाद नहीं करना चाहती थीं, यद्यपि जो प्रश्न उनसे पूछे जाते थे उनके उत्तर

देती थीं। उपस्थित लोगों में से एक महिला नें जो एक बैले और प्रचलित डांसर थी ने राधा जी से पूछा, ''क्या आप एक डांसर हैं?'' इस पर उन्होंने उत्तर दिया, ''मैं एक डांसर थी।'' अडयार के आर्काइव में एक एक भारतीय समाचार पत्र की कटिंग है, जो उनका खुलासा करती है, जब वे भरत नाट्यम की नृत्यांगना थीं तब वे ''राश्ट्र का आभूशण थीं''

जिस दिन पोर्टो एल्गो से उनका प्रस्थान था, मैं राधा जी को सूचित करना चाहता था कि मैं उनको 5.00 एएम पिक अप करूंगा, क्योंकि वहां से एयरपोर्ट की यात्रा लम्बी थी। उन्होंनें उत्तर दिया, ''मैं तैयार रहूंगी''। एयरपोर्ट में एक छोटी सी घटना नें हमारे भविश्य में पत्राचार का रास्ता खोल दिया। चेक इन करने के बाद उन्होंने मुझसे पूछा, ''क्या मैं तुम्हारा पता ले सकती हूं?'' मैंने तुरन्त उन्हें दे दिया। जो पत्राचार 1983 में प्रारम्भ हुआ, वह 2013 में समाप्त हुआ, जब उन्होंने भौतिक शरीर छोड़ा। दो अन्य अवसरों पर मैं उनसे ब्राजील में मिला। वर्श 1987 में जब उन्होंनें एक दूसरा व्याख्यान श्रोताओं से भरे स्टेट असेम्बली आडीटोरियम, पोर्टो ऐलेग्रे में दिया और 1990 में ब्राजीलिया में जब वे नेशनल सेक्शन के समर स्कूल में एक अतिथि थीं। ब्राजीलिया के बाद वे पार्टो एलेग्रे गयीं एक बार फिर गयीं। जब वे स्थानीय टीएस की बैठक में भाग लेने के लिये कार में जा रही थीं, तो उन्होंने कहा, ''मैं यह चर्चा इसलिये कर रही हूं कि उनकी शिक्षाओं के बारे में तुमरे अंदर भावनायें हैं, मेरा विश्वास है कि कृष्णजी एक मुक्त मनुष्य हैं। उनके जीवन के प्रारम्भ में कुछ कार्मिक बंधन थे किन्तु उनकी परिपक्व वृद्धावस्था में उनकी चेतना मुक्त थी।'' मैने उनको ध्यान से सुना और उनके कथन पर कोई टिप्पणी नहीं कर सका, और चुपचाप मान लिया।

मैं उनसे एक बार फिर इंटरनेशनल सेंटर ऑफ थिऑसफी, नार्डेन, नीदरलैंड में जुलाई 1990 में मिला, जब वे 'ह्यूमन रिजनरेशन' पर सेमीनार में आयीं थी। वहां अनेक देशों के प्रतिनिधि उपस्थित थे। राधाजी को प्रातः एक वक्तव्य लेना था जिसके बाद उनके उद्धरणों पर विवेचन होने थे जो पहले ही संकलित कर लिये थे। लंच के बाद सम्बन्धित विशय पर समूह विवेचन होने थे। प्लेनरी सत्र 5.00 पीएम पर होना था जिसमें राधाजी के साथ प्रश्नोत्तर होने थे।

अपनी प्रातःकालीन वक्तव्य में राधाजी ने गम्भीरता और निष्ठा का वातावरण बना दिया, जिसनें सहभागियों को समझाया कि टीएस का कार्य संसार के लिये कितना महत्वपूर्ण है। एक विशेष क्षण में उन्होंनें कहा कि, ''विश्वबन्धुत्व एक ऐसा मन है जिसमें किसी प्रकार का कोई भेदभाव नहीं है'' जिसका उस मार्ग पर जिस पर हम चल रहे हैं और अन्य लोगों तक पहुंच रहे हैं उन पर बहुत गहन परिणाम होते हैं। यह वैसा ही है जैसा रमण महर्शि के निम्नलिखित कथन में है। उनसे पूछा गया था, ''हम दूसरों को किस प्रकार सहायता कर सकते हैं?'' उन्होंने उत्तर दिया था, ''कोई दूसरा है ही नहीं है।''

दि0 6 जनवरी 1992, इंटरनेशनल कन्वेन्शन के पश्चात, राधा जी नें मुझसे कहा कि वे उनके

घर पारसी क्वार्टर्स, अडयार में आयें। अडयार को आवश्यकता है कि अपेक्षाकृत युवा लोग इसके लिये कार्य करें और उन्होंने मुझे अंतर्राष्ट्रीय सचिव के पद पर कार्य करने का आमंत्रण दिया। ब्राजील में अपने परिवार से बातचीत के बाद मैने उनका प्रस्ताव मान लिया। वर्श 1996 में मैं ब्राजील वापस गया। उस काल की घटनायें और परिस्थितियों की चर्चा की जाये तो वे बहुत अधिक हो जायेंगीं। किन्तु यह उचित होगा कि उनमें से कुछ यहां प्रस्तुत किये जायें क्योंकि वह राधाजी के थिऑसफिकल सोसाइटी के प्रति योगदान को दर्शाते हैं। मेरा नियुक्ति पत्र हस्तांतरित करने और अडयार के सारे विभागों को भेजने के पहले उन्होंनें मेरी ओर देखा और मुझसे पूछा था कि ''आप इस पद को अपेक्षाकृत कम आयु में ग्रहण करेंगे। लोग तुम्हारी चापलूसीं करेंगे। लोग तुम्हें कुछ भी कहें, तुम जो हो वही हो। यदि हम अपनें अन्दर देखें तो अनेक अशुद्धियां होंगी जिन्हें निकालने की आवश्यकता है।'' अपनी ही हानि करते हुये मैने उनकी सलाह पर सदा घ्यान नहीं दिया। उनकी सलाह बहुत ही महत्वपूर्ण थी जैसी मुझे जीवन में अन्य किसी से नहीं मिली। उनका उचित प्रकार से विकसित संकल्प था कि वे किसी प्रकार के भय से प्रभावित नहीं होती थीं। श्रीमती नोर्मा शास्त्री, पूर्व एकॉमोडेशन अधिकारी, अडयार, नें मुझसे बताया था कि एक बार राधाजी नें उनसे कहा था कि वे (टीएस की) किसी समस्या से नहीं डरती थीं, क्योंकि वे जानती थीं कि समस्यायें तो आयेंगी ही। उनका मन सदा थिऑसफिकल कार्यों में फोकस रहता था। उनके जीवन में उनका घ्यान भंग होने का कोई स्थान नहीं था।

वे निर्णय के अनुसार कार्य करती थीं। जब अन्य स्वार्थी समूहों के कारण किन्हीं दो अनुभागों का कार्यों टकराव होता था तो वे एक्शन लेती थीं। जब पहले का महासचिव बाद के महासचिव के कार्य को कमजोर करनें का प्रयास करते थे तो वे उसे पत्र लिखती थीं, जिसका प्रारूप वे मुझसे साझा करती थीं। उनका पहला अनुच्छेद होता था कि सोसाइटी के वरिश्ठ सदस्यों को समरसता बनाये रखनें में सहायता करना चाहिये और उसका विखण्डन नहीं करना चाहिये। दूसरा पैराग्राफ होता था कि वह कारण जिसके लिये हम इस संसार में आये हैं वह है मन को शुद्ध करना।

जब उन्होंनें मुझे अंतर्राश्ट्रीय सचिव बनने के लिये आमंत्रित किया था तब उन्होंने कहा था कि जो बातें हमे सीखने की आवश्यकता है वह है कि टी एस कार्य में अडयार का क्या उद्देश्य है। वे सी. आर. ग्रोव्स को उद्धरित करती थीं जो टीएस इन इंग्लैंड के पूर्व जनरल सेक्रेटरी थे, और अडयार में अपनी पत्नी डॉरिस ग्रोव्स के साथ अपना समय व्यतीत करते थे। मि0 ग्रोव्स ने लिखा है कि अडयार में, अन्य स्थानों से भिन्न, कोई भी प्रतीत करता है कि केवल व्यक्तिगत स्व को छोड़ कर वास्तविकता का केन्द्र सब स्थानों पर है। उनके साथ हेडक्वार्टर्स से अपने घर तक जो परिसर के दूसरे किनारे पर है, टहलना एक अकथनीय अनुभव है। जब उनकी आंखें रास्ते के वृक्षों, झाड़ियों, पौधों, और घरों का सर्वे करती थीं, उनका कोमल मुख पूर्ण उल्लास और अडयार में रहने वाली पवित्रता से एकत्व छिपा नहीं रह पाता था। उनके लिये अडयार एक ऐसा स्थान था जहां सच्ची आत्मा की खोज होती है।

अनेक कामगार, आगन्तुक और कर्मचारी उनके कार्यालय के सूक्ष्म अनुभव को अंतर्राश्ट्रीय मुख्यालय में प्रतीत करता था। वे तभी बोलती थीं जब बोलना आवश्यक होता था। एक आगन्तुक मार्क टूली, बीबीसी का एक पूर्व ब्यूरो चीफ, नई दिल्ली, एक प्रकार और लेखक जिसका जन्म भारत में हुआ था, नें एक बार राधाजी को कहा, ''आपकी सोसाइटी के सिद्धांत और उद्देश्य इतने प्रबुद्ध और और महत्वपूर्ण हैं, तब ऐसा क्यों है कि इसके सदस्य इतने कम हैं?'' राधाजी नें उत्तर दिया, ''यह मानव जीवन की तरह है, शरीर बहुत छोटा है किन्तु चेतना बहुत विस्त्रृत हो सकती है।'' यूनाइटेड स्टेट्स में 1981 में एक इंटरव्यू में उन्होंने कहा, ''यहां केवल 10 प्रतिशत टीएस के सदस्य वैसा जीवन जीते हैं जैसा थिऑसफी दिखाती है, तो सोसाइटी संसार में एक बड़ी शक्ति हो जायेगी, क्योंकि यह एक ऐसी शक्ति का उपकरण बन जायेगी जो स्वयं से कहीं अधिक महान होगी।

राधाजी नें 31 अक्टूबर 2013 को पारसी क्वार्टर्स में अपना शरीर त्याग दिया। अक्टूबर – नवम्बर 2014 के द थिआसफिस्ट के स्मृति अंक के लेख में श्री हरिहर राघवन नें लिखा है –

''जब मैं उनके आवास पर पहुंचा तो मैनें देखा कि वे शांति पूर्वक पड़ी हुयी हैं। क्या वे शाश्वत के साथ सम्मिश्रित हो गयीं? उनकी मेज पर भगवद्गीता थी। एक कागज था जिस पर संस्कृत में भगवद्गीता से उन्होंनें कुछ लिखा था। एक छंद उसके अनुवाद के साथ नीचे प्रस्तुत किया जाता है –

यो माम पश्यति सर्वत्र सर्वम् च मयै पश्यति,

तस्याहम् न प्रणस्यामि स च न में प्रणस्यति। (अध्याय 6, श्लोक सं0 30)''

'जो प्रत्येक वस्तु में मुझे देखता है और मुझ में प्रत्येक वस्तु को देखता है मैं उसको कभी नहीं छोड़ता हूं और वह मुझे कभी नहीं नहीं छोड़ता है।

मेरी जानकारी के अनुसार राधाजी नें अपनें आध्यात्मिक स्तर के बारे में कभी नहीं बताया है। किन्तु एक बार उन्होंनें मुझे बताया था कि कृश्ण जी नें उन्हें बताया था कि, बहुत उच्च मैसॉनिक उपाधि प्राप्त करना, उन्हें दो विस्त्रृत एन्जिल्स दिये गये थे, तब उन्होंने राधा जी को बताया कि, ''मैं सोच रहा हूं कि मरने के पहले मैं उनको तुम्हें दे जाऊं'' मेरे लिये इस सम्बन्ध में उनसे पूछना सम्भव नहीं हो सका। किन्तु एक बार, बहुत जल्दी प्रातः मैं अडयार में जब मैं उनसे मिलनें गया, तब वे अपना नाश्ता करनें जा रही थीं, मैं देख सका कि उनकी आंखों में 'आत्मा भक्ति' थी और कैसे बहुत सूक्ष्म और शक्तिशाली प्रभाव उनसे निकल रहा था। वे एक सच्ची साधिका थीं, 'प्रभावी, दक्ष, शक्तिदायक (जैसा कि हृदय में जलने वाली अग्नि को कहा जाता है जो स्वेक्षा की शक्ति विकसित करती है।)

थिऑसफिकल सोसाइटी उनकी कृतज्ञ है जिसकी परिपूर्ति आने वाले अनेक जन्मों में भी नहीं हो सकती है। मेरा विश्वास है वे जहां कहीं भी होंगी, अब भी सोसाइटी की सहायता कर रही होंगी।

———————————————————

शांति और समझ प्रायः करुणामय प्रवृत्ति के उप उत्पाद हैं; वे व्यक्ति की सामान्य प्रतिक्रिया हैं जिनमें शांति की बहुलता है। जब कोई दूसरा व्यक्ति गलत कर रहा हो तब भी शान्ति बनाये रखी जा सकती है। जिसमें समझ है वह प्रत्येक परिस्थिति में शांतिपूर्ण रहता है। ऐसे व्यक्ति की टिप्पणी या कार्य के प्रति भी, जिसमें वे गुणवत्तायें नहीं हैं जो शांति की ओर ले जाती हैं। ऐसा इसलिये है कि वह जानता है कि लम्बी अवधि में वह भी समझेंगे जो यह नहीं जानते कि वर्तमान क्षण में क्या करना चाहिये वे भी सीखेंगें

राधा बर्नियर

'कम्पैसनः द बेसिस ऑफ पीस ऐण्ड अण्डरस्टैंडिंग'

सोनल मुरली

राधाजी का स्मरण

मैं पहली बार राधा बर्नियर, जिसे स्नेह से राधाजी कहते थे, से 1981 में भावनगर में एक रिट्रीट में मिली। उस समय वे अपने पचासवें दसक के समापन के निकट रही होंगी, किन्तु उनकी ऊर्जा युवा थी। क्योंकि मैं टीएस की युवा सदस्य थी, मैं उनके विचारों की स्पष्टता, उनकी उपस्थितिता और जिस प्रकार से वे श्रोताओं को अपनें मन के घेरे में रखती थीं, उससे आश्चर्य में पड़ गयी। यह ऐसा कुछ था जिसे मैनें उनके प्रत्येक वक्तव्य में बार बार देखा। प्रायः भाषण देते समय उनके शब्द बिना रुके निकलते थे। उनकी अभिव्यक्ति प्रकाशित थी – अत्यधिक शब्दों से मुक्त, संक्षिप्त और नपीतुली, वस्तुओं के हृदय की ओर संधानित। उनकी बातचीत श्रोताओं के मन में व्यक्तिगत बातचीत की तरह सीधी तरह से बैठ जाती थी।

एक युवा व्यक्ति के रूप में उनसे पूछा गया, ''राधा! तुम जीवन से क्या चाहती हो?'' उनका उत्तर था, ''मेरी अभिलाषा है कि मैं आत्म अनुशासन की कला में परिपक्व बनूं।'' उनकी समझ की स्पष्टता नें उनके पूरे जीवन को निदेर्शित किया। वे अपनी धारणाओं के बारे में समझौता नहीं करती थीं, उन्होंने तपस्यापूर्ण जीवन जिया, सरल और नासमझ की अपेक्षा व्यवस्थित और मितव्ययी जीवन, जो बिना किसी प्रदर्शन के था। इसमें कुछ व्यक्तिगत हो पानें का स्थान नहीं था। उन्होंनें अपने लिये कभी सोसाइटी का कोई साधन प्रयोग नहीं किया, अपने साधन भी उन्होंने अपनी आधारभूत सुविधाओं के लिये नहीं किया और फिर भी जिन संगठनों से वे जुड़ी थीं जरूरतमंद लोगों को दान देनें में वे बहुत उदार थीं। वे 'नो अदर पाथ टू गो' मे लिखती हैं –

> सांसारिक जीवन से परे जाने का अर्थ है, मांगों से आंतरिक स्वतंत्रता, जो बिना मांगे मिलता है उससे संतुश्ट रहना, चाहे वह खुशी हो या दुख हो। किसी वस्तु की मांग न करना, चाहे वह कर्म का हो, चाहे ईश्वर का हो, चाहे दूसरे लोगों का हो, और जो है उससे संतुष्ट रहना असांसारिक प्रकृति का संकेत है।'

आध्यात्मिक जीवन के बारे में उनका दृष्टिकोण उनके रहन सहन पर प्रभाव डालता था। संतोष सरलता को प्रेरित करता है। उनका आचरण, उनका रूप, उनका घर, और उनका व्यक्तित्व सब उनकी सादगी और न्यूनतम आवश्यकता के उदाहरण हैं। उनके जीवन में, हम लोगों के जीवन जैसा ही, किसी अनावश्यक या सतही वस्तु के लिये स्थान नहीं था। उनके आसपास एक तरह की असांसारिकता थी, व्यक्तिगत वस्तुओं के बारे में वे कभी केन्द्रित नहीं रहती थीं।

उनका जीवन नियमितता और अनुशासन का उदाहरण था। भौतिक एकत्रण उनके लिये कोई मूल्य नहीं रखता था। बिना थके कार्य करने की उनकी सामर्थ्य बहुत थी। अपनी विदेश यात्रा से लौटने के बाद प्रायः वे अपने कार्यालय जाती थीं और एक घण्टे अपनी डेस्क में बैठती थीं। वे होटलों में नहीं रहना चाहती थीं और वे साथी थिआसाफिस्टों के साथ रहनें को वरीयता देती थीं। उनके कुछ आतिथ्यकारों नें कहा है कि वे कितनी सरल हैं और उनको साथ में रखना कितना प्रयासहीन होता है। सोसाइटी और उसके कार्यों के प्रति पूर्ण समर्पण की वे विलक्षण मूर्ति थीं। अनेक सदस्य उनको मात्र अपना अध्यक्ष ही नहीं मानते थे, किन्तु अपना आध्यात्मिक नायक भी मानते थे। उनकी वार्तायें बहुत प्रेरक थीं और उनमें लोगों के हृदयों को छूने की अद्वितीय क्षमता होती थी, उनमें लोगों के न पूछे गये प्रश्नों और दुविधाओं के उत्तर भी मिलते थे। वे संसार में एक व्यक्ति के रूप में अपने दायित्व का देदीप्यमान प्रकाश थीं। उनकी वार्तायें व्यक्ति के साथ प्रायः दिन भर रहती थीं और अनेक बार तो आने वाले अनेक दिनों तक रहती थीं और लोगों को आत्म चिन्तन और जागरूकता की ओर जाने को प्रेरित करती थीं। लोगों को क्रियाशीलता की मंशा की ओर फोकस करती थीं और लोगों को गहराई में खोजते रहने और अपनी आन्तरिक पर्तों में जाने के लिये प्रोत्साहित करती थीं।

लिंडा ओलीवेयरा कहती हैं कि –

''कोई उनकी योग्यताओं के बारे में कह सकता है, अनेक पदों पर उनके कार्यों के बारे में, टीएस से सम्बन्धित अनेक गतिविधियों के बारे में जिनमें वे सम्मिलित थीं, उनकी विद्वता, उन्हें प्रदत्त अनेक सम्मानों, के बारे में बातें कर सकता है। ..... फिर भी ये सब उनके गहन जीवन के समक्ष सतही लगते हैं। उनके आस पास शक्ति, गहन सन्तोष, अनेक बार एक पवित्रता का परिवेश रहता था, जिसे मना नहीं किया जा सकता था। अनेकों ने इसे प्रतीत किया था और इससे प्रभावित हुये थे।''

थिऑसफी का साहित्य काम मनस, व्यक्तिगत कामनाओं द्वारा संचालित मन और बुद्धि–मनस, अंतर्दृष्टि से प्रकाशित मन गहराई और पवित्रता के प्रति जागरूकता के बारे में कहता है। राधा जी बाद वालों का एक स्वर्णिम उदाहरण थीं। उनके पास मन और हृदय का एक सम्मिश्रण था जो बिरले ही मिलता है – अचल प्रेरणा के साथ एक उच्च कोटि का प्रज्ञान। थिऑसफिकल जीवन जीने के परिणामों को सम्मिलित करते हुये उनमें विभिन्न प्रकरणों के बारे में गहन और विश्वस्त निश्चितता थीं। वे 'नो अदर पाथ टू गो' में कहती हैं –

''सच्चा त्याग एक अकेला नाटकीय कार्य नहीं है। यह प्रतिदिन विचारों, मंशाओं, सांसारिक स्मृतियों को और एक हल्की सी भी कामनाओं, दयाहीन संवेगों, छोटी छोटी आसक्तियों, और सुख के क्षणों की स्मृतियों आदि को पोंछ देना है।''

इसका उदाहरण प्रस्तुत करते हुये, उन्होंनें एक सावधानी पूर्ण नियंत्रण का जीवन जिया। उनमें आध्यात्मिक पूर्णता का गुण और संपूर्णता थी जो उनके संपर्क में आनें वालों को ऊपर उठाता था, क्योंकि उनकी थिऑसफी एक 'जीवन्त शक्ति' थी और वे बाहर के संसार में विकिरित होती थीं। एक प्रश्न जो कोई पूछ सकता है कि, ''क्या वे मास्टर्स के द्वारा निर्देर्शित होती थीं?'', जब उनसे पूछा गया, उन्होंनें एक बहुत सरल उत्तर दिया, ''मास्टर्स कभी दूर नहीं होते हैं'' एक अन्य अवसर पर उन्होंने प्रेरणा की प्रकृति पर बोलते हुये कहा था, ''यह इस पर निर्भर करता है कि तुम्हारी प्रकृति कैसी है, प्रेरणा एक बृहत् सागर की तरह है, किन्तु यदि तुम एक बाल्टी लाओगे तो एक बाल्टी ही पाओगे।'' उनका मन और हृदय कुछ ग्रहण करनें के लिये खुला रहता था। उनकी प्रातः और संध्या शांत और ध्यानात्मक होती थी। उन्हें प्रायः सागर की लहरों का ज्वार उठते और शांत होते और आस पास के छोटे छोटे प्राणियों की ध्वनियां सुनते देखी जाती थीं। संध्या में हम उनको अपने कार्यालय से पारसी क्वार्टर्स को तेजी से चलते हुये देखते थे। प्रतीकात्मक ढंग से कहें तो, तो वे परिसर के प्रत्येक वृक्ष, प्रत्येक झाड़ी और प्रत्येक प्राणी की हलचल को जानती थीं। वे प्रत्येक ऋतु में परिसर के प्रत्येक जंगलीपन और पालतूपन को जानती थीं। एक बार मैं तेज वर्षा में वसन्ता यूथ लॉज यह देखने जा रही थी कि क्या कोई 'महात्मा लेटर्स' के साप्ताहिक अध्ययन सत्र में भाग लेने के लिये आया है? उन्होंनें अपनी कार रोक दी और मुझसे पूछा कि मैं कहां जा रही थी। मैनें हंसी दबा कर कहा कि 'मैं नहीं समझती हूं कि कोई आया होगा'। वे तुरंत मैदान में आने वाली व्यक्ति थीं। चेन्नै में आने वाले अनेक तूफ़ानों के समय, वे पहली व्यक्ति होती थीं जो महाप्रबन्धक के साथ सड़कों, वृक्षों को हुयी क्षति के पर्यवेक्षण के लिये जाती थीं और उचित निर्देश देती थीं। उनको अडयार की उचित व्यवस्था के बारे में बहुत चिंता रहती थी – उसके भौतिक और आध्यात्मिक पहलुओं की। उनके लिये अडयार कोई साधारण बस्ती नहीं थी जिसमें लोग अन्यान्य व्यक्तिगत कारणों से कोआपरेट करें या न करें। वे अडयार में पवित्र वातावरण बनाये रखने के लिये अपना सर्वश्रेष्ठ प्रयास करती थीं और इसे क्षरित करनें के किसी प्रयास को रोकनें का प्रयास करती थीं। उन्होंने कहा, ''वे जो अडयार जैसे स्थान में रहते हैं, वे यदि इसे जैसा होना चाहिये वैसा रखना चाहते हैं तो इससे अपना लाभ प्राप्त करनें के स्थान पर उनमें देने का भाव, इसकी आन्तरिक आध्यात्मिक सम्पदा को बचाने के लिये योगदान देना चाहिये। यहां प्रत्येक व्यक्ति को अपना कुछ न कुछ त्याग करना चाहिये।''

अडयार में रहनें की कामना आंतरिक स्फुरणा से होना चाहिये। और अडयार के प्रति लगाव स्वार्थरहित विधि से व्यक्ति को स्वयं ही करना चाहिये और जो कार्य निर्धारित किया गया हो उसे गर्मजोशी और समर्पण के भाव से करना चाहिये। इस दृष्टि से, व्यक्ति को अडयार में कार्य करने के लिये आंतरिक तैयारी से अपने को उसके लिये योग्य सिद्ध करना चाहिये।

वे रविवार प्रातः प्रायः और छुट्टी के दिनों में बिना रुके कार्य करती थीं और यदि हम में से कोई उनसे कोई वार्ता करने के लिये पहुंच जाता था तो वे बुरा नहीं मानतीं थीं। वे सारी पुस्तकों, पत्रिकाओं और रिप्रिन्ट्स के सम्पादन का कार्य स्वयं हैंडिल करती थीं।

उनके वाच टावर नोट उनकी सेक्रेटरी को अपराह्न की शांति में या रविवार को प्रातः डिक्टेट किये जाते थे, जिनके और सम्पादन की आवश्यकता नहीं होती थी। विचारों का बहाव और उनकी अभिव्यक्ति अनवरत होती थी। अब जब हम उनके 30 वर्षों की अंतर्दृष्टि के धनी रिकार्ड को देखते हैं, जो यह एक झलक देता है कि अपने प्रतिदिन की अवधि में किस प्रकार के मानसिक आकाश में रहती थीं। एक उत्सुक पाठक होते हुये, जिनकी रुचि संसार की स्थिति तथा अनेक बहुमुखी विषयों में होती थी जिनमें थिऑसफिकल सिद्धांत प्रकाश डाल सकते थे, उनके नोट्स राजनीति से, अर्थशास्त्र, शिक्षा से, हीलिंग की विभिन्न विधियों, सांस्कृतिक आदर्श से, शाकाहार, वेगनिज्म, विज्ञान आदि और पर्यावरण और उससे भी आगे के विषय सम्मिलित करती थीं। इस तेजी से परिवर्तित होते संसार में जहां मूल्यों में गिरावट आ रही है और वे क्षण क्षण नीचे जा रहे हैं, उनके वाच टॉवर नोट दुर्लभ और बुद्धिमत्ता पूर्ण थिआसफिकल परिप्रेक्ष्य, एक शीर्ष बिन्दु से, संसार की चिंता के साथ, जैसे एक वाच टॉवर के ऊपर से व्यक्त करते थे।

जब कोई उनसे मिलता था, तो वे उस पर पूरा ध्यान देती थीं। वे पूरी तरह उपस्थित होती थीं। ऐसी कोई प्रतीति नहीं होती थी कि उनका मन किसी अन्य विषय की ओर भाग रहा हो जिसे उन्हें बाद में करना है। उनमें कभी जल्दबाजी का भाव नहीं होता था, और मैने उन्हें ऐसा कहते हुये कभी नहीं देखा कि वे व्यस्त हैं। बहुत बाद में, जब मै अपने दायित्यों में व्यस्त रहनें लगी, मुझे आश्चर्य होता था कि वे किसी व्यक्ति या वस्तु पर इतना ध्यान कैसे दे पाती हैं, जबकि उनकी मेज में कागजों का ढेर लगा रहता था जिन्हें उनको देखना होता था और वे पत्राचार जिनका उन्हें उत्तर देना होता था। जब बातचीत समाप्त होती थी तो सिर हिला कर संकेत करती थीं कि अब बैठक समाप्त हो चुकी है। छोटी बातचीत उनके पास कभी नहीं आती थी। वे स्पष्ट, सीधी और स्ट्रेटफारवर्ड थीं। मैं बहुत कम आयु की और अनुभवहीन थी, किन्तु वे मुझे प्रायः बुलाती थीं और अनेक प्रकरणों में मेरा मत लेती थीं। उनसे बाद की मुलाकातों में मैंनें अगले अध्यक्ष के बारे में बात किया तो उन्होंनें कहा, ''मैं समझती हूं कोई ऐसा व्यक्ति जिसमें व्यक्तिगत अभिलाषा है, टीएस का अध्यक्ष नहीं हो सकता है। यह एक गूढ़ नियम कहने की तरह था। यह थिऑसफी के बारे में उनके इस विश्वास का उदाहरण था कि थिऑसफी और यह संगठन उच्चतर शक्तियों के द्वारा निर्देशित है। बातचीत के समय यदि उनके रुचि की कोई बात कही जाती थी तो उनकी आंखों में चमक आ जाती थी। यह उनका विनोद था कि वे जो कुछ भी शांति पूर्वक कहती थीं उसके साथ उनकी दबी हुयी मुस्कराहट होती थी। वे एक ईमानदार व्यक्ति थीं, और

मैंनें उन्हें सब से एक ही प्रकार वार्तालाप करते देखा था, चाहे वह एक कामगार होता था या कोई विशिष्ट व्यक्ति। इसी तरह उनका पहनावा सदा एक ही प्रकार का होता था। सभी मौकों पर सरल, प्रतिश्ठापूर्ण और सुन्दर। यह न बहुत अधिक होता था न बहुत कम। प्रतिष्ठा का बाहरी प्रदर्शन उनके लिये अधिक महत्व नहीं रखता था।

मैंने एक बार पूछा, ''क्या आपने अपना भाषण तैयार कर लिया है?'' वे विषय के बारे में सोचेंगी और अपने विचार संगठित करेंगी किन्तु उनका मन सदा कुछ न कुछ सोचता रहता था और वे विचार किया करती थीं। जब उन्होंने हम सब को 31 अक्टूबर 2013 को छोड़ा, मैने सोचा कि एक विस्तृत क्षेत्र खाली हो गया है जिसे भर पाना असम्भव होगा। किन्तु जैसे जैसे समय बीत रहा है यदा कदा उनकी उपस्थिति प्रतीत करती थी, जैसे हेडक्वार्टर्स हाल में कोई व्याख्यान सुनते समय, या अडयार के अनेक रास्तों में से किसी में चलते समय, या अचानक किसी नीरवता में, कुछ विचार करते समय, बिना यह बताये कि वे उपस्थित हैं।

————————————————

एक मन जो वैश्विक है, पूरी पृथ्वी को अपना घर समझता है और यहां रहने वाले सभी लोगों को अपने सगे सम्बन्धी, जिनके कुशल क्षेम किसी अन्य प्राणी से अलग नहीं जा सकते हैं। इस प्रकार की धारणा की अनुपस्थिति में, जो सिद्धांततः बिना किसी शर्त के होनी चाहिये, यद्यपि किसी किसी समय इसके क्रियान्वयन में कुछ कमियां हो सकती हैं, इस सोसाइटी की दूसरे संघों से अलग पहचान नहीं की जा सकती है जो कुछ छोटे उद्देश्यों की पूर्ति करते हैं। थिऑसफिकल सोसाइटी की वैश्विक विचारधारा का केवल भौतिकवादी लक्ष्य नहीं है, यह विकास के उच्चतर स्तरों के लिये द्वार भी खोलती है, जहां लोग जीवन को सर्वत्र व्याप्त सार के रूप में देखता है, जो अपने को विखण्डित को नहीं होने देता है।

राधा बर्नियर,
अध्यक्षीय भाषण
थिऑसफिकल सोसाइटी अडयार के
128वें वार्षिक अधिवेशन में दि0 26 दिसम्बर 2003 को प्रदत्त

केशवार दस्तूर

राधाजी के साथ मेरे अनुभव और टी.एस. के लिये उनके योगदान

राधा जी मुझे जानती थीं क्योंकि मेरी आंटी वीरा दस्तूर उनकी मित्र थीं। राधाजी उनको बहुत अच्छी तरह से जानती थीं। राधा जी नें मुझे काम करनें के लिये अडयार आमंत्रित किया। पहले मैनें मना कर दिया और कहा कि मैं गुजरात फेडरेशन के लिये काम करूंगी। यह वीरा की इच्छा थी हम दोनो अडयार में काम करें। दिसम्बर 2000 के अधिवेशन में मैंनें राधा जी को बोल दिया कि मैं 6 महीनों के लिये आऊंगी। उन्होंनें कहा, ''6 महीनों में तुम क्या सीखोगी, कम से कम 2 वर्षों के लिये आओ।'' और मै मान गयी। मैं जून 2001 में अडयार गयी। मैनें राधाजी से एक घर और किचेन देने को कहा। उन्होंनें मुझे सीताविलास के ऊपर दे दिया। सरला, मेरे साथ अडयार आयी। वे टीएस की सदस्य थीं इसलिये राधाजी नें उनके आने की स्वीकृति दे दी। मेरे ब्रदर इन ला मुझे छोड़ने के लिये अडयार आये थे। राधा जी ने उनसे कहा कि वे केशवार के बारे में कोई चिन्ता न करें, वे यहां सुरक्षित रहेंगीं। राधाजी नें मुझसे कोषाध्यक्ष को सहायता देने के लिये कहा। और मैं 1.5 वर्ष के लिये सहायक कोषाध्यक्ष बन गयी। जनवरी 2003 में मैं 3 वर्षों के लिये अंतर्राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष बन गयी। मुझे राधाजी का पूरा सहारा मिला हुआ था। वे अनेक बार मेरे घर आयीं। उन्होंनें मेरा घर बहुत पसन्द किया और हाउस कीपिंग डिपार्टमेंट के अधीक्षक से कहा कि केशवार जो फर्नीचर मांगें उन्हें दे दें क्योंकि मैं हर वस्तु बहुत साफ सुथरा रखती हूं।

राधा जी बहुत सरल थीं। कन्वेंशन में संध्या को होने वाले नृत्य और संगीत के कार्यक्रम में वे स्टेज के सामने बिछी चटाई पर पोल का सहारा ले कर बैठती थी। स्कूल ऑफ विज्डम के सत्रों में, होस्टेल के बच्चे प्रदर्शन करते थे और हम उसे देखने जाते थे। उस कार्यक्रम में एक दिन मैं एक नीची दीवाल पर पलथी मार कर बैठी थी। कुछ कुर्सियां विशिष्ट लोंगों के लिये रखी हुयी थीं, अचानक राधा जी आयीं और मुझे धक्का दिया, मैंने अपने पैर अनक्रॉस्ड कर लिये और वे भी दीवाल पर बैठ गयीं। वे कुर्सी पर नहीं बैठीं और विदेशियों को उनमें बैठा दिया। जब मैं अडयार गयी तो मैनें देखा कि उनके पैर के नाखून बहुत लम्बे थे। वे उनको काट नहीं पा रहीं थीं। मैनें उनसे पूछा कि, ''क्या मैं उनको काट दूं'', तो असमंजस में उन्होंनें मना कर दिया। मैनें उन्हें बताया कि मैं अपने माता पिता के भी पैर के नाखून काटती थी। कुछ दिनों बाद उन्होंनें स्वयं मुझसे नाखून काटनें को कहा। उस समय से मृत्यु तक मैं उनके पैर के नाखून उनके कार्यालय में, उनके घर में और अपने घर में भी काटती रही। हम

---

2. थिऑसफिकल सोसाइटी की पूर्व अंतर्राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष

लोग सोफा पर बैठते थे, और वे अपने पैर हमारी जांघों में रखती थीं और मैं उनके नाखून काट देती थी। वे मुझसे 30 वर्ष बड़ी थीं इसलिये मैं उनको मां ही मानती थी। राधाजी पुरानें और घिसे हुये चप्पल पहनती थीं और उन्हीं को पहन कर वे विदेश यात्रा पर भी जाती थीं। प्रत्येक दिन जब मैं उनके कार्यालय जाती थी तो उन चप्पलों को देखती थी और मुझे अच्छा नहीं लगता था। एक दिन मैंनें उनसे कहा कि उनके चप्पल बुरी स्थिति में हैं। क्या हम उनके लिये नये चप्पल खरीद लें। उन्होंने कहा कि ये उनकी चप्पलें नहीं हैं, जब वे सूरत गयीं थीं तो उनके चप्पल चोरी हो गये थे। तो बदले में उन्हें ये चप्पल दिये गये थे। अगले दिन राधाजी, उनकी सचिव मालती और मैं बाटा के शो रूम में गये और उनके चुनाव के अनुसार एक जोड़ा चप्पल ले आये। मैनें उनसे कहा कि नयी चप्पलें पहन लें और पुरानी वहीं छोड़ दें। किन्तु उन्होंनें पुरानी चप्पलें पैक करवा लिया और घर ले आयीं। वे इतनी सरल स्वभाव की थीं। यदि उन्होंनें चाहा होता तो वे एक आराम का जीवन बिता रही होतीं।

अंतर्राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष के रूप में मेरी पहली अवधि समाप्त हो रही थी, इसलिये राधाजी से कहा कि मेरा समय समाप्त हो रहा था और वे किसी अन्य को कोषाध्यक्ष पद के लिये खोज लें। उन्होंनें मुझसे कहा कि मुझे दूसरी अवधि के लिये भी जारी रखना होगा और हो सकता कि सम्भवतः तीसरी अवधि के लिये भी। यह सही सिद्ध हुआ। मैंनें एक के बाद एक तीन अवधियों के लिये कोशाध्यक्ष के पद पर 9 वर्षों तक कार्य किया। उनका हम पर इतना विश्वास था कि अंतर्राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष के अतिरिक्त मैं इण्डियन एडमिनिस्ट्रेशन, 'ईस्टर्न ऑर्डर ऑफ इंटरनेशनल को फ्री मैसनरी' का ग्राण्ड सेक्रेटरी भी बनी। मैं ऑल्काट एजूकेशनल सोसाइटी की वॉइस चेयरमैन भी थी। मैं एसौटेरिक स्कूल का खाता मेंटेन करती थी। मैं ईस्टर्न स्कूल का एक खाता भी मेंण्टेन करती थी। मैं उनके बैंक खातों की ज्वाइंट एकाउंट होल्डर भी थी। मैं उनके तीन व्यक्तिगत ट्रस्टों की ट्रस्टी भी थी। मैं उनके मृत्युलेख की कार्य पालक भी थी। जब वे मरीं तो मैं अडयार में नहीं थी और सूचना मिलते ही मैं तुरंत एक उड़ान से अडयार गयी। एयरपोर्ट से मैं सीधे श्मशान गयी किन्तु जब तक मैं वहां पहुंची उनकी बाडी का अंतिम संस्कार हो चुका था। संध्या को चार बजे उनके अवशेष गार्डेन ऑफ रिमेंम्बरेंस में रख दिये गये।

अडयार में मै सीता विलास और वसन्तालय के ऊपर रहती थी। वसन्तालय में एन. श्रीराम रहते थे। एक बार श्रीराम जी आये और राधाजी उनसे मिलनें आयीं तो उन्होंने श्रीराम जी के बेडरूम में दिव्य उपस्थिति पायी। वह कमरा हमारा भी बेडरूम होता था। यह मेरा सौभाग्य था कि मैं उसी कमरे में सोती थी जिसमें कभी मास्टर का आगमन हुआ था। वे कहा करती थीं कि उनके पिता एक सन्त थे। उन्होंनें सब कुछ ठीक से रखा है, उनके सारे कागज सुरक्षित रखे हैं। उन्होंनें अपने पिता की कोई भी वस्तु नष्ट नहीं की।

मैं वहां 2 वर्ष के लिये गयी थी किन्तु वहां 14 वर्ष तक कार्य किया। दो अवसरों पर मैं वापस आना चाहती थी, किन्तु राधाजी नें मुझे अनुमति नहीं दी। जब कभी अपने जन्म दिन पर या नये वर्ष पर उनका आशीर्वाद मांगती थी तो कहती थीं, ''मेरा आशीर्वाद हमेशा तुम्हारे साथ है''। वे इतनी चमत्कार वाली थीं कि प्रत्येक यह प्रतीत करता था कि वे उनके अधिक पास हैं। जब मैं अडयार गयी थी तब वे भूमि पर तुरंत और जल्दी से बैठ जाती थीं।

मैसॉनिक बैठकों में वे लम्बे लम्बे कर्मकांड बिना पुस्तक हाथ में लिये संचालित करती थीं। मैं इतना प्रभावित और प्रेरित हो गयी थी कि मैनें भी कठिन परिश्रम करके लम्बे लम्बे कर्मकांड याद कर लिये थे। तब मैं भी बिना पुस्तक के लम्बे लम्बे कर्मकांड करनें लगी। मैं मैसनरी में 33वीं और सबसे ऊंची डिग्री पा गयी। मैने इसे पाने की सोचा भी नहीं था। उस समय राधाजी नें मुझसे कहा, ''जितनी ऊंची डिग्री उतना ही अधिक उत्तरदायित्व'' एक अन्य अवसर पर उन्होंनें मुझसे कहा, ''मै तुम को विश्वस्त नहीं कर सकती हूं कि कोई समस्या नहीं होगी, जहां कहीं भी मनुष्य हैं, समस्यायें रहेंगी''। वह प्रज्ञान, शक्ति और सौंदर्य की मूर्ति थीं। वे केवल संस्कृत में मास्टर नहीं थीं वे प्रत्येक विधा की मास्टर थीं। उनमें गहन ज्ञान, थिऑसफी और मैसॅनरी की समझ थी, वे केवल एक प्रवचक नहीं थीं पर वे शिक्षाओं के अनुसार जीवन यापन करती थीं। वे व्यक्ति की वास्तविकता का अनुमान लगा लेती थीं। उन्होंनें एक साहसी योद्धा की भांति अनेक युद्ध लड़े थे। स्वच्छ और शुद्ध जीवन उनको आंतरिक शक्ति देते थे। वे किसी से डरती नहीं थीं क्योंकि वे सत्य के लिये लड़ती थीं। टीएस, ईएस, मैसनरी, टीओस, ओईएस के मुखिया होना और अपने उत्तरदायित्वों को पूरा करना आसान काम नहीं था। इनके अतिरिक्त वे अनेक अन्य संगठनों से जुड़ी हुयी थीं, 'जैसे न्यू लाइफ फॉर इंडिया' आन्दोलन, ब्यूटी विदाउट क्रूएलिटी, कृष्णमूर्ति फाउण्डेशन, इण्डियन वेजीटेरियन कांग्रेस, आदि जिनका कार्य करनें में व्यस्त रहती थीं। उनको थका हुआ होना चाहिये, किन्तु उन्होंनें कभी नहीं कहा कि वे थकी हुई हैं। अपनी आन्तरिक शक्ति और शक्तिशाली संकल्प शक्ति के कारण वे ये सारे महान कार्य करती थीं। अपने ज्ञान और लम्बे अनुभव के कारण उनमें समस्याओं को सुलझाने की योग्यता थी। वे केवल बाहर से सुंदर नहीं थीं, उनमें आंतरिक सौंदर्य भी था। उनके हृदय और मन भी बहुत सुंदर थे। उनके नेत्र चमकीले थे और उनमें एक प्रकार की चिनगारी थी। उनका जीवन मास्टर्स के कार्यों के प्रति समर्पित था। वे सत्य, प्रेम और दया आदि गुणों का जीवन जीती थीं। उन्होंनें अपना जीवन थिऑसफी और मैसॅनरी को समर्पण के लिये त्याग दिये थे। वे मानवता के हित के लिये कार्य करती थीं। उन्होंनें मानवता के हित के लिये अपना पूरा जीवन त्याग दिया था। जब वे अपने कार्यालय आती थीं तो हेडक्वार्टर्स के बाहर मांगने वालों की लम्बी कतार होती थी और वे अपने पर्स से सब को कुछ न कुछ देती थीं। उनकी बाहरी प्रकृति एक कठोर और गम्भीर व्यक्ति की थी, पर उनका हृदय प्रेमी था। वे

मानव, पशुओं और पूरी प्रकृति के दुखों को जानती थीं। वे प्रत्येक के लिये मां थीं। वे एक योगी का जीवन जीती थीं। वे एक कर्मयोगी थीं। अडयार में लोग कहते थे कि उनके पास अपने पिता का प्रज्ञान था और मां का टेम्परामेंट था। जब मेरे मन में कोई प्रश्न होता था, तो अनेक बार उसका उत्तर ईएस में राधा जी के प्रवचन में मिल जाता था। राधाजी चाकलेट, आइसक्रीम (यद्यपि वे वेगन थीं), ताजे अंजीर, मूंग दाल का हलुआ, पारसी मिठाइयां, पसन्द करती थीं। वे पशुओं से बहुत प्रेम करती थीं। वे वेगन थीं किन्तु अपनी बिल्लियों और कुत्तों के लिये प्रति दिन 3 से 4 लीटर दूध उनके घर आता था। जब मैं उनके घर जाती थी, तो वे एक दो सीट वाले सोफे पर बैठती थीं और मैं उनके बगल में बैठती थी। किन्तु कुछ ही मिनटों में उनकी बिल्ली उनके पास आती थी और उनके बगल में या उनकी गोद में बैठ जाती थी। और मुझे उठ कर बगल के सोफे पर बैठना पड़ता था। एक जो उनकी मृत्यु के बाद उनको बहुत मिस करती थी वह उनकी बिल्ली थी। उनकी मृत्यु के बाद उनके मृत्युलेख की कार्यपालक की भूमिका निभानें के लिये मैं उनके घर प्रतिदिन जाती थी। जैसे ही मैं द्वार खोलती थी, उनकी बिल्ली घर के अन्दर घुस जाती थी और उनको सब जगह खोजती थी। यह बहुत ही दयनीय दृष्य होता था। घर बन्द करते समय हमें सुनिश्चित करना पड़ता था कि उनकी बिल्ली बाहर निकल गयी है।

राधाजी का एक नियम था कि जिस पार्टी में कोई राजनैतिक नेता आने वाला होता था उसमें वे नहीं जाती थीं, क्योंकि उनकी नजर सोसाइटी की भूमि पर होती थी। राधाजी का दृढ़ विश्वास था कि टीएस के अध्यक्ष को अडयार के कैम्पस में ही रहना चाहिये। जब कभी वे 2–3 महीने के लिये लेक्चर टूर पर जाती थीं तब उपाध्यक्ष सुरेन्द्र नारायण परिसर में आ जाते थे। इस प्रकार कैम्पस कभी अध्यक्ष या उपाध्यक्ष के बिना नहीं रहता था। वर्ष 2008 के अध्यक्ष के चुनाव के लिये उन्होंनें बन्धु जॉन एल्गियो को प्रेसीडेन्ट के पद के लिये खड़े होने के लिये कहा था, किन्तु उन्होंने कहा कि वे अडयार में नहीं रह सकते हैं, इसलिये स्वयं खड़ी हुयीं और भारी मतों से विजयी हुयी थीं।

राधाजी का जन्म 15 नवम्बर 1923 में हुआ था में पारसी क्वार्टर में हुआ था और वे जीवन भर उसी में रहीं और 31 अक्टूबर 2023 को वहां ही मरीं। उन्होंने एक अंग्रेजी मूवी ''द रिवर'' में कार्य किया था। हम लोगों ने वह फिल्म अडयार में देखी थी। वे घर प्रयोग करने के बदले टीएस को सारे चार्जेज देती थीं, जैसे मेंटीनेंस चार्जेज, एलेक्ट्रीसिटी चार्जेज, और फुड चार्जेज आदि। वे कहा करती थीं कि अध्यक्ष टीएस का ट्रस्टी है, मालिक नहीं। उन्होंने बताया कि ''मैं टीएस को कुछ देने में प्रसन्न होती हूं, उससे कुछ लेने में नहीं''। वे टीएस के रेड लेटर दिनों के अतिरिक्त कोई पर्व नहीं मनाती थीं। उन्होंने अपनी शिक्षायें अनेक पुस्तकों जैसे –ह्यूमन रिजनरेशन, नो अदर पाथ टू गो,द थिऑसफिस्ट में उनके 'वाच टॉवर' लेख, उनके 'मॉर्निंग स्टार' लेख, उनकी ईएस मीटिंग में प्रवचन, आदि के माध्यम से अपनी शिक्षायें दीं। किन्तु इन सब के ऊपर उनका जीवन ही हमारे सब के लिये उनका संदेश है। उन्होंने एक

सच्चा थिऑसफिकल जीवन जिया है – जो सभी के लिये प्रेरणा है।

चिनगारी ज्वाला में सम्मिश्रित हो गयी। वे ऐसे संसार में चली गयीं हैं जो हमारी दृष्टि से ओझल है, किन्तु वे हमें देख रही हैं। हम अपना कार्य करें, वह कार्य जो उनको प्रिय था, उनके आशीर्वाद पाने के लिये। मैं सौभाग्यशाली हूं कि मुझे उनके साथ कार्य करने का अवसर मिला। मैं उनकी देखभाल, स्नेह, बचाव और मुझ में विश्वास के लिये उनकी कृतज्ञ हूं।

आर.रेवती

श्रीमती राधा बर्नियर

मैं वास्तव में सौभाग्यशाली हूं कि मेरा जन्म और लालन पालन थिऑसफिकल सोसाइटी अडयार के अंतर्राष्ट्रीय परिसर में हुआ और थिऑसफिकल सोसाइटी के अंतर्राष्टीय अध्यक्ष श्रीमती राधा बर्नियर के इतने निकट सम्बन्ध में रहने का मुझे विशेषाधिकार प्राप्त हुआ।

अपने जीवन के प्रत्येक स्तर पर मुझे उनके व्यक्तित्व के विभिन्न आयाम देखने और उनके महान गुणों की प्रशंसा करने का अवसर प्राप्त हुआ। मेरे स्कूल के दिनों में वे बहुत स्नेही आंटी थीं। मै उनको राधा आंटी कहा करती थी। मैं उनकी जन्म दिन की शुभ कामनाओं का आनन्द लेती थी। और छोटी सी किन्तु बहुत मूल्यवान भेंट जो वे प्रत्येक वर्ष जब वे जन्म दिन पर हमें याद करती थीं तब भेजती थीं।

जब मैंने एमबीबीएस डीसीएच कोर्स ज्वाइन किया था, मुझे आशीर्वाद देने वाली और सहायता के लिये हाथ बढ़ाने वाली वे पहली व्यक्ति थीं। जब मैं सरकारी सेवा में जाने में असमंजस में थी, क्योंकि मुझे दक्षिण भारत के एक रिमोट गांव में पोस्ट किया गया था, तो उन्होंनें मुझे सलाह दी थी कि मुझे सर्विस ज्वाइन कर लेनी चाहिये। उन्होंनें कहा था कि ''यह तुम्हारे लिये एक परीक्षा है। मास्टर्स चाहते हैं कि तुम उस स्थान पर सेवा करो।'' मुझे एक अत्यंत व्यस्त मेडिकल कालेज हास्पिटल के इमर्जेन्सी कैजुअलिटी डिपार्टमेंट में रखा गया। वहां कार्य करते समय मैं उनके शब्द याद करती थी। और मास्टर्स के आशीर्वाद से मुझे हास्पिटल इमर्जेन्सी में कार्य करनें का मूल्यवान अनुभव प्राप्त हुआ। बाद में जब मैं नगर के एक पेरीफेरल हास्पिटल के हेड के रूप में कार्य कर रही थी तब मुझे सर्वश्रेष्ठ कार्य निष्पादन के लिये भारत सरकार से एवार्ड और प्रमाण पत्र मिला।

राधाजी एक महान कर्मकांडी थीं। उन्होंने 'रिचुअल ऑफ मिस्टिक स्टार', 'एसोटेरिक स्कूल ऑफ थिऑसफी', और 'को फ्री मैसॅनरी' में मेरी रुचि उत्पन्न करवाई। वे सदा हमारे द्वारा ठीक से और पूर्णता से कर्मकांड करना पसन्द करती थीं। अच्छे काम का पारितोषिक और अधिक उत्तरदायित्व और अधिक कार्य मिलना होता है। ऐसे ही पारितोषिक हमारी राधा जी को प्राप्त थे।

उनको लोगों और प्रकरणों की समझ बहुत उचित होती थी। वे चाहती थीं कि टीएस के कार्यकर्ता परिश्रमी, कोआपरेटिव और समर्पित होने चाहिये।

वे गरीबों, जरूरतमंदों और कष्टमय लोगों की बहुत सहायता करती थीं। वे पहले उचित

---

4. अडयार लॉज की सदस्य

सूचना एकत्रित करती थीं, उनका विश्लेशण करती थीं और सुनिश्चित करती थीं कि सहायता उन तक सही समय पर उन तक पहुंच गयी है। ऐसी थीं हमारी बड़े हृदय वाली राधाजी। मेरे हृदय में उनके लिये सबसे अधिक प्रशंसा है। वे विद्वान, दयालु हृदय व्यक्ति और कठोर अनुशासन वाली थीं। उनकी शिक्षायें सरल और समझ में आने योग्य होती थीं। उनके प्रजेन्टेशन बहुत प्रकाशदायक थे, उनमें से प्रत्येक में समझ में आनें और विचार करने योग्य गहन सत्य होते थे। उनकी पुस्तकें वर्ल्ड अराउंड द वर्ड, ह्यूमन रिजनरेशन, मेरे लिये बहुत विशेष हैं। मैं थिऑसफिकल विषयों के रेडी रेफरेंस के लिये उन्हें सदा अपनी मेज पर रखती हूं।

उनके वक्तव्य बहुत प्रकाशक, उचित बिन्दु पर, शक्तिशाली संस्कृत उद्धरणों और उच्च स्तर के थिऑसफिकल विचारों के साथ होते थे। वे सदैव बहुत पंक्चुअल रहती थीं, कभी भी लिखित नोट्स ले कर नहीं जाती थीं और न उनको दिये गये समय के बाद नहीं बोलती थीं। वे चाहती थीं हम सब भी व्यवहार में इसी आचार संहिता का अनुसरण करें। वे हेडक्वार्टर्स में शांति बनाये रखने की तीक्ष्ण पक्षधर थीं, और अनावश्यक रूप से वहां फर्नीचर में फेर बदल या लोगों की हलचल नहीं होनें देती थीं। वे आत्म अनुशासन की उदाहरण थीं। अनेक अवसरों पर राधा जी की वार्तायें जिनमें उच्च थिऑसफिकल विचारों की स्पष्टता से व्याख्या की गयी थी, अनेक उच्च स्तर के विशिष्ट लोगों नें सुनी थी। इस बात पर वे सब एकमत थे कि यह उनका सौभाग्य था कि इस स्तर के सरल, वैभवशाली, विशेष व्यक्ति से मिले। भारत में उनके साथ यात्रा करने के हमें अनेक अवसर प्राप्त हुये। मैंनें पाया कि वे बहुत सरल, बहुत स्वतंत्र, और नियमित भोजन की आदतों वाली महिला थीं। मेडिकल व्यवसायी के रूप में उन्हें मेरे प्रति बहुत विश्वास था, और जब कभी उनको कोई शारीरिक कष्ट होता था तो वे मेरी सलाह पर दवायें लेती थीं और चिकित्सा करती थीं।

आज उनके जन्म वर्ष की शताब्दी के इस अवसर पर हम उनके पदचिह्नों पर चल कर और जिस ओर जानें के लिये वे सदा प्रयासरत रही हैं, उस दिशा में प्रयास करके हम उनको श्रद्धांजलि अर्पित करें और मानवता को ऊपर उठानें हेतु मास्टर्स के कार्यों में सहायता, मानवता के विकास को आगे ले जानें और सभ्यता को संरक्षित करनें में उनका सहयोग करें।

श्रीमती मंजू सुन्दरम्

सीखने के क्षण – आनन्द लेने के क्षण

किसी ऐसे व्यक्ति, जिसका बचपन से 68–69 वर्ष की आयु तक विकसित होते सावधानी से प्रेक्षण किया गया हो, के संस्मरण लिखना किसी प्रकार आसान कार्य नहीं है। फिर भी कोई और नहीं वरन राधाजी जैसे किसी व्यक्ति के आश्चर्यजनक और फलदायी क्षणों की स्मृतियां लिखने का आमंत्रण आंतरिक तारों को अचानक झंकृत कर देता है जिसके कम्पन हृदय की गहराइयों को भक्ति, कृतज्ञता और अकथनीय आनंद से प्रतिध्वनित कर देते हैं।

पानी से बाहर आकर, अपने जीवन की धारा को किनारे खड़े हो कर उसकी ओर देखना, साक्षी भाव से उसका प्रेक्षण करना (चेतना को देखना), एक अत्यधिक सुन्दर, गहन होती और परिपूर्तिकारक अनुभूति की भांति है। इस प्रकार देश, काल और आयु की सारी बाधाओं को तोड़ते हुये, किसी आंतरिक दबाव के कारण मन का कालीडास्कोप अतीत के स्पष्ट और कम्पनयुक्त चित्र बुनना प्रारम्भ कर देता है और व्यक्ति फिर से उन्हीं दिनो की सांसें लेने लगता है और वही जीवन जीने लगता है, सब कुछ नया हो जाता है!

उनको अडयार थियेटर के द्वार पर खड़े या केन चेयर में अपने आप में शांति से बैठे हुये, लोगों को आते और जाते हुये देखना स्वयं में एक अनुभव था। कोई भी उनकी स्तब्ध किन्तु दूर तक जाती हुयी दृष्टि से चैतन्य होकर, सावधान और अपने और उनके बारे में चैतन्य हो जाता था। और उस देखनें में सम्भवतः स्वतः सभी से एक शब्दहीन वार्तालाप होता था। उनकी उपस्थिति, यद्यपि शक्तिशाली और स्पंदनकारी थी पर किसी पर थोपी हुयी नहीं होती थी किन्तु आस पास के सभी लोगों द्वारा प्रतीत की जाती थी।

जैसे किसी के लिये, एक व्यक्ति के रूप में, शब्दों की महानता, आत्म सम्मान, शालीनता, ऊर्धत्व, आत्म नियंत्रण अचानक जीवन्त, सांसें लेना, अभिव्यक्त करना, और उनके गहन अर्थ प्रेषित करना इस श्रेणी के व्यक्तियों के गहन संकेतक हैं। मुझे याद है कि बहुत पहले मां आनन्दमयी की एक भक्त नें उनके बारे में कहा था – ''वे मुझे एक स्तर पर में प्रेरणा ही नहीं देती हैं पर मुझे उनके प्रत्येक शब्द पर श्रम करना पड़ता है, ताकि मैं उसका अर्थ हो जाऊं।'' जीना और अर्थपूर्ण होना।

कभी किसी नें उनसे स्पर्धा करनें का प्रयास नहीं किया। फिर भी कोई समझ सकता था या प्रतीत कर सकता था कि आदरणीय राधा जी जैसे लोगों में सीखनें के लिये कितना कुछ था।

---

5. काशी तत्व सभा, भारतीय सेक्शन, थिऑसफिकल सोसाइटी, वाराणसी की सदस्य।
6. डेथ मस्ट डाई, आत्मानन्द की डायरी, राम अलेक्जेंडर के द्वारा सम्पादित, इण्डिका बुक्स, वाराणसी, 2000, पृष्ठ 463.

उनको थिऑसफिकल कार्यक्रमों या अन्य अवसरों पर सुनना अनेक आयामों और मार्गों का एक अत्यधिक सिखानें वाला अनुभव होता था। गहन आध्यात्मिक और दार्शनिक से लेकर ग्लोबल सामाजिक / राजनैतिक प्रकरणों, सम्बन्धित काल के प्रकरणों, उनके ज्वलंत मानवीय समस्याओं तक – जिस भी विषय में वे बोलती थीं, वे तीव्र मनोवेग और सरोकार से, अपने प्रज्ञान की गहराई और समझ और अभिव्यक्ति की स्पष्टता के साथ बोलती थीं। जिस प्रकार वे क्रम से विषय तक पहुंच बनाती थीं, और उसको विस्तार देती थीं और व्याख्या करती थीं और उसके केन्द्र तक पहुंचती थीं, उसको कोई नोटिस किये बिना नहीं रहता था। अपने विचारों को लोगों में थोपनें के स्थान पर वे स्वयमेव बिना प्रयास के विषय के केन्द्र बिन्दु पर पहुंच जाती थीं। इस पर मनन करनें से, कोई यह प्रतीत करनें को बाध्य होता है कि ऐसा वर्षों की 'आत्म तैयारी' से, वर्षों के अनवरत प्रयास, जीवन को संपूर्णता के परिवेश में समझनें, अपनें को जीवन के अनन्त और सीमाहीन विस्तार को सत्य और महत्व से समस्वर करनें से ही सम्भव है।

राधाजी के अपने शब्दों में,

> ''इसलिये आत्म तैयारी थिऑसफिकल कार्य का आवश्यक आयाम है। यह महत्वपूर्ण है क्योंकि जब मनुष्य सत्य की समझ की दहलीज पर आता है उसके जीवन की प्रत्येक वस्तु परिवर्तित हो जाती है, और उसमें अपने आस पास के परिवर्तनों को प्रभावित करनें की शक्ति भी होती है।''[7]

जहां तक किसी व्यक्ति का प्रश्न है, एक गम्भीर श्रोता या पाठक के लिये सीखना, जो समझे हैं उनको जीवन में उतारना, और सबसे महत्वपूर्ण मनन, चिंतन, ध्यान आदि अनवरत प्रक्रियायें है। ऐसे क्षण अब भी मनुष्य को शक्ति प्रदान करते हैं, उनके पूरे व्यक्तित्व को शक्ति और उसके संपूर्ण अस्तित्व को गहनता प्रदान करता है।

राधाजी के लिये, केवल प्रयास ही महत्व रखता था और परिणाम उतना नहीं प्रभावित करते थे, जो सफलता या असफलता के रूप में होते हैं। सफलता से कोई कान्फीडेंस प्राप्त कर सकता है जब कि असफलता में व्यक्ति बहुत कुछ सीखता है। व्यक्ति सफलता की खुशी कुछ ही दिनों तक मना सकता है जब कि असफलता अनेक बार पूरे जीवन के लिये कुछ सिखा कर जाती है।

कोई वह एक दिन स्पष्टता से याद कर सकता है जब हम लोग अडयार में अंतर्राष्ट्रीय कन्वेंशन में भाग ले रहे थे। हम लोग लंच के बाद भोजनशाला से जाने वाले ही थे कि भोजनशाला का मुखिया हमारे पास आया और बोला कि राधाजी हमसे फोन पर बात करना चाह रहीं थीं। मैं कार्यालय गयी और काल रिसीव की। राधा जी नें कहा, ''मंजू मैं चाहती हूं कि तुम इस वर्ष कन्वेंशन की भक्ति

7. राधा बर्नियर, ''एसेन्सियल वर्क आफ थिऑसफिकल सोसाइटी'', थिऑसफी ऐण्ड थिऑसफिकल सोसाइटी, इंडियन सेक्शन, टीएस, वाराणसी 1991 पृष्ठ 119.

बैठक को संचालित करो। जिस प्रकार तुम चाहती हो इसको करो। तुम चैंट कर सकती हो, गा सकती हो, कविता पढ़ सकती हो, तुम किसी पुस्तक से बोल या पढ़ सकती हो'' और उसके बाद एक अंतिम वाक्य ''कोई भी वस्तु जो भक्ति को प्रेरित करती हो।'' यह देखनें में सुन्दर लगने वाला वाक्य, नहीं, इसका प्रत्येक शब्द आज भी मेरे कानों में गूंज रहा है बहुत अंदर एक तार झंकृत करता है। कोई भी अच्छी तरह समझ सकता है कि वे ये दो महत्वपूर्ण शब्द नहीं कहे होते यदि इनके पीछे कोई महान सत्य अपने अनेक आयामों और रंगों से प्रकाशित नहीं कर रहा होता। और तब उनकी पुस्तक, 'ह्यूमन रिजनरेशन' में पाठक इस कथन को देखता है –

''शुद्ध भक्ति एक शक्ति है और वह नया कुछ जगा सकती है।''[8]

यह भी –

''भौतिक सा मानसिक मूर्ति के सामनें बैठना भक्ति नहीं है। प्रार्थनायें अर्पित करना, आशीर्वाद मांगना और कहना कि 'मैं तुम्हारा हूं' भक्ति नहीं है। भक्ति 'मैं' को बाहर जाने देती है। आशीर्वाद, ज्ञान, कृपा, कुछ भी मांगना भक्ति नहीं है। भक्त के लिये वह सब जो सर्वोच्च शक्ति संकल्प करती है वह अच्छी है। प्रत्येक वस्तु अच्छे की ही अभिव्यक्ति है, क्योंकि प्रत्येक वस्तु एक वास्तविकता का अंग है। .... सच्चा भक्त वह है जो कुछ नहीं चाहता है। वह स्व को पूर्णता से समर्पित कर देता है। आत्म–समर्पण का अर्थ है कि अलगाव युक्त आत्मा के पूर्ण त्याग का विचार। तब कुछ और अधिक और अनन्त आश्चर्यजनक, सुन्दर, सत्य और वैश्विक दिव्य सार की उपस्थिति का वास्तवीकरण होता है।''[9]

और अब प्रेरणा! यह प्रायः वह है जो व्यक्ति को अस्तित्व के सब से नीचे के स्तर पर ले जाती है, वह स्थिति जो मनुष्य को पिघला देती है, उसे विनीत बना देती है, यह पूर्ण समर्पण की स्थिति है जिसमें महान घटनायें होती हैं।

एक मिथिला (बिहार) की बहुत संवेदनशील और आध्यात्मिक कवियत्री एक सुन्दर कविता का प्रारम्भ इस प्रकार करती हैं –

''मेरी तर्कबुद्धि, मेरा ज्ञान पिघल कर भक्ति का संगीत हो जाय; मेरी इगो (जीवात्मा) मेरे अस्तित्व में डूब जाय और उसे एक दोषरहित दर्पण बना दे।''

इस सब पर मनन करनें पर, जिसे लोग भक्ति जो अपने आप में प्रकाशित है का प्रत्यक्षीकरण कर सकते हैं और लोगों नें किया है। वह ऐसी स्थिति है जिसे पूर्ण समर्पण हो जाता है, बिना शर्त का समर्पण, जब इगो का पूर्ण डूबना होता है, तब व्यक्ति विनम्र हो जाता है।

---

8. राधा बर्नियर, ''ह्यूमन रिजनरेशन'' पीचीएच, अडयार, सेकेन्ड रिप्रिंट, 1999, पृष्ठ 119.
9. राधा बर्नियर, ''ह्यूमन रिजनरेशन'' पीचीएच, अडयार, सेकेन्ड रिप्रिंट, 1999, पृष्ठ 117–118.

श्री ऋषिकुमार पाण्ड्या (सितार और सुर बहार के वादक) से श्रीमती अन्नपूर्णा देवी के एक साक्षात्कार के समय उनके द्वारा बजाये गये संगीत के बारे में उन्होंनें ये महत्वपूर्ण शब्द कहे हैं –

''किसी विशेष राग में जानें में कुछ नहीं है, महत्वपूर्ण पूरे संगीत में जाना है। उनका संगीत एक पूजा की भांति है। जब वे उसके प्रति समर्पित हो जाती हैं, तब बस होता है। जेन के भाव में। जेन का एक मास्टर तीरंदाज निशाना लगा कर तीर नहीं छोड़ता है। वह तीर छोड़ता है और वह टारगेट पर ही पहुंचता है।''

एक साधारण वाक्य जिसनें चमत्कार पूर्वक आत्मा की खिड़की खोली है! ये वे क्षण हैं जिसमें व्यक्ति की चेतना के क्षेत्र के अनन्त विस्तार खुलते हैं, जो समय और देश के उस पार है। व्यक्ति का पूरा अस्तित्व विश्व की समरसता से प्रतिध्वनित होता है।

ये सब सीखनें के क्षण हैं? सदा नये, ताजे और शाश्वत रहने वाले क्षण, जीवन के पाठ सीखना और इन क्षणों का हृदय के हृदय में आनन्द लेना। कोई केवल बोले गये शब्दों से नहीं सीखता है, वक्तव्य, प्रवचन आदि राधाजी जैसे अग्रजों के द्वारा दिया जाता है। व्यक्ति उनकी शक्तिशाली उपस्थिति, उनकी नीरवता से जो कभी कभी अधिक धारा–प्रवाह, और बोले गये शब्दों से अधिक प्रभावशाली होती है, से सीखता है। व्यक्ति अपने स्वभाव के नियंत्रण से भी सीखता है, अभिव्यक्ति गहराई से भी जो बहुत कुछ संचारित करती है। व्यक्ति की अपनी ओर से जिस की आवश्यकता है तैयारी, सावधानी की, और ग्रहणशीलता की। देखना, सुनना और समझना।

ऐसे आनन्द दायक क्षणों में अनहत नाद सुनता है, अनगाये हुये स्वर सुनता है, और पर्दे के पीछे की सुन्दरता को इसके सारे वैभव में देखता है।

————————————————————

दैनिक जीवन में सतर्कता और सावधानी के अभ्यास से कोई भी यह प्रतीत करना प्रारम्भ कर देता है कि स्वतंत्रता की स्थिति क्या है। मन में बंधन और स्वतंत्रता दोनो संभव है। व्यक्ति को किसी देवता से प्रार्थना करनें की, पुजारी खोजने की कोई आवश्यकता नहीं है, किन्तु अपने को मुक्त करने की खोजो कि तुम्हारी गहराई में क्या है। भगवद्गीता स्थितप्रज्ञ की बात करती जो किसी पर निर्भर नहीं होता है क्यों कि परिस्थितियां उस को वश में नहीं कर सकती हैं। यही सभी मनुष्यों को सीखना है। क्रियाशील सतर्कता के द्वारा व्यक्ति का परिस्थितियों का शिकार होना रुक जाता है और यह आध्यात्मिकता का स्रोत है।

राधा बर्नियर
'बॉन्डेज इज इन द माइण्ड'
दथिऑसफिस्ट, जुलाई 2013

एस. सुन्दरम

उत्तरदायित्व के साथ जीना

किसी आन्दोलन या मिशन की सफलता अनेक घटकों पर निर्भर करती है। किन्तु विशेष और ध्यान देने योग्य समर्पित और वचनबद्ध नायक वह है जो आन्दोलन या मिशन की सफलता या असफलता की सम्भावनाओं के बारे में चिन्तित रहनें के स्थान पर, प्रेक्षण करते हैं और जिनको उत्तरदायित्व दिये गये हैं उनकी निष्ठा और प्रयासों की हार्दिक सच्चाइयों पर दृष्टि केन्द्रित रखते हैं।

डा0 राधा बर्नियर, महान स्नेह ओर सम्मान के कारण जिसे राधाजी कहते थे। वे सदा जीवन की अच्छाई, महानता, और उच्चतर मूल्यों, जो किसी व्यक्ति को अच्छा मनुष्य बना सकती है से सम्बन्धित बातों के बारे में चिन्तित रहती थीं। सम्बन्धित व्यक्ति अपनी धनात्मक सोच और विधियों के कारण प्रायः राहें खोज लेता है परिस्थितियों में सुधार करनें के लिये उचित मार्ग खोजने योग्य बन जाता है। राधाजी उत्तरदायित्व के साथ रहनें पर बहुत जोर देती थीं और जो कार्य किसी के नैतिक और आध्यात्मिक विकास में सहायक होता था उसमें रुचि लेती थीं। उनका थिऑसफी का गहन अध्ययन, स्वच्छ और संवेदनशील मन, उनकी समझ की गहरायी, लक्ष्य की स्पष्ट समझ– सम्भवतः इन सबनें मिल कर उनको इस महान मिशन के लिये आवश्यक तीव्रता और शक्ति प्रदान की थी, जिनमें वे हमेशा डूबी और उनसे जुड़ी रहती थीं। राधाजी सभी प्राणियों के बचाव और रखरखाव के बारे में बहुत ध्यान देती थीं। इस विषय में उनके द्वारा वाराणसी में 2 दिनों का स्कूल टीचर्स का ट्रेनिंग कार्यक्रम अप्रैल 2003 में आयोजन को संज्ञान में लाना उचित होगा। कार्यशाला का उद्देश्य था शिक्षकों को पर्यावरण की समस्याओं के बारे में संवेदनशील बनाना जिसकी कमी ने समाज को निगल लिया है। इसमें महत्वपूर्ण मुद्दे जैसे पारिथिस्थितिकीय पदचिह्न, मिश्रित सॉलिड वेस्ट, वायु प्रदूषण, वाटर हार्वेस्टिंग पर विवेचन हुये थे। शिक्षकों को समस्याओं पर संपूर्णता से विचार करनें और उनके स्थानीय स्तर पर निदान करने के लिये प्रोत्साहित किया गया था। इस कार्यशाला के विवरण एक पत्रिका में प्रकाशित किये गये थे। हम सब भारतीय सेक्शन के मुख्यालय में इसके बारे में जागरूक नहीं थे। राधाजी नें एक रिपोर्ट की जेराक्स कापी यह प्रस्तावित और प्रोत्साहित करते हुये भेजी थी कि हम लोग इस प्रकार की कार्यशालाओं का अधिक से अधिक आयोजन करें। इसके बाद हम लोगों नें 'नर्चर, नेचर, फॉर फ्यूचर' का आयोजन किया, जिसमें 80 विद्यार्थियों नें सहभागिता की थी।

जब मैं गांधियन इंस्टीट्यूट ऑफ स्टडीज़ में कार्य कर रहा था तो मैं विभिन्न अनुसंधान

9. भारतीय सेक्शन के पूर्व महासचिव और काशी तत्व सभा, वाराणसी के सदस्य

योजनाओं के सिलसिले में भिन्न भिन्न वर्षों में पांच प्रदेशों के गांवों में जा कर रहा था। राधा जी यह जानती थीं और कभी कभी वे हमसे उन गांवों की विकास स्थिति के बारे में पूंछताछ करती थीं। वे जानना चाहती थीं कि क्या हम लोगों के कार्यों से गांव वालों को सहायता मिली है? क्या उन गांवों की विकास स्थितियों में कुछ सुधार आया है? आदि।

टीएस के कार्यों के अतिरिक्त उसी प्रकार सामान्य लोगों और सामान्य समाज की खुशहाली की ओर भी उनका ध्यान रहता था। वे उनकी पहचान के अशिक्षित किन्तु विनम्र और कोमल स्वभाव वाले और नैतिक प्रकृति वाले लोगों की प्रशंसा करती थीं। इस सम्बन्ध में मैं एक महत्वपूर्ण घटना बताना चाहूंगा –

मंगल, एक टीएस इण्डियन सेक्शन मुख्यालय वाराणसी परिसर में फल बेंचने वाला अपने स्वभाव से बहुत विनम्र था और सदा निम्न स्वर में बातें करता था। उसके माता पिता और बड़े भाई भी फल आदि परिसर में पिछले 7–8 दशकों से फल बेंचते थे। मंगल नें यह दायित्व बहुत कम आयु से ले लिया था। जब राधा जी अंतर्राष्ट्रीय अध्यक्ष हो गयीं, तो मंगल उनके लिये कन्वेंशन में जा रहे लोगों के माध्यम से सब्जियां भेजा करता था। एक बार कन्वेंशन के समय वह भी अडयार गया। जब वह राधाजी से मिलने गया उन्होंने उसे अपनी कार में साथ ले लिया और टीएस अडयार में सभी स्थान दिखाये। तब वे उसको ले कर कैन्टीन गयीं और इंस्ट्रक्शन दिया कि वह जब भी और जो कुछ भी चाहे उसे खिला दिया जाये और बिल उसके घर भेज दिया जाये।

एक बार उनके वाराणसी दौरे के समय उन्होंने एक कहानी हम और कुछ लोगों के समक्ष बताई। एक चपरासी नें किसी व्यवसायिक कर्ज देने वाले व्यापारी से कुछ पैसे लिये थे। पैसे देने वाले नें यह शर्त रखी थी कि भले ही वह मूलधन वापस कर दे फिर भी वह निर्धारित वर्षों तक हर महीने ब्याज देता रहेगा। कभी कभी किन्हीं विशेष खर्चों के कारण उसके पास देने के लिये पैसे नहीं होते थे तब वह राधा जी से उधार पैसे मांग लेता था। एक बार जब वह राधाजी के पास गया तो उन्होंनें कहा कि वे उसे पर्याप्त पैसे दे देंगी कि वह पैसे देने वाले का सारा कर्ज वापस कर दे फिर वह पैसा वह उन्हें वापस कर दे ताकि उसे इस समस्या से छुटकारा मिल जाये। इस पर उसने नम्रता से कहा कि यद्यपि हमारा और उसका निर्धारित समय तक व्याज देते रहनें का कोई लिखित दस्तावेज नहीं है किन्तु ब्याज से बचनें के लिये पूरा धन वापस करनें का अर्थ है कि ''मैं उसको दिया हुआ जबानी वादा कि मैं ब्याज देता रहूंगा उससे पलटूंगा''।

एक बार उन्होंने अपना भाषण एक कहानी के साथ किया जो उस समय की थी जब वे सेक्शन मुख्यालय में महासचिव थीं। कैंपस में ही रहने वाले एक कामगार को एक कुत्ते ने काट लिया। तब यह निर्णय लिया गया कि कुत्ते को पकड़ कर कहीं दूर छोड़ दिया जाय ताकि वह किसी और को

न काट सके। किन्तु उस कुत्ते को कोई पकड़ नहीं पाया। एक दूधवाला प्रतिदिन भोजनशाला में दूध देनें आता था और उस कुत्ते को भी कुछ दूध पिलाता था, जो जानबूझ कर संध्या के समय परिसर में ही रहता था। इसलिये इस विषय में सहायता के लिये दूधवाले से संपर्क किया गया। उस लड़के नें उत्तर दिया कि ''जो मेरे पास भरोसे और विश्वास के साथ आता है उसे मैं दगा नहीं दे सकता हूं''।

ये घटनायें दिखाती हैं कि किस प्रकार कुछ लोग जिन्हें हम आर्थिक रूप से कमजोर और अनपढ़ या कम पढ़े लिखे लोग मानते हैं, अपने दैनिक जीवन में नैतिक मूल्यों और अंतरात्मा से गाइड होते हैं। राधाजी ऐसे गुणों और उनके द्वारा अपनाये गये विकल्पों की प्रशंसा करती थीं।

राधाजी सदा अच्छे विचारों, उचित विचारों और महान कार्यों को प्रोन्नत और शक्तिशाली करने पर विशेष ध्यान देती थीं। सामाजिक प्रकरणों पर उनकी गहन रुचि उनके 'ऑन द वाच टॉवर' लेखों, उनके भाषणों और वार्तालापों में स्पष्ट दिखाई पड़ती थी। यह सब दिखाता है कि उनकी दृष्टि कितनी निष्ठापूर्ण और संपूर्णवादी थी। वे सभी क्षेत्रों में विद्वान थीं और अपना समय, शक्ति, प्रज्ञान और अंतर्दृष्टि न केवल थिऑसफी की बेहतर समझ के लिये बल्कि थिऑसफी को जीने के लिये भी प्रयोग करती थीं। माननीय राधा जी का जीवन के बारे में दृष्टिकोण हमें सिखाता है कि आवश्यकता समस्याओं या परिस्थितियों को आकस्मिक और उदासीन प्रकार से निपटाने की नहीं है बल्कि धनात्मक और रचनात्मक प्रवृत्ति और दृष्टिकोण एक समुचित और प्रभावशाली विकल्प और मैत्रीपूर्ण हल निकालनें में है। जीवन का अर्थ गतिशीलता होना चाहिये और बढ़ती हुयी मानवीय एकत्व की ओर और सारे प्राणियों के संरक्षण और बचाव की ओर जाना चाहिये। हमें अपने सामाजिक परिवेश और अपने आप के साथ सच्चा होना चाहिये।

———————————————————

समाचार और टिप्पणियां

बंगाल

बन्धु एन.सी. कृष्णा, राष्ट्रीय वक्ता नें दि0 5 और 6 अगस्त 23 को मानव, जन्तुओं, वनस्पतियों, खनिजों और पर्यावरण और साथ साथ विश्व विकास के बृहत्तर परिवेश पर प्रकाश डालते हुये वक्तव्य दिये। दोनो ही सत्र बहुत ही विचार प्रेरक थे।

दि0 20 अगस्त 23 को बन्धु पंकज कुमार दत्ता, फेडरेशन अध्यक्ष और जानें मानें लेखक नें ऐनी बेसैंट स्मृति भाषण को अद्वितीय रूप में प्रस्तुत किया जिसका शीर्षक था 'भारतेर स्वाधीनता आन्दोलनेर 75 बछार पूर्तिर प्रेखपते स्वाधीनता आन्दोलन ओ थिआसफी आन्दोलने एनी बेसैंटेर भूमिका' उन्होंनें कुछ अनजानी और बिरले पाये जाने वाले रवीन्द्र नाथ टैगोर, मनीशी हितेन्द्र नाथ दत्ता, बंगाल में थिऑसफिकल आन्दोलन के प्रणेता और अन्य अनेक प्रसिद्ध व्यक्तियों के साथ स्वतंत्रता, महिला शिक्षा, महिला सशक्तीकरण आदि आन्दोलनों को आगे बढ़ानें के लिये, बंगाल में इनके मूल से स्वतंत्रता के पहले के कार्यों के सम्बन्ध में बताया।

बंगाल थिऑसफिकल फेडरेशन नें दि0 3 सितम्बर को 103 वीं वार्षिक सामान्य सभा और वार्शिक कान्फरेंस का आयोजन बीटीएस हाल, 4/3 बंकिम चटर्जी स्ट्रीट, कोलकाता में संचालित किया। वार्शिक सामान्य सभा प्रातःकालीन सत्र में बन्धु पंकज कुमार दत्ता की अध्यक्षता में सम्पन्न हुयी। दोपहर के बाद के सत्र में वार्षिक सम्मेलन हुआ। वेन. सीवाली थेरो, महा सचिव, महाबोधि सोसाइटी, भारत, नें मुख्य अतिथि के रूप में समारोह को सुशोभित किया था। और मौलाना तहरुल हक, अध्यक्ष, पश्चिम बंगाल मदरसा स्कूल शिक्षक एसोसियेशन विशेश अतिथि थे। मुख्य अतिथि नें नये सदस्यों को डिप्लामा हस्तांतरित किया। अंत में एक सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन हुआ, जिसमें बहन मधुश्री चौधरी और उनके समूह नें एक नृत्य प्रस्तुत किया, जिसका शीर्शक था, ''नमों सम्बुद्धाय' जो स्वामी विवेकान्न्द के द्वारा भगवान बुद्ध के बारे में रचित कविता के आधार पर था। सत्र बहुत सफल रहा और श्रोताओं द्वारा प्रशंसित हुआ।

बिहार

डा0 एनी बेसैंट जन्म दिन और 'प्रैक्टिकल थिऑसफी' पर सिम्पोजियम –

बिहार थिऑसफिकल फेडरेशन के 118वें वार्षिक अधिवेशन का आयोजन दि0 1 और 2

अक्टूबर 2023 को गोपालगंज लॉज गोपाल गंज में सम्पन्न हुआ। अधिवेशन का प्रारम्भ सर्व धर्म प्रार्थना से हुआ। स्वागत भाषण फेडरेशन अध्यक्ष बन्धु बृज किशोर प्रसाद नें दिया। उसके पश्चात बन्धु चित्तरंजन सिन्हा ''कनक'', अध्यक्ष बीटीएफ, प्रो0 राज किशोर प्रसाद, सचिव, बीटीएफ, नें कार्यक्रम के सम्बन्ध में कुछ महत्वपूर्ण घोषणायें कीं। प्रथम दिवस, 1 अक्टूबर, को बन्धु चित्तरंजन सिन्हा और बन्धु नीरज कुमार, सहायक सचिव, गोपालगंज लॉज, नें 'भारत के स्वतंत्रता आन्दोलन में एनी बेसैंट और थिऑसफिकल सोसाइटी की भूमिका' विषय पर वक्तव्य दिये। दूसरे दिन, दि0 2 अक्टूबर को बन्धु चित्तरंजन सिन्हा ''कनक'' की अध्यक्षता में 'प्रैक्टिकल थिआसफी' विषय पर सिम्पोजियम आयोजित हुआ जिसमें वक्ता थे –

1. प्रो0 एस.सी. प्रसाद, अध्यक्ष मोतिहारी लॉज
2. डा0 शारदा चरन, उपाध्यक्ष, बीटीएफ
3. बन्धु सुरेश प्रसाद, उपाध्यक्ष, बीटीएफ
4. प्रो0 राज किशोर प्रसाद, सचिव, बीटीएफ

उसके पश्चात ''ऐट द फीट ऑफ द मास्टर' पर लघु वार्तायें हुयीं। सत्र की अध्यक्षता प्रो0 राज किशोर प्रसाद, सचिव, बीटीएफ नें की और वक्ता थे –

1. बन्धु नीरज कुमार, गोपाल गंज लॉज,
2. बन्धु रमेश प्रसाद, मुजफ्फर पुर लॉज
3. बन्धु अमृत प्रियदर्शी, छपरा लॉज,
4. बन्धु राज किशोर साह, समस्तीपुर लॉज

घन्यवाद प्रस्ताव प्रो0 राज किशोर प्रसाद नें दिया।

बाम्बे

'फण्डा – कला के माध्यम से थिऑसफी' बीटीएफ कोषाध्यक्ष बन्धु तरल मुंशी का था, जिसके पीछे भावना 'कला दिशा – कला की उड़ान हर दिशा में' थी। उन्होंनें भारतीय सेक्शन की 18 – 19 मार्च 2023 में हुयी स्मार्ट गोल मीट' में बीटीएफ का एक लक्ष्य निर्धारित किया था, 'थिसॉफिकल थीमों के लिये कला और थियेटर के माध्यम से स्कूल और विद्यार्थियों तक पहुंचना'।

उनकी रचनात्मकता 16 सितम्बर 2023 को प्रातः प्रस्फुटित हुयी जब बेसैन्ट हाल, ब्लैवैत्सकी लॉज में स्कूलों के छात्र अपनी रंगबिरंगी वेशभूशा में हिन्दी लघु नुक्कड़ नाटकों के मंचन के लिये अन्तर स्कूल जूनियर और सीनियर ग्रुप प्रतियोगिताओं के लिये एकत्रित हुये। निर्णायकों की मेजें मंच पर लगाई गयीं थीं और प्रदर्शन के लिये हाल के मध्य में स्थान चुना गया था जिसके चारो ओर दर्शकों के लिये कुर्सियां व्यवस्थित की गयीं थी।

प्रतियोगिता का आयोजन बाम्बे थिऑसफिकल फेडरेशन और जूनियर रेड क्रॉस महाराष्ट्र नें संयुक्त रूप से किया था। दोनो समूहों नें जो मंचन के विकल्प निर्धारित किये थे, वे थे, 'मुंशी प्रेम चन्द्र की कहानियां, धम्मपद (बुद्ध के जीवन की) की कहानियां, मानवीयता का संदेश देने वाली कोई कहानी, और बन्धुत्व की कोई कहानी'। प्रतियोगिता को अपनी उपस्थिति से सम्मानित करने वालों में से थे – बन्धु विनायक पाण्ड्या, आरटीएन गोदरेज दोतीवाला, अध्यक्ष, जू0 रेड क्रॉस महाराष्ट्र अपनी पत्नी हवोवी दोतीवाला के साथ।

निर्णायकों में व्यवसायिक थियेटर कलाकारों के साथ

क्र0सं05वीं से 7वीं कक्षा – जूनियर ग्रुप	क्र0सं0 8वीं से 10वीं कक्षा – सीनियर ग्रुप
1. बहन नम्रता पाठक	1. बहन नम्रता पाठक
2. मि0 तपन भट्ट	2. बहन शिल्पा मेहता
3. मि0 राहुल मेवावाला	3. बहन अर्चना मुंशी

जूनियर और सीनियर स्कूल के बच्चों द्वारा चैतन्य प्रदर्शन के लिये एक दस्तक के रूप में यह पहला मनोरंजक और नवाचार अनुभव था। इस प्रतियोगिता में जूनियर ग्रुप की 6 और सीनियर ग्रुप की 10 प्रविष्टियां थीं। प्रत्येक विद्यालय के 4 विद्यार्थियों नें मानवीयता या बन्धुत्व या मुंशी प्रेमचन्द्र की कहानियां या धम्मपद प्रस्तुत किये।

नुक्कड़ नाटकों की विधि से प्रस्तुत इन नाटकों में विद्यार्थी बिना माइक्रोफोन के थे। नाटकों के कथानक विद्यार्थियों की कल्पना और रचनात्मक शक्तियों से ओत प्रोत थे। जैसे खिलौनें, बैटबाल, डमरू–डफ–गिटार, बर्तन, पोस्टर, गमलों में पौधे, पेड़ – गायें और गत्ते की झोपड़ी का प्रयोग किया था। बन्धु तरल मुंशी नें पूरी प्रतियोगिता की फोटोग्राफी की व्यवस्था की थी जिसे यू ट्यूब में पोस्ट

करनें की उनकी योजना है। यह आश्चर्य की बात है कि सभी विजेता उत्तरी मुम्बई के विद्यालयों से थे। विजेताओं के नाटकों का मंचन और पारितोषिक वितरण 1 और 2 दिसम्बर 2023 को होने वाले बीटीएफ के वार्षिक सम्मेलन में किया जायेगा।

विद्यार्थियों को हिन्दी में 'ऐट द फीट आफ मास्टर' और 'शॉर्ट बायोग्राफी ऑफ डा0 एनी बेसैन्ट' पुस्तकों की प्रतियां, सहभागिता प्रमाणपत्र और जलपान वितरित किये गये। जजों को हिन्दी में 'ऐट द फीट ऑफ मास्टर', 'टेक्टबुक ऑफ थिऑसफी' सी.डब्ल्यू.एल., एनी बेसैंट की 'द पाथ ऑफ डिसाइपलशिप' की प्रतियां भेंट की गयीं। वालंटियरों को भी हिन्दी में थिऑसफिकल साहित्य भेंट किये गये।

डा0 राजम पिल्लै नें बन्धु तरल मुंशी और उनकी पत्नी अर्चना मुंशी को थिऑसफी को विद्यार्थियों में थियेटर के माध्यम से प्रसारित करनें के लिये बधाई दी। उन्होंनें निर्णायक मण्डल को; जूनियर रेडक्रॉस महाराष्ट्र के स्टेट कोआर्डीनेटर श्री भावेश साओ, सचिव बहन जॉयस पिण्टो, वॉलंटियर्स आस्टॉन चित्ती और तुशार तुलुंकर और प्यून; ज्योति लॉज के वालंटियर्स माथुर नाथ, कौस्तुभ, महादेव और तेजस मुंशी, आथित्य दल के बहन नवाज ढल्ला, और बहन माया चावड़ा और ब्लैवैत्सकी लॉज को बेसैन्ट हाल और अन्य सुविधायें उपलब्ध करानें के लिये धन्यवाद दिया।

बन्धु आर्नी नरेन्द्रन को 25 सितम्बर को लोटस ग्रुप में 'द फ्लेमिंग टॉर्च' सिरीज में ऑन लाइन बोलने के लिये आमंत्रित किया गया था। यह समूह सिंगापुर, फिलीपीन्स, इण्डिया और नीदरलैंड्स नें 4 वर्ष पहले युवाओं द्वारा यूनीवर्सल और सेल्फ हीलिंग मेडीटेशन के लिये बनाया गया था। मि0 आर्नी के भाषण 10 मिनट के 'जस्ट बीइंग' पर ध्यान के साथ समाप्त हुआ।

गुजरात

गुजरात फेडरेशन के अध्यक्ष श्री हर्शवर्धन शेठ, और सचिव श्री सी.के. सोनी नें फेडरेशन की वेबसाइट जारी करनें के अवसर पर 30 जुलाई 2023 को लॉजों के अध्यक्षों और सचिवों के लिये एक प्रशिक्षण कार्यशाला आयोजित की थी। यह नटवरलाल मेहता मैसॉनिक हाल अहमदाबाद में हुयी। उपाध्यक्ष और राष्ट्रीय वक्ता बन्धु नरसिंह भाई ठाकरिया, कोषाध्यक्ष बन्धु रामचन्द्र डोलिया, सह सचिव बन्धु प्रशान्त शाह, और अन्य काउन्सिल सदस्यों नें विशेष बैठक में भाग लिया जो 10.00 एएम पर प्रारम्भ हुयी। सचिव नें इस बैठक के उद्देश्य के बारे में व्याख्या की। उन्होंने जीएफटी के महत्वपूर्ण प्रगतियां प्रस्तुत कीं। श्री दीपकभाई पाण्ड्या नोडल अधिकारी की व्याख्या के बाद जीएफटी के अध्यक्ष के द्वारा अन्य लोगों के साथ वेबसाइट का प्रक्षेपण किया गया। बन्धु पाण्ड्या ने वेबसाइट का महत्व

बताया जो जीएफटी के लाजों से सम्बन्धित महत्वपूर्ण सूचनायें प्रसारित और साझा करेगी। उसके पश्चात अन्य सदस्यों नें अपने विचार साझा किये और इस बात से संतुष्ट हुये कि अब वे संतुष्ट हैं कि हम स्थानीय समस्यायें पहले की अपेक्षा शीघ्रता से हल कर पायेंगे।

वार्तायें अत्यंत लाभकारी रहीं। मध्याह्न सत्र में प्रशासनिक निर्देश जारी किये गये। जीएफटी के अध्यक्ष नें सभी को सहयोग और उत्साह के लिये बधाई दी।

नये सृजित हुये सन्तराम लॉज नाडियाड में नये सदस्यों को डिप्लोमा वितरित करने के लिये एक विशेष समारोह किया गया। यह सन्तराम मन्दिर के हाल में सम्पन्न हुआ। कार्यक्रम प्रातः 10 बजे प्रारम्भ हुआ। जीएफटी प्रेसीडेन्ट बन्धु हर्शवर्धन शेठ, सचिव श्री सीके सोनी, नोडल आफीसर श्री दीपकभाई पाण्ड्या, युवा गतिविधियों के अध्यक्ष बन्धु प्रतीक श्रीमाली, थिऑसॉफिकल ज्योति के सहसंपादक श्री गिरीश नीलगिरि, काउन्सिल सदस्य बन्धु मनहरभई पटेल, और सन्तराम लॉज के सदस्यों ने कार्यक्रम में भाग लिया। लॉज के अध्यक्ष बन्धु मनुभई राठोर नें उपस्थित सदस्यों का स्वागत किया और नाडियाड और खेड़ा जिलों में चल रही थिऑसफिकल गतिविधियों से परिचित कराया। संन्तराम मन्दिर के महन्त भी कार्यक्रम में उपस्थित रहे उन्होंने अन्य विशिष्ट महनुभावों के साथ दीप प्रज्वलित किया। उन्होंने थिऑसफिकल सोसाइटी के नये सदस्यों की नयी गतिविधियों के लिये आशीर्वाद दिये। सान्ताराम लॉज की सचिव बहन मधुबेन मकवाना ने नये लॉज की महत्वपूर्ण गतिविधियों के बारे में परिचित कराया और जीएफटी अध्यक्ष और सचिव से इस दिशा में और मार्गदर्शन की अपेक्षा की।

इसके पश्चात अध्यक्ष, सचिव श्री सीके सोनी के साथ सदस्यों के डिप्लोमा हस्तांतरित किये। अपनी लघु वार्ता में सचिव नें थिऑसफिकल गतिविधियों के प्रकाश के प्रसार के लिये प्रशासनिक कार्यों के महत्व की व्याख्या की। नोडल अधिकारी श्री दीपकभाई पाण्ड्या नें वेबसाइट और आशु–संचार व्यवस्था का महत्व बताया। तब श्री गिरीश नीलगिरि, बन्धु प्रतीक श्रीमाली और बन्धु मनहरभाई पटेल टीएस का प्रकाशित कार्य जो नाडियाड, खेड़ा और आनन्द में हो रहा है, से परिचित कराया। धन्यवाद प्रस्ताव सन्तराम लॉज की सचिव बहन मधुबेन मकवाना नें प्रस्तुत किया। यह प्रेरणादायक समारोह 1.30 पीएम पर समाप्त हुआ और मन्दिर की भोजनशाला में पवित्र भोजन हुआ।

कर्नाटक

निम्न लिखित कार्यक्रम संचालित किये गये –

प्रत्येक रविवार को 'सेल्फ कल्चर' पुस्तक पर बहन नवरत्नम्मा नें 'भौतिक शरीर के कार्य और उसका शुद्धीकरण' पर, बन्धु वाई.ए. वासुदेव नें 'आस्ट्रल बॉडी के कार्य और उसका शुद्धीकरण' पर, बहन बी सन्ध्यारानी नें ''लोअर मेंटल बॉडी के कार्य और उसका शुद्धीकरण' विषय पर बोला। बहन ज्योति नागेश नें 'हायर माइंड और उसका विकास' पर वार्ता की। प्रत्येक गुरुवार को पुस्तक 'यू' पर ऑन लाइन वार्तायें हुयीं। इस सम्बन्ध में बहन ऊषा प्रकाश नें पहले 10 अध्यायों पर वार्ता की। बन्धु डा0 आर.वी. वस्ट्राड नें 'यू ऐण्ड ट्रान्सफीगरेशन'; बहन डी.जे. प्रेमलीला नें 'यू ऐण्ड ऐस्थेटिक एक्सप्लोरेशन', बहन आर. माधवी नें 'यू ऐण्ड योर डिस्टीनेशन' पर बोला। बन्धु एम आर गोपाल और एसोसियेट्स बन्धु एचसी जगदीश, बन्धु आई.ए. बसवर्ज रड्डी, जे.एम. धनंजय और बहल नवरत्नम्मा रविवार और गुरुवार को छोड़ कर प्रत्येक दिन ऑन लाइन वक्तव्य देते हैं। जिस पुस्तक को चुना गया है वह 'गायत्री' है। बहन वाणीवासुदेव नें 'रमण महर्षि की उपदेश सारणी' पर वक्तव्य दिया। दि0 4.6.2023 को बन्धु डा0 एल. नागेश नें ''द इनफाइनाइट यूनीवर्स, द इनफाइनाइट लाइफ और लोनली जर्नी'' पर वक्तव्य दिया। ये बैंगलोर सिटी लॉज में सम्पन्न हुये। बहन ललिता नागराजन नें 'विपस्यना ध्यान और इसका अभ्यास' पर एक वक्तव्य दिया। राधाजी के 100वें जन्मदिन के उपलक्ष में बन्धु सीए शिंदे और बन्धु प्रदीप महापात्रा नें राधाजी के लेखन और उनकी उपलब्धियों के बारे में बोला और उसे बन्धु रेडप्पाचार नें कन्नड़ भाषा में अनुवाद किया। बहन बी. सन्ध्यारानी नें इसी विषय पर विजयनगर लॉज में चर्चा की।

बहन डा0 ज्योति नागेश नें दि0 10.6.23 को ''परम पदक्के चतुर्दशा द्वारगालु'' पर व्याख्यान दिया। उन्होंनें अपना व्याख्यान 17.6.23 को भी जारी रखा। बन्धु एम.आर. श्रीधर दि0 14.06.23 को 'क्रियेटिव साइंस' पर अपना वक्तव्य जारी किया। बन्धु सिद्धार्थ चक्रवर्ती नें 'शिक्षा के बारे में जे. कृष्णमूर्ति के विचार' पर वक्तव्य दिया।

बहन एन. पूतम्मा नें 'कर्म सिद्धांत' पर दि0 5 जून को मल्लेश्वरम् लॉज बैंगलोर में वार्ता की। बन्धु रंगधाम नें दि0 5 जून को 'ऐट द फीट ऑफ मास्टर' के बारे में चर्चा की। बहन एन. पूतम्मा नें दि0 19 जून को 'ह्यूमन रिजनरेशन' के सम्बन्ध में चर्चा की। दि0 26 जून को बन्धु कृष्णमूर्ति नें 'कर्म नियम' पर चर्चा की। दि0 17 जून को तीन वक्तव्य हुये जिसमें बन्धु टी श्रीनिवास नें सदाचार, बन्धु शिवप्रसन्न आचार नें 'वैराग्य' पर और बन्धु सुदर्शन आचार में 'प्रेम' पर वार्तायें कीं।

कोट्टूर लॉज में दि0 3 जून को श्री वीरेशगुरुजी नें 'ध्यान' पर एक वक्तव्य दिया। बहन गीता नें दि0 7 जून को 'जगन्माता' पर एक वार्ता की। बन्धु नागराजू (शिक्षक) नें 'द शरण अम्बिगारा

चौदैया'' पर भाषण दिया। बन्धु हनुमतप्पा नें दि0 14 जून को 'द गीतभवधारा' पर वार्ता की। बहन वी. कन्निका नें 17 जून पर 'जिनराजदास' पर चर्चा की।

बन्धु एन. हम्पन्ना नें 20 जून 23 को 'भारत समाज पूजा' की विषयवस्तु की व्याख्या की। दि0 21 जून को बन्धु टी कोत्रेशप्पा नें 'लाइफ स्किल' पर चर्चा की। बन्धु एन. हम्पन्ना नें 'ह्यूमन रिजनरेशन' और 'द सोर्स ऑफ स्पिरिचुअल एनर्जी' पर वार्तायें कीं। श्रीनिवासपुरा लॉज में दि0 4.6.23 को 'मन, भक्ति और भाव' विषय पर सिम्पोजियम आयोजित हुआ। बन्धु रेडप्पाचार पूरे दिन की टीएस मीट का निर्देशन किया। बन्धु ए. वेंकटरेड्डी नें '' जीवन का उद्देश्य' विषय पर वार्ता की। बहन आर. माधवी नें 'रिइन्कार्नेशन' पर, निर्देशक नें 'मृत्यु के बाद का जीवन' पर चर्चा की। देवनगिरि में बन्धु विद्वान राजगोपाल भगवतार नें दि0 18 जून को 'आध्यात्मिकता और भारतीय कलाायें' विषय पर एक प्रवचन दिया। बन्धु डा0 आर.वी. वस्ट्राड ने दि0 25.6.23 को एक दिन की बैठक आयोजित की जिसमें उन्होंनें 'धम्मपद' और 'अप्पमाद' विषयों पर व्याख्यान दिया। बन्धु बसवराज रेड्डी नें 'यमकवाग्ग' विषय पर चर्चा की।

चित्रदुर्ग लॉज मे दि0 4 जून 23 को कर्नाटक थियो0 फेडरेशन के सचिव के निर्देशन में उत्तरीय अंचल के लॉज अध्यक्षों और सचिवों की एक बैठक आयोजित की गयी। बन्धु एम.एस. श्रीधर, बन्धु आई.ए. बसवराज रेड्डी, बन्धु बी.के. नागराजप्पा, बन्धु वेंकटचलपति, बन्धु आदि केशव प्रसाद और बन्धु एम.आर. गोपाल बैठक में उपस्थित थे। बन्धु एम.एस. श्रीधर नें उपस्थित महानुभावों को प्रशासनिक निर्देश दिये।

बन्धु आर.वी. वस्ट्राड नें दि0 11 जून को एक दिन का विशेष अध्ययन निर्देशित किया। अध्ययन के लिये चुनी गयी पुस्तक 'वॉइस ऑफ द साइलेंस' थी। निर्देशक ने सिद्धियों के बारे में चर्चा की। और बन्धु बसवराज रेड्डी नें 'तीन सभंगनाज' पर बोला।

गौरीबिदनूर लॉज में बन्धु एन. संजीव रेड्डी द्वारा एक दिन का 'डा0 एनी बेसैन्ट' पर विवेचन संचालित किया गया। निर्देशक नें 'बेसैन्ट का भारत के लिये योगदान' पर, बन्धु आर. कृष्णमूर्ति नें 'आध्यात्मिकता और भारत का इतिहास' पर, बन्धु बी.के. कृष्णामूर्ति संगीत के माध्यम से 'कबीर के दोहे' कहते हुये प्रवचन प्रस्तुत किया।

क्यादिगुण्टे लॉज में बन्धु ए.आई. बसवरेड्डी नें 16 से 18 जुलाई की अवधि में एक कार्यक्रम आयोजित किया। बन्धु बी.के. नागराजप्पा नें 'प्रिन्सिपल्स ऑफ हायर लाइफ' पर, बन्धु थिप्पेस्वामी नें 'थिऑसफिकल शिक्षायें' पर, बन्धु एम. रेडप्पाचार नें 'रिइन्कार्नेशन' पर, बन्धु ए. वेंकटरेड्डी नें 'मृत्यु के

बाद का जीवन' पर, बहन आर. माधवी नें 'हमारे विचार और उनके गुणधर्म' पर वक्तव्य दिये। बन्धु टी. चन्द्रशेखर नें 'थिऑसफी और समाज' पर और बन्धु थिप्पेस्वामी नें 'ध्यान' पर बोला।

बहन शैलजा त्यागराज शेट्टी नें 'अंधविश्वास और विवेकपूर्ण विश्वास' पर वक्तव्य दिया। बन्धु आई.ए. बसवराज रेड्डी नें 'थिऑसफी वास्तविक जीवन में क्रिया है' पर, बन्धु एचपी जगदीश नें 'कर्म' पर और बहन भुवनेश्वरी नें 'परा और अपरा विद्या' की व्याख्या की।

बहन आर. माधवी नें 8 मई 2023 को चिन्तामणि लॉज में एक दिवसीय थिआसफिकल मीट का आयोजन किया गया जहां श्वेतपद्माष्टमी (ह्वाइट लोटस डे) का आयोजन हुआ। निदेशक नें 'मैडम ब्लैवैत्सकी की शिक्षायें' विषय पर वक्तव्य दिया। बन्धु ए. वेंकटस्वमी नें श्वेतपद्माष्टमी की व्यख्या की। बहन अम्बुजाक्षी नें भगवत्गीता के कुछ अंश पढ़े। 'लाइट ऑफ एशिया' और 'वॉइस ऑफ द साइलेंस' के अंश बहन लीला नें पढ़े। दि0 18 जून 23 को बैंगलोर की बहन संध्यारानी के निर्देशन पर एक कार्यक्रम आयोजित किया गया। बन्धु एम.एस. प्रदीप 'प्लैनेटरी चेन्स' पर पर वक्तव्य दिया। बन्धु एम. नागराजू नें 'बन्धु जिनराजदास की शिक्षायें' पर बोला और निदेशक नें ''थिऑसफिकल अध्ययन के लाभ' पर बोला।

बन्धु वेंकटरेड्डी नें कोननकुन्तू लॉज में 21 मई को एक दिवसीय थिऑसफी बैठक संचालित की। जिसमें बन्धु वाई.ए. वासुदेव नें 'वैशाख पूर्णिमा' पर, बन्धु रेडप्पाचार नें 'थिऑसफी क्या है' पर और बहन आर. माधवी नें 'थिऑसफी के नैतिक सिद्धांत' पर व्याख्यान दिये। निदेशक नें 'जीवन के यूनीवर्सल नियम' पर वक्तव्य दिया।

बहन आर. माधवी नें 25 जून को इसी लॉज में एक कैम्प निर्देशित किया। बन्धु एम. रेडप्पाचार नें 'भगवद्गीता में ज्ञान योग' पर, बन्धु नें 'भक्ति योग' पर, विरूपक्षप्पा 'सृजन के पीछे मनुष्य का विकास' पर व्याख्यान दिये।

टी.ओ.एस. कार्यक्रम

बन्धु वरुण, अध्यक्ष और बन्धु यू.एस. महेश, सचिव अत्यधिक प्रोत्साहन और साहस के साथ नगरीय और देहाती क्षेत्र के विभिन्न भागों में स्कूल बैग और अभ्यास पुस्तिकायें वितरित कर रहे हैं।

केरल

श्री शंकर लॉज में अंतर–लॉज बैठक

डा0 राधा एस. बर्नियर (1923 – 2023) की जन्म शताब्दी के उपलक्ष में श्री शंकर लॉज, एर्नाकुलम में एक अंतर लॉज बैठक 16 सिम्बर 2023 को 'वेब ऑफ लाइफ' की थीम पर आयोजित की गयी। इस अवसर पर राधाजी की पुस्तक 'लिसेन टू द सॉग ऑफ लाइफ' का अध्ययन किया गया।

कार्यक्रम का प्रारम्भ भारत समाज पूजा से हुआ जिसे बहन लक्ष्मीबाई नें संचालित की थी। समारोह का प्रारम्भ सर्वधर्म प्रार्थना से हुआ। समारोह की अध्यक्षता डा0 टी.पी. बाबू नें की। अपने अध्यक्षीय भाषण में उन्होंनें राधाजी के जीवन का विवरण संक्षेप में प्रस्तुत किया। डा0 एम.ए. रवीन्द्रन, केरल थिऑसफिकल फेडरेशन के अध्यक्ष नें समारोह का उद्घाटन करते हुये थिऑसफी के गहन अध्ययन पर जोर दिया। बन्धु एस. शिवदास, अध्यक्ष एलेपी लॉज में 'टू लिव ऐन्ड टू डाई' विषय पर बोला। बन्धु उस्मान, लॉज के सचिव नें 'लिसेन टू द सांग ऑफ लाइफ' पर बोला। बन्धु बालाजी नारायणस्वामी नें 'डिस्कवरिंग वन सेल्फ' पर भाषण दिया। बन्धु के. दिनकरन, सचिव, के.टी.एफ. नें 'पेन ऐण्ड ग्लोरी आफ बीइंग ह्यूमन' पर अपराह्न सत्र में बोला। बन्धु ई.पी. पंकजाक्षन ने 'द अडेप्ट ऐन्ड द डिसाइपल' विषय पर वार्ता की। सायं 4 पीएम पर बैठक समाप्त हुयी।

यूपी एवम् उत्तराखण्ड

धर्म लॉज लखनऊ की वार्षिक सामान्य सभा दि0 6 सितम्बर को सम्पन्न हुयी। दि0 13 को बन्धु यू.एस. पाण्डेय नें 'कृष्णावतार' पर, दि0 20 सितम्बर को बन्धु प्रमिल द्विवेदी नें 'लाइफ आफ्टर डेथ' पर और दि0 27 सितम्बर को बन्धु बी.के. पाण्डेय नें 'विल पावर' पर वार्तायें कीं।

निर्वाण लॉज आगरा में दि0 7 सितम्बर को 'ह्यूमन कैरेक्टर ऐण्ड इट्स बिल्डिंग' एक सिम्पोजियम और सामान्य सभा हुयी। बन्धु एस.के. पाण्डेय नें दि0 9–10 को आगरा लॉज गये और वहां लॉज भवन की मरम्मत और नवीनीकरण के साथ प्रशासनिक प्रकरणों पर विवेचन किया और 10 सितम्बर को 'मनुष्य को क्या पृथ्वी पर वापस लाता है?' विषय पर एक वक्तव्य दिया।

सर्व हितकारी लॉज आगरा में दि0 6 और 13 सितम्बर को बन्धु एस.बी.आर. मिश्रा नें क्रमशः 'शरीर के सात चक्र' और 'त्रिकाय' विषयों पर वार्तायें कीं। दि0 20 सितम्बर को बन्धु ए.पी. श्रीवास्तव नें 'अवतारों का महत्व' विशय पर चर्चा की। दि0 27 सितम्बर को बन्धु अरविन्द राय नें 'मैन विजिबिल ऐन्ड इनविजिबिल' विषयों कर चर्चा की।

प्रयास लॉज गाजियाबाद में दि0 3 और 10 सितम्बर को ऐनी बेसैन्ट और सी.डब्ल्यू. लेडबीटर की पुस्तक 'क्रियेटिंग करेक्टर' का अध्ययन संचालित किया।

नॉयडा लॉज नॉयडा में बहन सुब्रलिना मोहन्ती के द्वारा दि0 17 सितम्बर को 'निर्वाण' पुस्तक के सातवें अध्याय का अध्ययन संचालित किया गया।

चोहान लॉज कानपुर में बन्धु श्याम सिंह गौतम नें दि0 3 और 17 सितम्बर को 'त्याग का नियम' विषय पर दो वक्तव्य दिये। बन्धु गौतम नें ही दि0 10 और 14 सितम्बर को 'अवतार, कृष्ण और भगवद्गीता' पर क्रमशः दो व्याख्यान दिये। लॉज में दि0 19 और 20 सितम्बर को 'ऐट दफीट ऑफ द मास्टर' पर समूह अध्ययन सम्पन्न हुआ।

आनन्द लॉज प्रयागराज में 3 सितम्बर 23 को बहन अर्चना पाण्डेय नें 'सुखानुभूति' विषय पर, बन्धु सुदीप मिश्रा नें दि0 10 सितम्बर को 'आस्ट्रल प्लेन' पर और बहन सुषमा श्रीवास्तव नें दि0 24 सितम्बर को 'मनुष्य के सात कोश' पर वक्तव्य दिये।

काशी तत्व सभा, वाराणसी में व्यवस्था समिति के सदस्यों की एक बैठक दि0 7 सितम्बर को हुयी।

ऐनी बेसैंट लॉज, वाराणसी में दि0 22 सितम्बर को डा0 आई.के. तैमिनी की पुस्तक 'द अल्टीमेट रियलिटी ऐण्ड वास्तवीकरण' पर विवेचन और प्रश्नोत्तर सत्र का आयोजन हुआ। पुस्तक के प्रथम अध्याय सम्भावोपाय के अध्ययन के पश्चात उसका सार सभी सदस्यों में वितरित किया गया। यह आन्तरिक अनुभवों और उस अनुभव को प्राप्त करनें के लिये मार्ग पर चलनें की विधि पर प्रकाश डाला गया है।

ब्रह्मविद्या लॉज, जिगना जि0 गोरखपुर में बन्धु शेषनाथ त्रिपाठी ने 25 सितम्बर को 'कर्म के नियम' पर एक वक्तव्य दिया।

मैत्रेय लॉज, ग्रेटर नॉयडा में बन्धु डी.के. सत्संगी नें 'प्रतिभिज्ञा हृदयं – फंडामेंटल्स ऑफ कश्मीर शैविज्म' डा0 आई.के. तैमिनी की पुस्तक 'सीक्रेट आफ सेल्फ रियलाइजेशन' के आधार पर दिया।

प्रज्ञा लॉज लखनऊ में दि0 3, 17 और 24 सितम्बर को बहन वासुमती अग्निहोत्री 'ऐट द फीट ऑफ द मास्टर' पर क्रमशः तीन सत्रों में अध्ययन संचालित किया गया। दि0 10 सितम्बर को बहन अग्निहोत्री नें 'पाथ ऑफ डिसाइपलशिप' पर व्याख्यान दिया।

बन्धु शिवकुमार पाण्डेय नें दि0 27 सितम्बर 23 को मुरादनगर लॉज का दौरा किया और लॉज के पुनर्जीवित करनें और सदस्यता बढ़ानें के सम्बन्य में विचार विनिमय किया। उन्होंनें 'बेसिक्स ऑफ

थिऑसफी और उसका हमारे जीवन में महत्व' विषय पर वक्तव्य दिया।

अन्य फेडरेशनों के कार्यों में योगदान

कर्नाटक फेडरेशन के आग्रह पर दि0 22 सितम्बर को बन्धु यू एस पाण्डेय नें चित्रदुर्ग लॉज के 118वें अधिवेशन (कर्नाटक फेडरेशन) में मुख्य अतिथि के रूप में 'स्पिरिट, स्पिरिचुअलिटी और स्पिरिचुअल' विषय पर एक वक्तव्य प्रस्तुत किया। उन्होंनें 23 और 24 सितम्बर को कर्नाटक फेडरेशन के 114वें वार्षिक सम्मेलन, जो चित्रदुर्ग में सम्पन्न हुआ, में भी सहभागिता की। उन्होंनें चित्रदुर्ग में हुये टी.ओ.एस. कर्नाटक क्षेत्र के वार्षिक सम्मेलन में 'सोसल, सर्विस – के आध्यात्मिक आयाम' विषय पर व्याख्यान दिया।